माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

FAIZAN E MADINA

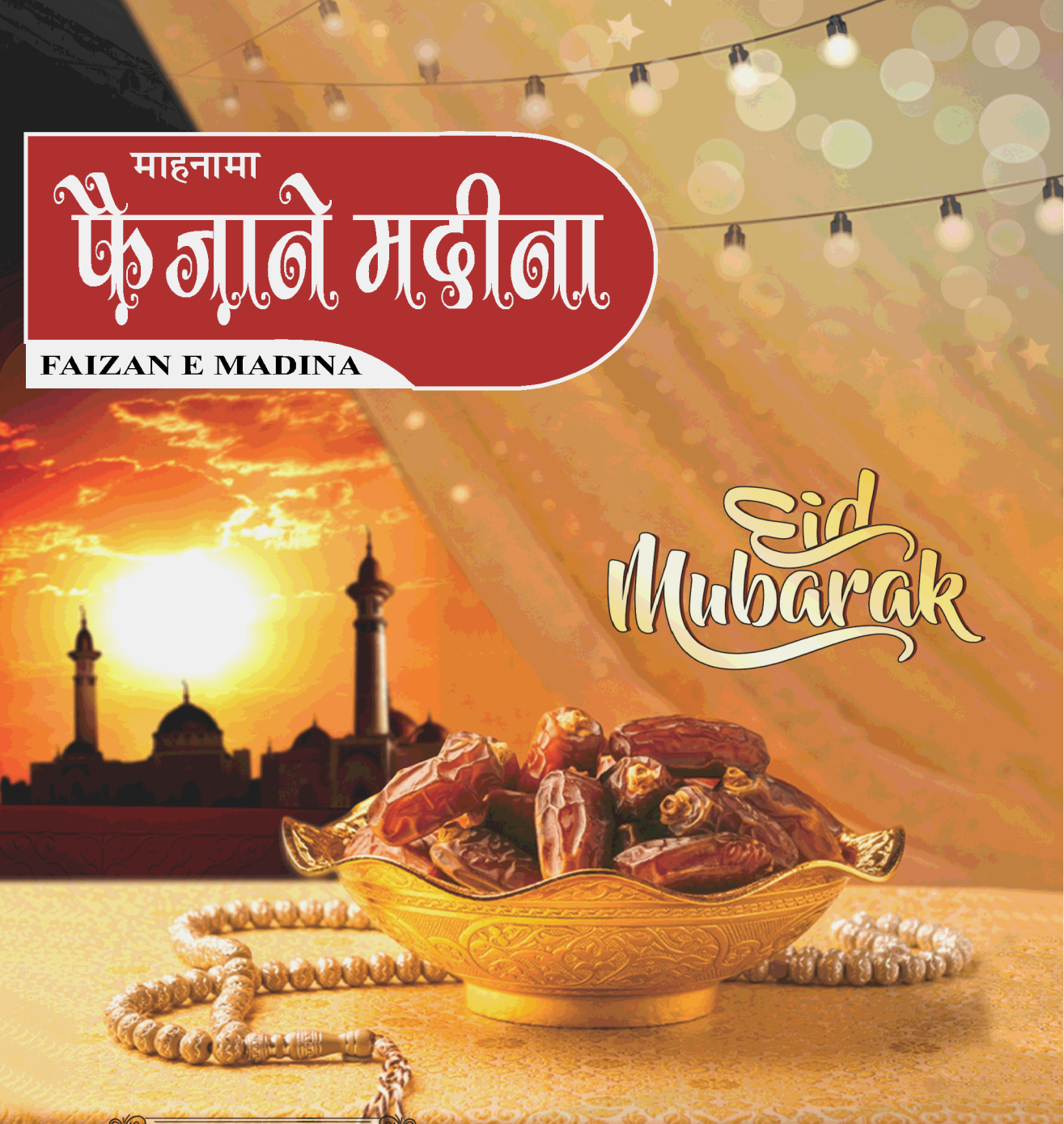

फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

ईद उन की नहीं जिन्हों ने रंग बि रंगे कपड़े पहेने, उ़म्दा डिशें खाई और बन ठन कर सैरो तफ़रीह़ की बल्कि ईद तो उन की है जिन्हों ने अल्लाह पाक की पकड़ से डर कर तौबा की, नेकी की राह इख़्तियार की और गुनाहों से दूर हो गए।

- मर्द व औ़रत का एक दूसरे की मुशाबेहत इख़्तियार करना 06
- इमाम अह़मद रज़ा ख़ान, "आला ह़ज़रत" क्यूं ? 22
- ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ुज़ाफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ 31
- फ़िलिस्तीन में अम्बिया ए किराम के मज़ारात 36
- बच्चे और सेह़त 48

नेक बनने का वज़ीफ़ा

जो तन्हा हज़ार 1000 बार

يَااَحَدُ

पढ़ेगा اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ वोह नेक बन जाएगा।

(मदनी पंजसूरह, स. 255)

(**नोट :** वज़ीफ़े के अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना है।)

मदनी मुज़ाकरा

सवाल :

तन्हाई में डर लगता हो तो क्या करें ?

जवाब :

يَا رَءُوْفُ يَا رَءُوْفُ

पढ़ते रहें फ़ाइदा होगा।

اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

कोई चीज़ नुक़्सान ना पहुंचा सके

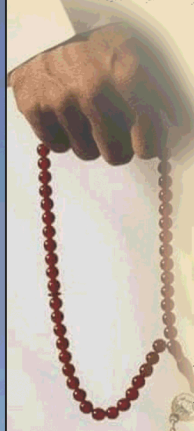

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स सुब्हो शाम तीन तीन मरतबा येह पढ़ेगा, तो उसे कोई चीज़ नुक़्सान ना पहुंचा सकेगी :

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ

(**तर्जमा :** अल्लाह के नाम से जिस के नाम की बरकत से ज़मीनो आस्मान की कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती और वोही सुनता जानता है।) (ترمذی،5/251،حدیث:3399)

(**नोट :** दुआ के अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना है।)

(Jaundice)

यरक़ान से हिफ़ाज़त का तावीज़

मुकम्मल सूरतुल बय्यिनह लिख कर तावीज़ बना कर गले में पहना दीजिए اِنْ شَآءَاللہُ الْعَزِیْز यरक़ान जाता रहेगा।

माहनामा
फ़ैज़ाने मदीना
Monthly Magazine
FAIZANE MADINA (HINDI)

ब फ़ैज़ाने नज़र
सिराजुल उम्मह, काशिफ़ुल गुम्मह,
इमामे आज़म फ़क़ीहे अफ़ख़म हज़रते सैयदना
इमाम अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ

ब फ़ैज़ाने करम
आला हज़रत इमामे एहले सुन्नत
मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह
इमाम अहमद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना धूम मचाए घर घर
या रब जा कर इश्क़े नबी के जाम पिलाए घर घर
(अज़ : अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ)

PRINTER, PUBLISHER, EDITOR AND OWNER
HAMJANI SHABBIRBHAI RAJAKBHAI
BUTVALA'S CHAWL,
NR. CENTRAL WARE HOUSE,
DANILIMDA, AHMEDABAD-380028.
(GUJARAT)

PLACE OF PRINTING
MODERN ART PRINTERS
OPP : PATEL TEA STALL,
DABGARWAD NAKA,
DARIYAPUR, AHMEDABAD-380001.

bookmahnama@gmail.com

कुरआनो हदीस

सब्र और अम्बिया 3
मर्द व औरत का एक दूसरे की मुशाबेहत इख़्तियार करना 6
फ़ैज़ाने सीरत
रसूलुल्लाह ﷺ का वुफ़ूद के साथ अन्दाज़ (तीसरी और आख़री क़िस्त) 9
देहात वालों के सवालात और रसूलुल्लाह के जवाबात 11
हज़रते सैयदना शुऐब علیہ السلام 13
फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत
नमाज़े जनाज़ा में मैयत की दुआ ना पढ़ी तो ? मअ़ दीगर सवालात 16
दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत
घरों के बाहर नाल या सींग लगाना कैसा ? मअ़ दीगर सवालात 18
मज़ामीन
ज़िम्मेदारी निभाइए ! 20
इमाम अहमद रज़ा ख़ान, "आला हज़रत" क्यूं ? 22
शाबाश 25
इस्लाम और तालीम (क़िस्त : 04) 27
क़ियामत के दिन नूर दिलाने वाली नेकियां 29
बुज़ुर्गाने दीन की सीरत
हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा رضی اللہ عنہ 31
हज़रते नोमान बिन बशीर अन्सारी رضی اللہ تعالیٰ عنہما 33
अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए ! 34
मुतफ़र्रिक़
फ़िलिस्तीन में अम्बिया ए किराम के मज़ारात (क़िस्त : 03) 36
सेहत व तन्दुरुस्ती
रसूलुल्लाह ﷺ की ग़िज़ाएं : दूध (दूसरी और आख़री क़िस्त) 38
क़ारेईन के सफ़हात
नए लिखारी 40
बच्चों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"
बेहतरीन लोग / हुरूफ़ मिलाइए ! 44
दावा ए नबुव्वत की दलील 45
हमदर्दी 46
बच्चे और सेहत 48
इस्लामी बहनों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"
बेटी क्यूं पैदा हुई ? 50
इस्लामी बहनों के शरई मसाइल 52

(दूसरी और आख़री क़िस्त)

علیہم الصّلوٰۃ والسّلام

सब्र और अम्बिया

अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया :

﴿اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِیْنَ(۱۵۳)﴾ तर्जमा : बेशक अल्लाह साबिरों के साथ है। (پ2، البقرۃ:153)

तफ़्सीर

ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام और सब्र

ख़ुदा के साबिर बन्दों में ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام का मक़ामो मर्तबा भी निहायत बुलन्द है। आप के अपने भाइयों ने आप को क़त्ल करने की साज़िश की। आप को कुंवें में डाला गया। वहां से निकाल कर बत़ौरे ग़ुलाम मन्डी में फ़रोख़्त किया गया, जैसा कि कुरआने ह़कीम में है :

﴿اُقْتُلُوْا یُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا یَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ اَبِیْكُمْ وَ تَكُوْنُوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِیْنَ(۹) قَالَ قَآىٕلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا یُوْسُفَ وَ اَلْقُوْهُ فِیْ غَیٰبَتِ الْجُبِّ یَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّیَّارَةِ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِیْنَ(۱۰)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : यूसुफ़ को मार डालो या कहीं ज़मीन में फेंक आओ ताकि तुम्हारे बाप का चेहरा तुम्हारी त़रफ़ ही रहे और इस के बाद तुम फिर नेक हो जाना। उन में से एक केहने वाले ने कहा : यूसुफ़ को क़त्ल ना करो और उसे किसी तारीक कुंवें में डाल दो कि कोई मुसाफ़िर उसे उठा ले जाएगा। अगर तुम कुछ करने वाले हो। (پ12، یوسف:9، 10) फिर ज़माना गुज़रते गुज़रते बादशाह के महल तक पहुंचे। वहां आप के ख़िलाफ़ साज़िशें हुईं। क़ैद ख़ाने की सऊ़बतें बरदाश्त कीं। फिर ख़ुदा के फ़ज़्ल से सुर्ख़रूई मिली और मिस्र की विलायत नसीब हुई। विलायते मिस्र के दौरान एक त़वील क़ह़त़ का सामना हुवा, बचपन से ले कर विलायते मिस्र के ज़माने समेत आज़माइशें ही आज़माइशें रहीं, लेकिन आप ने इन तमाम मसाइब में सब्र किया और अल्लाह पाक की रिज़ा पर राज़ी रहे और फ़रमाया :

﴿قَالَ لَا تَثْرِیْبَ عَلَیْكُمُ الْیَوْمَ ؕ یَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ۫ وَ هُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِیْنَ(۹۲)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फ़रमाया : आज तुम पर कोई मलामत नहीं, अल्लाह तुम्हें मुआफ़ करे और वोह सब मेहरबानों से बढ़ कर मेहरबान है। (پ13، یوسف:92) फिर आप के इसी सब्रो एह़सान की अल्लाह पाक ने यूं शान बयान फ़रमाई :

﴿وَ كَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِیُوْسُفَ فِی الْاَرْضِ ۚ یَتَبَوَّاُ مِنْهَا حَیْثُ یَشَآءُ ؕ نُصِیْبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَّشَآءُ وَ لَا نُضِیْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِیْنَ(۵۶)﴾

तर्जमा : और ऐसे ही हम ने यूसुफ़ को ज़मीन में इक़्तेदार अ़त़ा फ़रमाया, उस में जहां चाहे रेहाइश इख़्तियार

करे, हम जिसे चाहते हैं अपनी रेहमत पहुंचा देते हैं और हम नेकों का अज्र ज़ाएअ नहीं करते। (پ13، یوسف:56)

हज़रते अय्यूब عَلَیْہِ السَّلَام और सब्र

हज़रते अय्यूब عَلَیْہِ السَّلَام को अल्लाह पाक ने बहुत मालो दौलत, ज़मीनो जाईदाद, मवेशी, ग़ुलाम और औलाद अ़ता फ़रमाई थी। फिर जब आप عَلَیْہِ السَّلَام को आज़माइश में मुब्तला किया गया, तो येह सब चीज़ें वापस ले ली गईं, चुनान्चे आप की औलाद मकान गिरने से दब कर फ़ौत हो गई, बांदी ग़ुलाम भी ख़त्म हो गए, तमाम जानवर, जिन में हज़ारहा ऊंट और हज़ारहा बकरियां थीं, सब मर गए। तमाम खेतियां और बाग़ात बरबाद हो गए, यहां तक कि कुछ भी बाक़ी ना रहा। इस त़रह़ के इन्तेहाई आज़माइश कुन ह़ालात में भी जब आप عَلَیْہِ السَّلَام को उन चीज़ों के हलाक और ज़ाएअ होने की ख़बर दी जाती, तो आप अल्लाह पाक की ह़म्द बजा लाते और फ़रमाते थे, "मेरा क्या है! जिस का था उस ने लिया, जब तक उस ने मुझे दे रखा था, मेरे पास था, जब उस ने चाहा ले लिया। उस का शुक्र अदा हो ही नहीं सकता और मैं उस की मरज़ी पर राज़ी हूं।" इस के बाद आप عَلَیْہِ السَّلَام जिस्मानी आज़माइश में मुब्तला हो गए, तमाम जिस्म शरीफ़ में आबले पड़ गए और तमाम बदन मुबारक ज़ख़्मों से भर गया, लेकिन आप इस ह़ालत में भी सब्र और ख़ुदा का शुक्र अदा करते रहे, चुनान्चे अल्लाह पाक ने आप की इस ख़ूबी को बड़े ख़ूब सूरत अन्दाज़ में बयान फ़रमाया: ﴿اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ(۴۴)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान: बेशक हम ने उसे सब्र करने वाला पाया। वोह क्या ही अच्छा बन्दा है, बेशक वोह बहुत रुजूअ़ लाने वाला है। (پ23، ص:44) और मुसीबतों और परेशानियों में आप के "रुजूअ़ इलल्लाह" को यूं बयान किया गया:

﴿وَاَیُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّیْ مَسَّنِیَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِیْنَ(۸۳)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान: और अय्यूब को (याद करो) जब उस ने अपने रब को पुकारा कि बेशक मुझे तक्लीफ़ पहुंची है और तू सब रेहम करने वालों से बढ़ कर रेहम करने वाला है। (پ17، الانبیآء:83)

हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام और सब्र

हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام का सब्र और आ़ली हिम्मत होना आप की सीरत से अ़यां है। आप عَلَیْہِ السَّلَام ने बरसों तक एक वादे की वज्ह से हज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام की बकरियां चराईं। नबुव्वत का मन्सब मिलने के बाद फ़िरऔ़न के दरबार में जा कर ज़ोरदार अन्दाज़ में एलाने ह़क़ किया, फ़िरऔ़न की रबूबिय्यत को रद कर के ख़ुदा की रबूबिय्यत व वेह़दानिय्यत का पैग़ाम दिया, ह़ालांकि उस वक़्त फ़िरऔ़न का इस्तिबदाद, ज़ुल्मो सितम और क़ेहरो जब्र सब को मालूम था, मगर एक त़वील अ़र्से तक ऐसे ख़ौफ़नाक माह़ौल में फ़िरऔ़न का मुक़ाबला करते रहे, कि जब वोह अपनी तमाम तर कुव्वतों के साथ आप का जानी दुश्मन बन चुका था, जिस का ज़िक्र अल्लाह पाक ने यूं फ़रमाया:

﴿وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُوْنِیْۤ اَقْتُلْ مُوْسٰى وَلْیَدْعُ رَبَّهٗ ۚ اِنِّیْۤ اَخَافُ اَنْ یُّبَدِّلَ دِیْنَكُمْ اَوْ اَنْ یُّظْهِرَ فِی الْاَرْضِ الْفَسَادَ(۲۶)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान: और फ़िरऔ़न ने कहा: मुझे छोड़ दो ताकि मैं मूसा को क़त्ल कर दूं और वोह अपने रब को बुला ले। बेशक मुझे डर है कि वोह तुम्हारा दीन बदल देगा या ज़मीन में फ़साद ज़ाहिर करेगा। (پ24، المؤمن:26) फिर उस से नजात पाने के बाद अपनी क़ौम के साथ होने वाले मुआ़मलात जुदागाना त़ौर पर इन्तेहाई सब्र आज़मा थे, मगर आप फिर भी सब्र करते रहे और आप के सब्र की तारीफ़ ख़ुद नबी ए अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यूं फ़रमाई: یرحم اللہ موسی قد اوذی باکثر من ھذا فصبر

तर्जमा: अल्लाह पाक मूसा पर रेहम फ़रमाए, कि वोह इस से ज़ियादा सताए गए थे और उन्हों ने सब्र किया था।

(بخاری، 2/442، حدیث:3405)

नबी ए रेहमत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सब्र

नबी ए अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की किताबे ह़यात के औराक़ का सर सरी मुत़ालआ़ ही इस ह़क़ीक़त को इ़यां कर देता है कि आप की ज़िन्दगी किस क़दर आज़माइशों और तक्लीफ़ों से भरी हुई थी और इस ह़क़ीक़त के मुतअ़ल्लिक़ आप ने ख़ुद वाज़ेह़ त़ौर पर

इरशाद फ़रमाया कि जितना मैं अल्लाह पाक की राह में डराया गया हूं, उतना कोई और नहीं डराया गया और जितना मैं अल्लाह पाक की राह में सताया गया हूं, उतना कोई और नहीं सताया गया। (ترمذی، 4/213، حدیث:2480) चुनान्चे मक्की ज़िन्दगी के तक्लीफ़ देह वाक़ेआ़त का तसल्सुल, कुफ़्फ़ार की ईज़ा रसानियां, जादू, जुनून और कहानत के ताने, शिअ़बे अबी तालिब में तीन साल की मेहसूरी, ताइफ़ में सरदारों और औबाशों की दी गई तकालीफ़, मानने वालों को सताया जाना, हालते सज्दा में आप पर مَعَاذَاللہ ओझड़ी का रखा जाना, अहले ईमान का मक्का ए मुकर्रमा छोड़ने पर मजबूर हो जाना, खुद आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हिजरत करना, फिर बादे हिजरत कुफ़्फ़ार की तरफ़ से मुसल्सल जंगें और मुनाफ़िक़ीन की साज़िशों का मुक़ाबला करना, अल ग़रज़ आप की हयाते तैयबा सब्र, हिम्मत, अ़ज़्म और हौसले की अ़ज़ीम तरीन निशानी है और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी इस साबिराना शान का राज़ यूं वाज़ेह फ़रमाया : ऐ आइशा ! बेशक अल्लाह पाक उलूल अ़ज़्म रसूलों से येह पसन्द फ़रमाता है कि वोह दुन्या की तक्लीफ़ों पर और दुन्या की पसन्दीदा चीज़ों से सब्र करें, फिर मुझे भी उन्ही चीज़ों का मुकल्लफ़ बनाना पसन्द किया, जिन का उन्हें मुकल्लफ़ बनाया, तो इरशाद फ़रमाया : ﴿فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ﴾ तर्जमा : तो (ऐ हबीब !) तुम सब्र करो जैसे हिम्मत वाले रसूलों ने सब्र किया। (پ26، الاحقاف:35) और अल्लाह पाक की क़सम ! मेरे लिए उस की फ़रमां बरदारी ज़रूरी है, अल्लाह पाक की क़सम ! मेरे लिए उस की फ़रमां बरदारी ज़रूरी है और अल्लाह पाक की क़सम ! मैं ज़रूर सब्र करूंगा जिस तरह उलूल अ़ज़्म रसूलों ने सब्र किया और कुव्वत तो अल्लाह पाक ही अ़ता करता है ।

(اخلاق النبی وآدابہ لابی شیخ اصبہانی، ص154، حدیث:806)

और इन्सानों की आबादकारी के बाद अल्लाह पाक ने इस्लाहे उम्मत और तज़किया ए नुफ़ूसे इन्सानिय्यत का सिलसिला शुरूअ़ फ़रमाया और इस अ़ज़ीम मक़्सद के लिए अम्बिया ए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को मबऊ़स फ़रमाया जाने लगा। उन की बिअ़सत का अव्वलीन और बुन्यादी मक़्सद येही हुवा करता था कि वोह खुदा के बन्दों को माबूदाने बातिल की परस्तिश से हटा कर खुदा ए वहदहू ला शरीक की बारगाह में झुकने की तल्क़ीन करें, चुनान्चे इस सिलसिला ए तब्लीग़ के दौरान आने वाले मुसीबतों के पहाड़ और क़दम क़दम पर मुश्किलात के मुक़ाबले में हिल्म व बुर्दबारी, सब्रो तहम्मुल और मुख़ालिफ़ीन से अ़फ़्वो दर गुज़र का मुआ़मला करना, उन ख़ासाने बारगाहे इलाहिय्या का ख़ास वस्फ़ रहा है, चुनान्चे हज़रते सैयदना नूह علیٰ نَبِیِّنَا وعلیہ الصَّلٰوۃُ والسَّلام के तवील अ़र्से तक दावते इस्लाम पेश करने के बा वुजूद अक्सर क़ौम का ईमान ना लाना, हज़रते सैयदना इब्राहीम علیٰ نَبِیِّنَا وعلیہ الصَّلٰوۃُ والسَّلام का आग में डाला जाना, अपने हक़ीक़ी बेटे को क़ुरबानी के लिए पेश कर देना और फिर इराक़ से फ़िलिस्तीन तक अपनी अहलिय्या और भतीजे के साथ सेंकड़ों किलोमीटर की हिजरत करना, हज़रते सैयदना अय्यूब علیٰ نَبِیِّنَا وعلیہ الصَّلٰوۃُ والسَّلام का मुख़्तलिफ़ मुसीबतों का सामना करना, उन की औलाद और अमवाल का ख़त्म हो जाना, हज़रते सैयदना मूसा علیٰ نَبِیِّنَا وعلیہ الصَّلٰوۃُ والسَّلام का मुख़्तलिफ़ आज़माइशों में मुब्तला रेहना और फिर मिस्र और मदयन की तरफ़ हिजरत करना, हज़रते ईसा علیٰ نَبِیِّنَا وعلیہ الصَّلٰوۃُ والسَّلام का सताया जाना और बहुत सारे अम्बिया ए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का शहीद किया जाना, येह सब आज़माइशों और सब्र ही की ला ज़वाल और ताबिन्दा मिसालें हैं।

अल्लाह पाक हमें ईमानो आफ़िय्यत की ज़िन्दगी अ़ता फ़रमाए और अगर कोई मुश्किल आए तो सब्र की सआ़दत अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

लो मदीने का फूल लाया हूं मैं ह़दीसे रसूल लाया हूं
(अज़् अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

मर्द व औ़रत का एक दूसरे की मुशाबेहत इख़्तियार करना

अल्लाह पाक ने इन्सान को बतौ़रे मुसलमान पहेचान अ़ता फ़रमाई है कि वोह अपने लिबास वग़ैरा में ग़ैर मुस्लिमों का अन्दाज़ इख़्तियार ना करे, फिर मुसलमान मर्दों और औ़रतों को अलग अलग शनाख़्त दी, मर्दों को औ़रतों की और औ़रतों को मर्दों की मुशाबेहत से मन्अ़ किया गया । मर्द व औ़रत का एक दूसरे की मुशाबेहत इख़्तियार करना छोटा जुर्म नहीं ! इस जुर्म का इर्तेकाब करने वालों के लिए ह़दीसे रसूल में क्या अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किए गए, ख़ुद ही पढ़ लीजिए चुनान्चे

वोह हम में से नहीं रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

لَيْسَ مِنَّا مَنْ تَشَبَّهَ بِالرِّجَالِ مِنَ النِّسَاءِ
وَلَا مَنْ تَشَبَّهَ بِالنِّسَاءِ مِنَ الرِّجَالِ

यानी जो औ़रत मर्दों की और जो मर्द औ़रतों की मुशाबेहत इख़्तियार करे वोह हम से नहीं ।[1]

शर्हे ह़दीस किसी के जैसी सूरत बनाना तशब्बोह है और किसी के जैसी सीरत इख़्तियार करना तख़ल्लुक़ है ।[2]

"वोह हम में से नहीं" से मुराद ह़ज़रते अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐनी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस से मुराद येह है कि वोह हमारी सीरत पर अ़मल पैरा नहीं, हमारी दी हुई हिदायत पर गामज़न नहीं और हमारे अख़्लाक़ से आरास्ता नहीं ।[3]

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه "لَيْسَ مِنَّا" का मफ़्हूम बयान करते हुवे लिखते हैं : हमारी जमाअ़त से या हमारे त़रीक़े वालों से या हमारे प्यारों से नहीं या हम उस से बेज़ार हैं वोह हमारे मक़्बूल लोगों में से नहीं, येह मत़लब नहीं कि वोह हमारी उम्मत या हमारी मिल्लत से नहीं क्यूंकि गुनाह से इन्सान काफ़िर नहीं होता, हां ! जो ह़ज़राते अम्बिया ए किराम (علیہم الصلوٰۃ والسلام) की तौहीन करे वोह इस्लाम से ख़ारिज है ।[4]

मर्दों और औ़रतों की बाहम मुशाबेहत की हुर्मत

मर्दों और औ़रतों की एक दूसरे से मुशाबेहत की हुर्मत का दीगर अह़ादीस, शुरूह़ात और फ़तावा में भी ब कसरत बयान है, चुनान्चे

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने चार क़िस्म के अफ़राद के बारे में फ़रमाया कि वोह सुब्ह़ो शाम अल्लाह पाक की नाराज़ी और उस के ग़ज़ब में होते हैं । उन में औ़रतों से मुशाबेहत इख़्तियार करने वाले मर्द और मर्दों से मुशाबेहत इख़्तियार करने वाली औ़रतों का भी ज़िक्र फ़रमाया ।[5]

इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मर्द को औ़रत, औ़रत को मर्द से किसी लिबास वज़्अ़, चाल ढाल में भी तशब्बोह ह़राम ना कि ख़ास सूरत व बदन में ।"[6]

मिरआतुल मनाजीह़ में है : "मर्द का औ़रतों की त़रह़ लिबास पहेनना, हाथ पांव में मेहंदी लगाना, औ़रतों

की त़रह़ बोलना, उन की ह़रकात व सकनात इख़्तियार करना सब ह़राम है कि इस में औ़रतों से तश्बीह है, उस पर लानत की गई बल्कि दाढ़ी मूंछ मुंडाना ह़राम है कि इस में भी औ़रतों से मुशाबेहत और औ़रतों के जैसे लम्बे बाल रखना, उन में मांग चोटी करना ह़राम है कि इन सब में औ़रतों से मुशाबेहत है, औ़रतों की त़रह़ तालियां बजाना, मटकना, कूल्हे हिलाना सब ह़राम है, इसी वज्ह से।"[7]

बालों में मुशाबेहत इमामे अहले सुन्नत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : सीने तक बाल रखना शरअ़न मर्द को ह़राम, और औ़रतों से तशब्बोह और ब हुक्मे अह़ादीसे सह़ीह़ा ए कसीरा مَعَاذَاللہ बाइ़से लानत है।[8] (नीज़ मर्द को) शानों से नीचे ढलके हुवे औ़रतों के जैसे बाल रखना ह़राम है। मर्द को ज़नानी वज़्अ़ की कोई बात इख़्तियार करना ह़राम है। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस पर लानत फ़रमाई है।[9]

इसी त़रह़ मर्द का अपने बालों पर हैरबेन्ड (Hairband) लगाना भी औ़रतों के साथ मुशाबेहत की वज्ह से नाजाइज़ो ह़राम है।[10]

(औ़रत को) कन्धों से ऊपर बाल कटवाना नाजाइज़ो ह़राम है कि येह मर्दों से मुशाबेहत है। फ़तावा रज़विय्या में है : औ़रत को अपने सर के बाल कतरना ह़राम है और कतरे तो मलऊ़ना कि मर्दों से तशब्बोह है।[11]

औ़रतों को अपने सर के बाल इस क़दर छोटे करवाना कि जिस से मर्दों से मुशाबेहत हो नाजाइज़ो ह़राम है इसी त़रह़ फ़ासिक़ा औ़रतों की त़रह़ बत़ौरे फ़ेशन बाल कटवाना भी मन्अ़ है। हां, बाल बहुत लम्बे हो जाने की सूरत में इस क़दर काट लेना कि जिस से मर्दों के साथ मुशाबेहत ना हो, जिस त़रह़ उ़मूमन कनारे काट कर बराबर किए जाते हैं येह जाइज़ है।[12]

जूतों में मुशाबेहत औ़रत के लिए मर्दाना जूता जो मर्दों के लिए ही मख़्सूस हो, पहेनना यूंही मर्दों के लिए ज़नाना जूता जो औ़रतों के लिए मख़्सूस हो, पहेनना जाइज़ नहीं है, अह़ादीसे मुबारका में इस त़रह़ की मुशाबेहत इख़्तियार करने वाले मर्दों और औ़रतों पर लानत फ़रमाई गई है।[13]

चुनान्चे उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सैयदतुना आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا से एक औ़रत के बारे में पूछा गया जो मर्दाना जूता पहेनती थी, उस पर ह़दीस रिवायत फ़रमाई कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मर्दानी औ़रतों पर लानत फ़रमाई है।[14]

इस के तह़त मिरआतुल मनाजीह़ में है : मालूम हुवा कि मर्दों औ़रतों के जूतों में भी फ़र्क़ चाहिए, सूरत, लिबास, जूता, वज़्अ़ क़त़्अ़ सब में ही औ़रत मर्दों से मुमताज़ रहे।[15]

ज़ीनत व ज़ेवर में मुशाबेहत फ़तावा रज़विय्या में है : औ़रत का बा वस्फ़े क़ुदरत बिलकुल बे ज़ेवर रेहना मकरूह है कि मर्दों से तशब्बोह है। ह़दीस में है :

كَانَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَكْرَهُ تَعَطُّرَ النِّسَاءِ وَتَشَبُّهَهُنَّ بِالرِّجَالِ

हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم औ़रतों के तअ़त्तुर (यानी बे ज़ेवर रेहने) को और मर्दों से मुशाबेहत करने को ना पसन्द फ़रमाते।[16]

औ़रत को चांदी की मर्दाना वज़्अ़ की अंगूठी पहेनना भी जाइज़ नहीं है। चुनान्चे फ़तावा रज़विय्या में ही है : चांदी की मर्दानी अंगूठी[17] औ़रत को ना चाहिए और पहेने, तो ज़ाफ़रान वग़ैरा से रंग ले। शैख़े मुह़क़्क़िक़ अशिअ़तुल लम्आ़त में फ़रमाते हैं : औ़रतों को मर्दों से मुशाबेहत इख़्तियार करनी मकरूह है और इस का लेह़ाज़ इस ह़द तक है कि औ़रतों को चांदी की अंगूठी पहेननी मकरूह है, अगर कभी इत्तेफ़ाक़न पहेननी पड़े, तो उसे ज़ाफ़रान वग़ैरा से रंग ले।[18]

मर्दों के लिए औ़रतों की त़रह़ होंटों पर लिप्सटिक लगाना गुनाह का काम है क्यूंकि इस में औ़रतों के साथ मुशाबेहत है और मर्दों का औ़रतों की या औ़रतों का मर्दों की मुशाबेहत इख़्तियार करना ह़राम है।[19]

कपड़ों में मुशाबेहत औ़रत को पेन्ट शर्ट पहेनने की क़त़्अ़न इजाज़त नहीं, चाहे पेन्ट जिस्म से चिपकी हुई

हो या खुली हो, इस की मुमानेअ़त कई वुजूह से है जिन में से एक येह है कि मर्दों की मुशाबेहत है और मर्दों से मुशाबेहत ममनूअ़ है[20] नीज़ औ़रत का अपने कमरे में शौहर को दिखाने के लिए शौहर के कपड़े पहेनना भी मर्दों से मुशाबेहत में दाख़िल है और येह भी जाइज़ नहीं ।[21]

दीगर मुशाबेहतें मर्द ख़्वाह मेह़रम हो या ग़ैर मेह़रम उसे ज़नाना कपड़े, जूते या कोई और ज़नाना चीज़ अपने इस्तेमाल में लाना जाइज़ नहीं कि इस में औ़रतों से मुशाबेहत है । इसी त़रह़ उ़म्र के जिस ह़िस्से में इस्तेमाल किया जाएगा तो तशब्बोह पाया जाएगा लेहाज़ा बूढ़ा करे या जवान हर दो सूरत में नाजाइज़ है ह़त्ताकि अगर छोटे बच्चे को वालिदैन वग़ैरा पहेनाएंगे तो येह पहेनाने वाले गुनहगार होंगे ।[22]

इन के इलावा भी कई ऐसे मुआ़मलात हैं जिन में मर्द व औ़रत की एक दूसरे से मुशाबेहत का अन्देशा है चुनान्चे इस बारे में शरई राहनुमाई के लिए दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत हिन्द से रुजूअ़ फ़रमा लीजिए ।

---

(1)مسند احمد، 11/461، حدیث:6875 (2)مراٰۃ المناجیح، 6/109، 110 (3)شرح ابی داؤد للعینی، 5/385، تحت الحدیث:1439(4)مراٰۃ المناجیح، 6/560 (5)دیکھئے: شعب الایمان، 4/356، حدیث:5385(6)فتاویٰ رضویہ، 22/664 (7)مراٰۃ المناجیح، 6/152(8)فتاویٰ ضویہ، 6/610(9)فتاویٰ ضویہ، 21/600 (10)ماہنامہ فیضانِ مدینہ، شمارہ: جولائی 2023، ص11(11)فتاویٰ رضویہ، 24/543 (12)ماہنامہ فیضانِ مدینہ، شمارہ: فروری 2017، ص48(13)ویب سائٹ دارالافتاء اہل سنت، فتویٰ نمبر:Web-569(14)ابوداؤد، 4/84، حدیث:4099(15)مراٰۃ المناجیح، 6/176(16)فتاویٰ رضویہ، 22/127(17)مرد کو چاندی کی مردانہ وضع والی ایک انگوٹھی جس کا وزن ساڑھے چار ماشے سے کم ہو اور نگینے والی ہو اور نگینہ بھی ایک ہی لگا ہو پہننے کی شریعت میں اجازت ہے۔(ویب سائٹ، دارالافتاء اہلِ سنّت، فتویٰ نمبر:45)(18)فتاویٰ رضویہ، 24/544(19)ویب سائٹ دارالافتاء اہلِ سنت، فتویٰ نمبر:Web-890(20)ویب سائٹ دارالافتاء اہلِ سنت، فتویٰ نمبر:10(21)ویب سائٹ دارالافتاء اہلِ سنت، فتویٰ نمبر:Web-701(22)ویب سائٹ دارالافتاء اہل سنت، فتویٰ نمبر:41۔

हुज़ूर नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बहुत ही प्यारे फ़रामीन और इन की इस्लाह़ी, फ़िक्री, तरबियती शर्ह़ पढ़ने के लिए आज ही मक्तबतुल मदीना से येह दो किताबें ह़ासिल करें ।

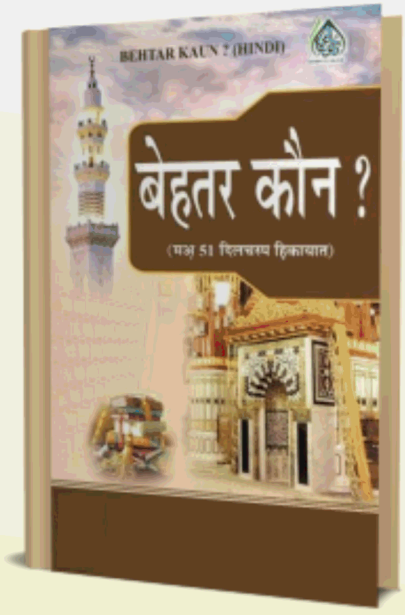

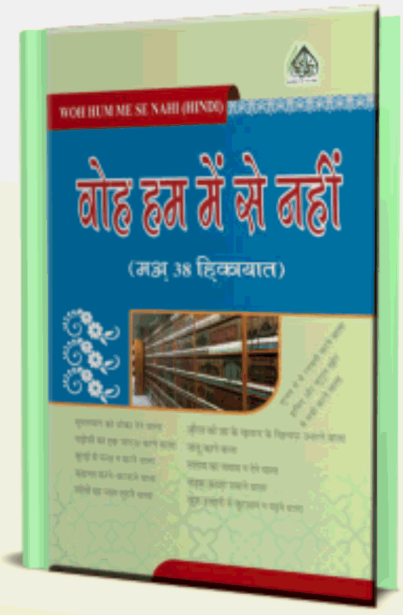

(तीसरी और आख़री क़िस्त)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वुफ़ूद के साथ अन्दाज़

गुज़श्ता से पैवस्ता

ज़ादे राह अ़ता फ़रमाना चार सौ घुड़ सवारों पर मुश्तमिल मुज़ैना का एक वफ़्द बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवा और शरफ़े इस्लाम से बेहरावर हुवा। जब येह क़ाफ़िला फ़ैज़े नबवी से मुस्तफ़ीज़ हो कर जाने लगा तो अमीरे क़ाफ़िला ह़ज़रते नोमान बिन मुक़र्रिन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दरख़्वास्त की, कि हमें ज़ादे राह अ़ता फ़रमाइए। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को हिदायत फ़रमाई कि उन्हें ज़ादे राह दो। उन्हों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मेरे पास खजूरों की थोड़ी ही मिक़्दार है जो चार सौ आदमियों के लिए काफ़ी नहीं होगी। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जाओ और येही खजूर उन में तक़्सीम कर दो। ह़ज़रते नोमान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه मुझे अपने साथ ले कर अपने घर पहुंचे तो मैं ने देखा कि वहां ऊंट के बराबर खजूरों का ढेर पड़ा है। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने खजूरें तक़्सीम करनी शुरूअ़ कीं तो सब ने अपना अपना ह़िस्सा ह़ासिल किया। मैं सब से आख़िर में था। मैं ने देखा कि खजूरों का ढेर उसी त़रह़ मौजूद था, जैसे तक़्सीम से पेहले था और उस में कोई कमी नहीं आई।[1]

मुबाहले की दावत देना रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अहले नजरान की त़रफ़ ख़त़ रवाना फ़रमाया जिस में आप ने उन्हें इस्लाम की दावत दी। जब येह पैग़ाम उन्हें पहुंचा तो शेहर के पादरियों ने आपस में मश्वरा किया कि आप की त़रफ़ कुछ लोगों को भेजा जाए ताकि वोह उन के ह़क़ पर होने या ना होने की तस्दीक़ करें। इस काम के लिए उन्हों ने साठ अफ़राद पर मुश्तमिल वफ़्द मदीना शरीफ़ भेजा। उन लोगों के लिए मस्जिदे नबवी के सेह़न में ख़ैमे लगा दिए गए, उन्हों ने वहीं क़ियाम किया। इस दौरान हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन्हें ह़क़ की त़रफ़ बुलाते रहे और उन के त़रह़ त़रह़ के सवालों के जवाबात देते रहे लेकिन उन लोगों ने इस्लाम क़बूल ना किया। एक दिन आप ने उन्हें इस्लाम की दावत दी तो केहने लगे कि हम तो पेहले से मुसलमान हैं। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम लोग सलीब के पुजारी हो और ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को ख़ुदा का बेटा केहते हो ह़ालांकि उन की ह़ालत अल्लाह के नज़्दीक आदम عَلَيْهِ السَّلَام जैसी थी और वोह भी उन की त़रह़ मिट्टी से पैदा किए गए थे। फिर वोह ख़ुदा किस त़रह़ हो गए ! अहले वफ़्द ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की कोई बात ना मानी और बराबर बह़स करते रहे इस पर येह आयत नाज़िल हुई :

﴿فَمَنْ حَآجَّكَ فِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَاَبْنَآءَكُمْ وَنِسَآءَنَا وَنِسَآءَكُمْ وَاَنْفُسَنَا وَاَنْفُسَكُمْ ۟ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ(۶۱)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर ऐ मेह़बूब जो तुम से ईसा के बारे में ह़ुज्जत करें बाद इस के कि तुम्हें इ़ल्म

आ चुका तो उन से फ़रमा दो आओ हम तुम बुलाएं अपने बेटे और तुम्हारे बेटे और अपनी औ़रतें और तुम्हारी औ़रतें और अपनी जानें और तुम्हारी जानें फिर मुबाहला करें तो झूटों पर अल्लाह की लानत डालें।[2]

चुनान्चे इतमामे हुज्जत के त़ौर पर हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا, हज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और हज़रते ह़सन व हुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को साथ ले कर ईसाइयों से मुबाहले के लिए तैयार हो गए। ईसाइयों को मुबाहला करने की हिम्मत ना पड़ी क्यूंकि उन में से बाज़ लोगों ने राए दी कि अगर येह वाक़ेई नबी हैं तो हम लोग हमेशा के लिए तबाहो बरबाद हो जाएंगे। चुनान्चे उन्हों ने कहा कि हम ना मुबाहला करते हैं और ना इस्लाम क़बूल करते हैं अलबत्ता हमें जिज़्या देना मन्ज़ूर है। आप हमारे साथ एक दियानतदार आदमी को भेज दें, जो रक़म आप मुक़र्रर करेंगे वोह हम उसे दे दिया करेंगे। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की बात मान ली और फ़रीक़ैन के माबैन इसी के मुत़ाबिक़ मुआ़हदा त़ै पा गया।[3]

रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और जिन्नात का वफ़्द

ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें सुब्ह़ की नमाज़ पढ़ाने के बाद फ़रमाया : तुम में से कौन है जो आज रात मेरे साथ जिन्नात के वफ़्द के पास जाएगा ? येह जुम्ला तीन बार दोहराया लेकिन ह़ाज़िरीन ख़ामोश रहे फिर आप खुद ही मुझे अपने साथ ले गए। हम बहुत दूर तक चलते रहे यहां तक कि मदीना ए त़ैयबा के सारे पहाड़ हम से पीछे रेह गए। हम ने त़वील शख़्स देखे गोया कि वोह नेज़े हों, उन्हों ने लंगोट पहेनी हुई थी। जब मैं ने उन्हें देखा तो मुझ पर शदीद लर्ज़ा त़ारी हो गया। यहां तक कि ख़ौफ़ की वज्ह से मेरी टांगों पर कपकपाहट त़ारी हो गई। जब हम उन के क़रीब गए तो प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे लिए अपने पांव के अंगूठे से दाइरा खींचा, आप ने फ़रमाया : इस दाइरे के दरमियान बैठ जाओ। मेरा सारा ख़ौफ़ व तरद्दुद ख़त्म हो गया। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आगे तशरीफ़ ले गए और तुलूए़ फ़ज्र तक क़िराअत करते रहे फिर तशरीफ़ लाए और मुझ से फ़रमाया : मेरे साथ आ जाओ। फिर मैं आप के साथ चलने लगा, हम कुछ दूर ही गए थे कि आप ने फ़रमाया : देखो क्या तुम्हें उन में से कोई नज़र आ रहा है ? कहा : मैं बहुत ज़ियादा सियाही देख रहा हूं फिर आप ने ज़मीन से गोबर और हड्डी उठाई और उन की त़रफ़ फेंक कर फ़रमाया : उन्हों ने मुझ से ज़ादे राह का सवाल किया था, मैं ने उन्हें कहा : तुम्हारा ज़ादे राह हड्डी और गोबर है।[4]

जानवरों के वफ़्द पर रेह़म फ़रमाना रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक मरतबा नमाज़े फ़ज्र की अदाएगी के बाद सह़ाबा ए किराम के साथ तशरीफ़ फ़रमा थे, इतने में देखा कि तक़रीबन सौ भेड़ियों का वफ़्द ह़ाज़िरे दरबार है, हुज़ूर रेह़मते आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब से फ़रमाया : भेड़ियों के येह नुमाइन्दे तुम्हारे पास आए हैं, येह केह रहे हैं कि तुम इन के लिए अपना फ़ालतू खाना मुख़्तस कर दो, इस के बदले तुम्हारे जानवर मेह़फ़ूज़ रहेंगे। भेड़ियों ने रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अपनी येह ह़ाजत पेश की थी जिसे आप ने पूरी फ़रमा दी, इस के बाद भेड़िये बाहर निकले और आवाज़ निकालने लगे। (गोया शुक्रिया अदा कर रहे हों)[5]

येह अल्लाह पाक के आख़री रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का आने वाले वुफ़ूद के साथ अन्दाज़ था। येही वोह प्यारा अन्दाज़ था जिस की वज्ह से मुख़्तलिफ़ क़बाइल जूक़ दर जूक़ इस्लाम के दामन में आने लगे। आने वाले क़बाइल आप के अन्दाज़ और तब्लीग़ से इस क़दर मुतास्सिर होते कि ना सिर्फ़ खुद मुसलमान होते बल्कि अपने क़बीले जा कर नेकी की दावत की धूमें भी मचाते।

अल्लाह पाक से दुआ़ है कि वोह हमें अपने ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुख़्तलिफ़ त़र्ज़े अ़मल को पढ़ने, समझने और उस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) زرقانی علی المواہب، 5/179 (2) پ3، اٰلِ عمرٰن:61 (3) سبل الہدیٰ و الرشاد، 6/415تا420ملتقطاً (4) معجم کبیر للطبرانی، 1/125، حدیث:251، سبل الہدیٰ و الرشاد، 6/434 (5) دارمی، 1/25، حدیث:22، سبل الہدیٰ و الرشاد، 6/440۔

(क़िस्त : 05)

देहात वालों के सवालात और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जवाबात

हमारे प्यारे नबी, मक्की मदनी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़रब शरीफ़ के गांव देहात में रेहने वाले सहा़बा ए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان जो सवालात किया करते थे, उन में से 15 सवालात और उन के जवाबात चार क़िस्तों में बयान किए जा चुके, यहां मज़ीद 4 सवालात और प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जवाबात ज़िक्र किए गए हैं :

क्या जन्नतियों का लिबास बुना जाएगा ?

ह़ज़रते ह़न्नान बिन ख़ारिजा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने एक बार फ़रमाया : اَلَا اُحَدِّثُكُمْ حَدِيْثًا سَمِعَتْهُ اُذُنَایَ وَوَعَاهُ قَلْبِی यानी क्या मैं तुम्हें ऐसी ह़दीस ना सुनाऊं जिसे मेरे कानों ने सुना, मेरे दिल ने उसे मेह़फ़ूज़ किया, لَمْ اَنْسَهُ بَعْدُ (उसे सुनने के बाद) मैं उसे नहीं भूला ? मैं एक मरतबा उ़बैदुल्लाह बिन ह़ैदह के साथ मुल्के शाम के रास्ते पर निकला । हम ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के पास पहुंचे तो उन्हों ने एक ह़दीस सुनाई, और कहा : तुम दोनों की क़ौम से एक सख़्त त़बीअ़त देहाती आया और केहने लगा : يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَيْنَ الْهِجْرَةُ या रसूलल्लाह ! हिजरत किस त़रफ़ की जाए ? اِلَيْكَ حَيْثُمَا كُنْتَ जहां आप हों ? या किसी मुअ़य्यन ज़मीन की त़रफ़ या किसी ख़ास क़ौम की जानिब, (येह बताइए) जब आप विसाल फ़रमा जाएं तो हिजरत ख़त्म हो जाएगी ? रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم थोड़ी देर ख़ामोश रहे फिर फ़रमाया : اَيْنَ السَّائِلُ عَنِ الْهِجْرَةِ हिजरत के बारे में सवाल करने वाला कहां है ? उस ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मैं यहां हूं । रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اِذَا اَقَمْتَ الصَّلَاةَ وَ اٰتَيْتَ الزَّكَاةَ فَاَنْتَ مُهَاجِرٌ وَاِنْ مُتَّ بِالْحَضْرَمَةِ यानी जब तुम नमाज़ की पाबन्दी करो और ज़कात अदा करो तो तुम मुहाजिर हो चाहे तुम्हें मौत (यमामा के अ़लाक़े) ह़ज़्रमा में ही क्यूं ना आए । एक रिवायत में येह भी है : اَنْ تَهْجُرَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ यानी हिजरत येह है कि तुम ज़ाहिर और छुपी हर बे ह़याई से दूर रहो । फिर एक आदमी खड़ा हुवा और बोला : या रसूलल्लाह ! येह बताइए कि जन्नतियों के लिबास बुने जाएंगे या जन्नत के फल चीर कर निकाले जाएंगे ? लोगों को उस के सवाल पर तअ़ज्जुब हुवा, कुछ लोग उस पर हंस पड़े तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : مِمَّ تَضْحَكُوْنَ؟ مِنْ جَاهِلٍ يَسْاَلُ عَالِمًا؟ तुम क्यूं हंस रहे हो ? इस पर कि एक ना जानने वाले ने जानने वाले से सवाल किया है ? थोड़ी देर ख़ामोश रेहने के बाद रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जन्नतियों के लिबास के बारे में सवाल करने वाला कहां है ? उस ने कहा कि मैं (यहां हूं) । रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : لَا بَلْ تُشَقَّقُ عَنْ ثَمَرِ الْجَنَّةِ (बुने नहीं जाएंगे) बल्कि वोह जन्नत के फलों में से निकलेंगे । येह बात आप ने तीन बार इरशाद फ़रमाई ।(1)

क्या उ़मरह करना वाजिब है ? ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास एक देहात का रेहने वाला आदमी आया और सवाल किया : يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَخْبِرْنِیْ عَنِ الْعُمْرَةِ اَوَاجِبَةٌ هِیَ؟ यानी या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे उ़मरह के बारे में बताइए कि क्या येह वाजिब है ? नबी ए अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : لَا यानी वाजिब

नहीं وَاَنْ تَعْتَبِرَ خَيْرٌ لَّكَ यानी अगर तू उ़मरह करे तो तेरे लिए भलाई है।[2]

मेरे लिए क्या है ? ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन सअ़द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने वालिद से रिवायत फ़रमाते हैं कि देहात का रेहने वाला एक आदमी नबी ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : يَانَبِيَّ اللهِ! عَلِّمْنِي كَلَامًا اَقُوْلُهُ यानी ऐ अल्लाह के नबी ! मुझे कोई दुआ़ सिखा दीजिए जो मैं पढ़ लिया करूं, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : यूं कहा करो : لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ اَللهُ اَكْبَرُ كَبِيْرًا وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا سُبْحَانَ اللهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ यानी अल्लाह के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं, वोह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, अल्लाह सब से बड़ा है, तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, अल्लाह हर ऐ़ब से पाक है जो सारे जहान वालों का मालिक है, नेकी करने की तौफ़ीक़ और गुनाह से बचने की क़ुव्वत अल्लाह ही की त़रफ़ से है। जो ग़ालिब हिक्मत वाला है। उस देहात वाले आदमी ने सवाल किया : هٰؤُلَاءِ لِرَبِّيْ عَزَّوَجَلَّ فَمَا لِيْ؟ यानी इन तमाम कलेमात का तअ़ल्लुक़ तो मेरे रब से है, मेरे लिए क्या है ? रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम यूं केह लिया करो اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَارْحَمْنِيْ وَاهْدِنِيْ وَارْزُقْنِيْ यानी ऐ अल्लाह ! मुझे बख़्श दे, मुझ पर रेह़म फ़रमा, मुझे हिदायत अ़ता फ़रमा और मुझे रिज़्क़ अ़ता फ़रमा।[3]

सब से बेहतरीन आदमी कौन है ? ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन बुस्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه बयान फ़रमाते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में देहात के रेहने वाले दो आदमी ह़ाज़िर हुवे, उन में से एक ने अ़र्ज़ की : يَا رَسُوْلَ اللهِ! اَيُّ النَّاسِ خَيْرٌ ! या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों में बेहतरीन कौन है ? रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : مَنْ طَالَ عُمُرُهٗ وَحَسُنَ عَمَلُهٗ यानी जिस की उ़म्र लम्बी और अ़मल अच्छा हो। दूसरे आराबी ने अ़र्ज़ की : يَا رَسُوْلَ اللهِ ! اِنَّ شَرَائِعَ الْاِسْلَامِ قَدْ كَثُرَتْ या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! इस्लाम के अह़काम बहुत ज़ियादा हैं, मुझे कोई ऐसा हुक्म दीजिए कि जिसे मैं मज़बूती से थाम लूं, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : لَا يَزَالُ لِسَانُكَ رَطْبًا مِنْ ذِكْرِ اللهِ عَزَّوَجَلَّ यानी तुम्हारी ज़बान हर वक़्त अल्लाह के ज़िक्र से तर रहे।[4] एक और रिवायत में है कि एक आदमी ने पूछा : اَيُّ النَّاسِ شَرٌّ यानी लोगों में सब से बुरा कौन है ? रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : مَنْ طَالَ عُمُرُهٗ وَسَاءَ عَمَلُهٗ यानी सब से बुरा वोह है कि जिस की उ़म्र लम्बी और अ़मल बुरा हो।[5]

शर्ह़ ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन अ़ल्लान शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : अपनी लम्बी उ़म्र में इन्सान वोह काम करे जो उसे अल्लाह करीम के क़रीब करने वाले और उस की रिज़ा तक पहुंचाने वाले हों और अ़मल के अच्छा होने का मत़लब येह है कि उस अ़मल को तमाम शराइत़ो अरकान के साथ मुकम्मल त़ौर पर अदा करे।[6]

ह़ज़रते इमाम शरफ़ुद्दीन त़ैबी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : लोगों में बेहतरीन आदमी वोह है जिस की उ़म्र लम्बी और अ़मल अच्छा हो क्यूंकि इन्सान की मिसाल इस दुन्या में नेक आमाल के साथ उस ताजिर की सी है जो सामाने तिजारत के साथ अपने घर से निकले ताकि तिजारत कर के मुनाफ़ा कमाए और अपने वत़न सलामती के साथ और ख़ूब नफ़्अ़ कमा कर लौटे तो वोह भलाई को पा लेता है। इसी त़रह़ इन्सान की उ़म्र उस का सरमाया है, उस की सांसें और आज़ा व जवारेह़ का काम करना उस का नक़्द है और नेक आमाल उस का मुनाफ़ा हैं, पस जितना उस का सरमाया यानी उ़म्र ज़ियादा होगी, नफ़्अ़ यानी नेक आमाल भी उतने ज़ियादा होंगे और आख़ेरत उस का वत़न है। पस जब वोह अपने वत़न लौटेगा तो अपने मुनाफ़े यानी नेक आमाल का पूरा पूरा सवाब पाएगा।[7]

---

(1) مسند احمد، 11/489، حدیث: 6890-11/665، حدیث: 7095(2) مسند احمد، 22/290، حدیث: 14396(3) مسند احمد، 3/162، حدیث: 1611(4) مسند احمد، 29/240، حدیث: 17698(5) ترمذی، 4/148، حدیث: 2337(6) دلیل الفالحین، 1/326، تحت الحدیث: 108(7) شرح الطیبی، 4/406، تحت الحدیث: 2270-

ह़ज़रते सैयदना शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام

(चौथी और आख़री क़िस्त)

ह़ज़रते मूसा ह़ज़रते शुऐ़ब के घर में तशरीफ़ लाए

ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام ज़ईफ़ हो चुके थे लेहाज़ा आप की बेटियां बकरियों को चराने ख़ुद जाया करती थीं और वापसी में एक कुंवें के पास आतीं, कुंवें के पास जब तक मर्द रेहते क़रीब ना जातीं, वोह लोग कुंवें से पानी निकालते फिर एक हौज़ में डालते और जानवरों को पिला देते थे, जब वोह लोग चले जाते तो ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام की बेटियां आगे बढ़तीं, चूंकि उन में कुंवें से पानी खींचने की ताक़त ना थी लेहाज़ा अपनी बकरियों को हौज़ का बचा खुचा पानी पिला देती थीं, ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام जब मिस्र से मदयन तशरीफ़ लाए तो कुंवें के क़रीब उन दोनों को अलग थलग खड़े देखा, वज्ह पूछने पर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने क़रीब ही एक दूसरे कुंवें से बहुत भारी पथ्थर हटाया और उस में से पानी निकाल कर उन दोनों की बकरियों को सैराब कर दिया जब येह दोनों जल्दी घर पहुंचीं और ह़ज़रते शुऐ़ब ने जल्दी आने की वज्ह पूछी तो उन्हों ने सारी बात बता दी, आप عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़जरते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को घर लाने का इरशाद फ़रमाया चुनान्चे एक बेटी साह़िबा गईं और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को घर ले आईं।[1]

ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ज़रते शुऐ़ब के साथ खाना खाया

ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام अभी तक मन्सबे नबुव्वत व रिसालत से सरफ़राज़ ना हुवे थे, जब ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام के पास पहुंचे तो खाना ह़ाज़िर था, ह़ज़रते शुऐ़ब ने कहा : बैठिए खाना खाइए। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उन की येह बात मन्ज़ूर ना की और कहा : मैं अल्लाह पाक की पनाह चाहता हूं। ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : खाना ना खाने की क्या वज्ह है, क्या आप को भूक नहीं है ? ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : मुझे इस बात का अन्देशा है कि येह खाना मेरे उस अ़मल का बदला ना हो जाए जो मैं ने आप के जानवरों को पानी पिला कर अन्जाम दिया है, क्यूंकि हम वोह लोग हैं कि नेक अ़मल पर बदला लेना क़बूल नहीं करते। ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : ऐ जवान ! ऐसा नहीं है, येह खाना आप के अ़मल के बदले में नहीं बल्कि मेरी और मेरे आबा ओ अज्दाद की आ़दत है कि हम मेहमान नवाज़ी करते हैं और खाना खिलाते हैं। येह सुन कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام बैठ गए और ह़ज़रते शुऐ़ब के साथ खाना तनावुल फ़रमाया।[2]

ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को अपने यहां ठेहरा लिया

ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام को एक ऐसे शख़्स की ज़रूरत थी जो बकरियों की सह़ीह़ देख भाल कर सके, लेकिन आप का दिल किसी से मुत़मइन नहीं होता था, जब आप ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को देखा और अपनी बेटियों से सुना कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام अमानतदार और ताक़तवर भी हैं,[3] तो आप ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से कहा : मैं चाहता हूं कि अपनी दोनों बेटियों में से एक के साथ इस मेहर पर तुम्हारा निकाह़ कर दूं कि तुम आठ साल तक

मेरी मुलाज़िमत करो फिर अगर तुम दस साल पूरे कर दो तो येह इज़ाफ़ा तुम्हारी त़रफ़ से मेहरबानी होगी और तुम पर वाजिब ना होगा और मैं तुम पर कोई इज़ाफ़ी मशक़्क़त नहीं डालना चाहता। اِنْ شَآءَاللّٰہ عزوجل अन क़रीब तुम मुझे नेकों में से पाओगे तो मेरी त़रफ़ से मुआ़मले में अच्छाई और अ़हद को पूरा करना ही होगा।[4]

ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को अ़सा मुबारक दिया

जब मुआ़हदा हो गया तो आप ने अपनी बेटी से फ़रमाया : एक अ़सा ले आओ, ताकि मैं उन्हें दे दूं कि उस से कामों में मदद रहेगी, बेटी साह़िबा एक अ़सा ले आईं, येह अ़सा वोही था जो ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام अपने साथ जन्नत से लाए थे और अब ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام के पास अमानतन रखा हुवा था, आप ने वोह बा बरकत अ़सा वापस लौटा दिया और हुक्म दिया : दूसरा ले आओ, बेटी साह़िबा अन्दर गईं और जिस दूसरे अ़सा को उठातीं तो वोह हाथ से गिर जाता, आख़िरे कार वोही जन्नती अ़सा ले कर वालिद साह़िब ह़ज़रते शुऐ़ब के पास गईं, ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام ने फिर लौटा दिया, ऐसा कई बार हुवा और आख़िरे कार ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام ने वोही अ़सा ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को दे दिया।[5]

अ़सा उछल कर ह़ज़रते मूसा के पास आ जाता

एक रिवायत में येह अल्फ़ाज़ हैं : ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से कहा : अन्दर जाइए और कोई सा एक अ़सा ले लीजिए ताकि उस से दरिन्दों को दूर भगा सकें और बकरियों के खाने के लिए दरख़्तों से पत्ते झाड़ सकें, ह़ज़रते मूसा अन्दर गए और एक अ़सा लिया और बाहर आ गए, ह़ज़रते शुऐ़ब ने अ़सा देखा तो कहा : उसे वापस रख दीजिए और दूसरा उठा लीजिए, ह़ज़रते मूसा अन्दर तशरीफ़ ले गए और उसे रख दिया और दूसरा थामने आगे बढ़े तो वोही अ़सा उछल कर आप के हाथ में आ गया, आप ने बार बार उसे रखा और दूसरे को उठाना चाहा मगर हर बार वोह उछल कर आप के हाथ में आ जाता, आख़िरे कार वोही अ़सा ले कर बाहर तशरीफ़ लाए, ह़ज़रते शुऐ़ब ने वोही अ़सा हाथ में देखा तो कहा : क्या मैं ने दूसरा अ़सा लेने का नहीं कहा था ? ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने सारा माजरा बयान कर दिया कि येह अ़सा उछल कर मेरे हाथ में आ जाता है, सारी बात सुन कर ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام समझ गए कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام बड़ी शान वाले हैं और अल्लाह भी येही चाहता है कि येह अ़सा ह़ज़रते मूसा के पास रहे, लेहाज़ा आप ने वोह अ़सा ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को दे दिया।[6]

ह़ज़रते शुऐ़ब की ह़ज़रते मूसा को नसीह़त

फिर आप ने ह़ज़रते मूसा से कहा : येह अ़सा जन्नती है, येह ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام से ह़ज़रते शीस عَلَیْہِ السَّلَام फिर ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام, ह़ज़रते हूद عَلَیْہِ السَّلَام, ह़ज़रते सालेह़ عَلَیْہِ السَّلَام, ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام, ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام, ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَیْہِ السَّلَام और फिर ह़ज़रते याक़ूब عَلَیْہِ السَّلَام तक पहुंचा है, आप इसे हरगिज़ अपने से जुदा ना करना।[7]

ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने सांप को क़त्ल कर दिया

फिर ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام ने कहा : मेरी क़ौम में ह़ासिदीन हैं, जब वोह देखेंगे कि आप ने मेरी बकरियों की देख भाल कर के मुझे बे नियाज़ कर दिया है तो वोह आप के मुआ़मले में मुझ से ह़सद करेंगे (और बहाने से) आप को फुलां वादी की त़रफ़ भेज देंगे कि वहां अच्छी चरागाह है, अगर वोह आप को वहां भेजें तो मत जाइएगा कि वहां एक बहुत बड़ा सांप है जो बकरियों को खा जाएगा, मुझे डर है कि आप को और मेरी बकरियों को नुक़्सान ना पहुंच जाए। चालीस दिन गुज़र गए तो ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने सोचा : उस सांप को क़त्ल करना तो बहुत अच्छा काम है, फिर बकरियों को ले कर उसी वादी की त़रफ़ चले गए, क़रीब पहुंचे तो वोही सांप बकरियों की त़रफ़ लपका, ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने उसे क़त्ल कर दिया फिर वापस आ कर ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام को ख़बर दी तो वोह बेह़द ख़ुश हुवे, शेहर वालों को मालूम हुवा तो वोह भी बहुत ख़ुश हुवे और ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की बहुत इ़ज़्ज़त करने लगे इस त़रह़ ह़ज़रते मूसा ह़ज़रते शुऐ़ब के पास बकरियों को चराने और पानी पिलाने का काम करते रहे यहां तक कि मुआ़हदे की मुद्दत पूरी हो गई और बकरियों की तादाद 400 तक पहुंच गई।[8]

ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام के पास से वापसी

ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने जब ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام से जुदा होने का इरादा किया तो अपनी ज़ौजा से फ़रमाया : आप अपने वालिद साहिब से कुछ बकरियां मांग लीजिए ताकि (रास्ते में) ख़ूराक आसानी से मिल जाए,[9] ह़ज़रते शुऐ़ब ने ह़ज़रते मूसा से कहा : ऐ मूसा ! मेरा माल अल्लाह की त़रफ़ से है जिस पर आप चाहें हाथ रख दें, ह़ज़रते मूसा ने कहा : थोड़ा सा माल मुझे पसन्द है जिस के सहारे अपनी ज़िन्दगी के अय्याम गुज़ार दूं, फिर आप ने एक जानवर अपनी ज़ौजा की सवारी के लिए लिया, जबकि दूसरा अपना ज़ादे राह रखने के लिए ले लिया, ह़ज़रते शुऐ़ब ने कहा : कुछ और नहीं चाहते ? ह़ज़रते मूसा ने फ़रमाया : येह बहुत है।[10]

ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام का मोजिज़ा

फिर ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को कुछ बकरियां अ़त़ा कीं और कहा : मेरी येह (काली या सफ़ेद) बकरियां आप के लिए हैं जो बच्चा पैदा करती हैं तो बच्चे का रंग मां के बर ख़िलाफ़ (काला या सफ़ेद) होता है।[11]

बेटी साह़िबा को नसीह़त

जब ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام वापस जाने लगे तो ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام रोने लगे और केहने लगे : मेरी उ़म्र बहुत ज़ियादा हो गई है, कमज़ोरी भी है और मुझ से ह़सद करने वाले भी बहुत ज़ियादा हैं, आप को भी रोकना मुझे अच्छा नहीं लग रहा है। फिर ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام ने अपनी बेटी को वसिय्यत की : अपने शौहर (ह़ज़रते मूसा) की कभी मुख़ालेफ़त ना करना।[12]

ह़िकायत

मन्क़ूल है कि अल्लाह करीम ने ह़ज़रते सैयदना शुऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ वही फ़रमाई : ऐ शुऐ़ब ! मेरे लिए अपनी गर्दन आ़जिज़ी से झुका ले और अपने दिल में ख़ुशूअ़ पैदा कर, अपनी आंखों से आंसू बहा और मुझ से दुआ़ कर कि मैं तेरे क़रीब होऊं।[13]

ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام की शरीअ़त

एक क़ौल के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام को भी सह़ाइफ़ अ़त़ा हुवे थे,[14] एक रिवायत में येह कलेमात हैं कि ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام उन सह़ाइफ़ को पढ़ा करते थे जो अल्लाह करीम ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام पर नाज़िल फ़रमाए थे।[15]

सह़ाइफ़े शुऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام में शाने मुह़म्मदी

ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام को जो सह़ाइफ़ अ़त़ा हुवे थे उन में प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान यूं बयान की गई थी : मेरा बन्दा बड़ी बा वक़ार शान वाला है मेरी वही उस पर नाज़िल होगी तो वोह मख़्लूक़ में मेरा अ़द्ल ज़ाहिर कर देगा, वोह क़ेहक़हा मार कर नहीं हंसेगा वोह अन्धी आंखों और बेहरे कानों को खोल देगा, वोह पर्दा पड़े दिलों को ज़िन्दा करेगा और मैं उसे जो कुछ भी दूंगा वोह किसी और को नहीं दूंगा, एक और मक़ाम पर ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام के सह़ाइफ़ में शाने मेह़बूबी का बयान कुछ इस अन्दाज़ में है : वोह अल्लाह की ऐसी ह़म्द करेगा जो किसी ने ना की होगी वोह अल्लाह का नूर है जिसे बुझाया नहीं जा सकता, उस के कांधे पर उस की मोहर (ख़त्मे नबुव्वत) होगी।[16]

वफ़ाते मुबारका

ह़ज़रते सैयदना शुऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام की उ़म्र 140 साल की हुई तो आप का विसाल हो गया,[17] मश्हूर क़ौल के मुत़ाबिक़ आप की क़ब्रे मुबारक फ़िलिस्त़ीन की बस्ती ह़त्तीन में है। ह़त्तीन शाम के साह़िली अ़लाक़े पर वाक़ेअ़ एक बस्ती है, क़ब्रे मुबारक पर एक गुम्बद भी बना हुवा है लोग दूर दराज़ से सफ़र कर के यहां आते हैं क़ब्रे मुबारक की ज़ियारत करते हैं और बरकतें पाते हैं।[18]

---

(1) سیرت الانبیاء، ص545 تا547 ملخصًا (2) تفسیر خازن، 3/430، القصص:25 (3) لطائف الاشارات للقشیری، 2/435 (4) صراط الجنان، 7/273 (5) عرائس البیان للثعلبی، ص240 (6) عرائس البیان للثعلبی، ص240-لطائف الاشارات للقشیری، 2/435 (7) نہایۃ الارب، 33/160 (8) نہایۃ الارب، 13/161 (9) معجم کبیر، 17/134 (10) تاریخ ابن عساکر، 61/42 (11) غریب الحدیث لابن الجوزی، 2/260 (12) نہایۃ الارب، 13/161 (13) روض الفائق، ص:70 (14) سیرت حلبیہ، 1/314 (15) تاریخ ابن عساکر، 23/78 (16) سیرت حلبیہ، 1/314 ملتقطا (17) المنتظم فی تاریخ الملوک والامم، 1/326 (18) تہذیب الاسماء، 1/234، رقم:254۔

मदनी मुज़ाकरे के सवाल जवाब

1 हम्ज़ा नाम की तासीर

सवाल : सुना है कि हम्ज़ा नाम वाले बच्चे बहुत ज़ियादा तूफ़ानी और जलाली होते हैं, क्या येह बात दुरुस्त है ?

जवाब : जब कभी इस त़रह़ का सवाल करना हो तो बा बरकत नाम के साथ करना मुनासिब नहीं है। बहर ह़ाल नाम की तासीर होती है मगर इस सवाल वाले नाम को हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा और प्यारे सह़ाबी ह़ज़रते हम्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के मुबारक नाम से निस्बत ह़ासिल है तो इस की तासीर अच्छी आएगी, बुरी नहीं। बहुत ज़ियादा तूफ़ानी, बहुत ज़ियादा शरारती और जलाली बात बात पर ग़ुस्सा करने वाले को बोलते हैं तो ह़म्ज़ा नाम की येह तासीर नहीं हो सकती। सह़ाबी ए रसूल की निस्बत से बरकत ह़ासिल करने के लिए येह नाम रखें, ह़म्ज़ा के माना हैं : शेर। और येह नाम बहुत सारे आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत का होता है, اَلْحَمْدُ لِلّٰه सवाल में कही गई बात कभी नोट नहीं की।

2 नमाज़े जनाज़ा में मैयत की दुआ ना पढ़ी तो ?

सवाल : नमाज़े जनाज़ा में जो मैयत के लिए दुआ होती है अगर वोह दुआ ना पढ़ी जाए तो नमाज़े जनाज़ा हो जाएगी ?

जवाब : नमाज़े जनाज़ा में दुआ नहीं पढ़ी तो नमाज़े जनाज़ा हो जाएगी, अलबत्ता दुआ याद ना हो तो येह दुआ ए मासूरा[1] اَللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ पढ़ ले या तीन बार رَبِّ اغْفِرْلِیْ पढ़ ले, दुआ की निय्यत से सूरए फ़ातेह़ा भी पढ़ सकते हैं, सुन्नत अदा हो जाएगी, लेकिन नमाज़े जनाज़ा की दुआ याद करनी चाहिए। (बहारे शरीअ़त, 1/829,835)

3 मामूं सुसर, चचा सुसर और उन की औलाद से पर्दा

सवाल : क्या औ़रत का अपने मामूं सुसर (यानी शौहर के मामूं), चचा सुसर (यानी शौहर के चचा) और उन की औलाद से भी पर्दा होगा ?

जवाब : जी हां ! मामूं सुसर, चचा सुसर और उन की औलाद से भी पर्दा करना होगा। याद रखिए !

---

(1) यानी क़ुरआनो ह़दीस में बयान की हुई दुआ

जिस से शादी हमेशा के लिए ह़राम ना हो उस से पर्दा करना होता है और वोह ना मेह़रम और अजनबी केहलाते हैं।

4 मुसलमान को कांटा चुभ जाने पर भी अज्र मिलता है

सवाल : अगर किसी के आज़ा ज़ाएअ़ हो जाएं मसलन हाथ या पांव कट जाएं तो क्या उसे कोई फ़ज़ीलत या अज्र भी मिलेगा ?

जवाब : जी हां ! अगर मुसलमान को कांटा चुभ जाए तो येह भी उस के लिए गुनाहों का कफ़्फ़ारा (यानी गुनाह मिटने का सबब) बनता है, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : मुसलमान को बीमारी, परेशानी, रंज, अज़िय्यत और ग़म में से जो मुसीबत पहुंचती है यहां तक कि कांटा भी चुभता है तो अल्लाह पाक उसे उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बना देता है। (بخاری، 4/3، حدیث: 5641)

5 सुन्नतों की एक रक्अ़त में एक से ज़ाइद सूरतें पढ़ना

सवाल : क्या सुन्नतों की एक रक्अ़त में सूरए फ़ातेह़ा के बाद एक से ज़ाइद सूरतें पढ़ सकते हैं ?

जवाब : जी हां ! पढ़ सकते हैं।

6 क्या जन्नत में नींद होगी ?

सवाल : क्या जन्नत में नींद होगी ?

जवाब : नहीं। (معجم اوسط، 1/266، حدیث: 919)

7 इस्लामी बहेन का बुलन्द आवाज़ से रोना कैसा ?

सवाल : इस्लामी बहेन का नबी ए करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم या मदीने शरीफ़ की याद में या फ़िराक़े मदीना में बुलन्द आवाज़ से रोना कैसा है ?

जवाब : अगर ग़ैर मर्दों यानी ना मेह़रमों तक रोने की आवाज़ ना पहुंचे तो बुलन्द आवाज़ से रोने में कोई ह़रज नहीं है।

8 बीमार शख़्स से दुआ़ करवाना

सवाल : किसी बीमार से अपने लिए दुआ़ करवाना कैसा है ?

जवाब : अच्छा है। ह़दीसे पाक में है : मरीज़ से दुआ़ करवाओ कि उस की दुआ़ फ़रिश्तों की दुआ़ की त़रह़ होती है। (ابن ماجه، 2/191، حدیث: 1441)

9 मैदाने मेह़शर कहां होगा ?

सवाल : ह़श्र का मैदान कहां क़ाइम होगा ?

जवाब : मुल्के शाम की सरज़मीन पर।

(مسند امام احمد، 7/235، 237، حدیث: 20042، 20051)

10 नमाज़ में सना ना पढ़ी तो ?

सवाल : नमाज़ में सना पढ़ना भूल जाएं तो क्या सज्दा ए सह्व करना ज़रूरी है ?

जवाब : जी नहीं, नमाज़ में सना पढ़ना सुन्नत है, और सुन्नत छूटने पर सज्दा ए सह्व वाजिब नहीं होता, हां जान बूझ कर सना तर्क नहीं करनी चाहिए।

11 ज़ुल क़ादा के महीने में शादी करना

सवाल : क्या ज़ुल क़ादा के महीने में शादी कर सकते हैं ?

जवाब : जी हां, कर सकते हैं।

(فتاوی رضویه، 11/265 ماخوذاً)

12 लटकी हुई ज़ुल्फ़ों पर मस्ह़ करना

सवाल : जिन की ज़ुल्फ़े बड़ी हों क्या वोह वुज़ू में इमामा उतारे बग़ैर ज़ुल्फ़ों पर मस्ह़ कर सकते हैं ?

जवाब : बहारे शरीअ़त जिल्द 1, सफ़ह़ा 291 पर है : सर से जो बाल लटक रहे हों उन पर मस्ह़ करने से मस्ह़ ना होगा।

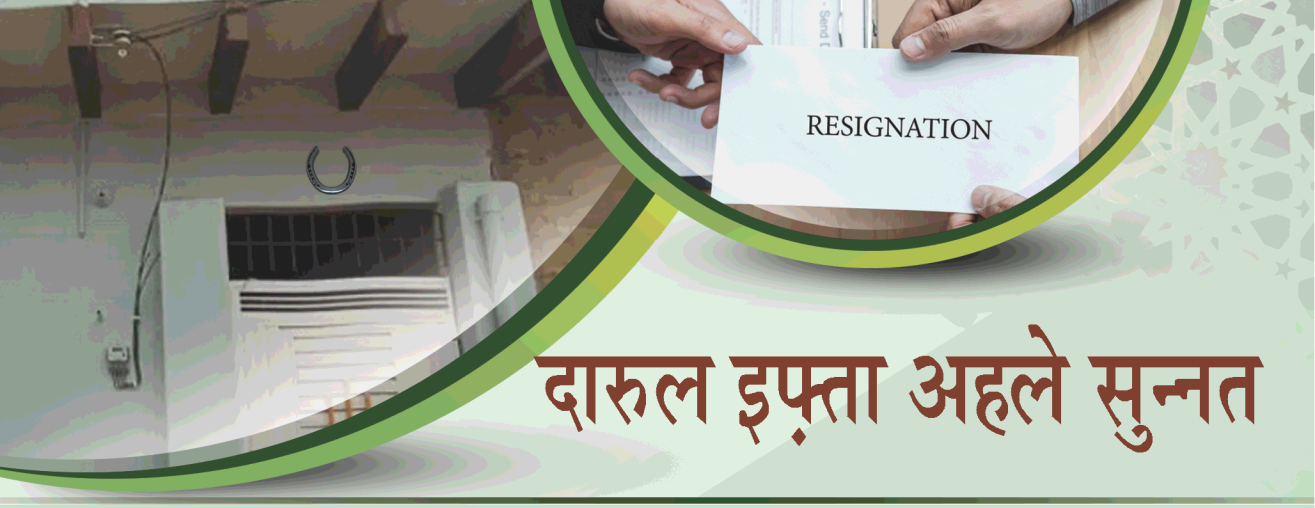

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

1 पेहले से बताए बग़ैर काम छोड़ने पर उजरत ना देना ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि अक्सर दुकानों पर लड़के काम के लिए रखे जाते हैं तो उन से येह तै़ किया जाता है कि अगर काम छोड़ने का ज़ेहन हो तो बता कर छोड़ना है, वरना बीच महीने में बग़ैर बताए छोड़ कर गए, तो उस महीने में काम किए हुवे जितने दिन होंगे, उन की तनख़्वाह नहीं मिलेगी । येह चीज़ दुकानों पर लड़के रखते हुवे उ़मूमन तै़ होती है । क्या येह त़रीक़ा ए कार शरअ़न दुरुस्त है ? रेहनुमाई फ़रमाएं ।

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

इजारा करते हुवे येह तै़ करना कि अगर बग़ैर बताए छोड़ कर गए तो महीने में जितने दिन काम कर चुके हो, उस की भी तनख़्वाह नहीं मिलेगी, येह शर्त़ फ़ासिद है और ऐसी शर्त़ लगाना, नाजाइज़ व गुनाह है । दुकानदार और जिस मुलाज़िम ने येह नाजाइज़ अ़क़्दे इजारा किया हो, वोह दोनों गुनाहगार होंगे और उन पर तौबा लाज़िम होगी और अगर सवाल में बयान कर्दा सूरत के मुत़ाबिक़ अ़क़्द हो चुका हो और एक वक़्त आने पर मुलाज़िम बग़ैर बताए महीने के दौरान काम छोड़ गया, तो मालिक को क़तअ़न येह ह़क़ ह़ासिल नहीं कि वोह अपनी ख़िलाफ़े शरअ़ लगाई हुई शर्त़ के मुत़ाबिक़ उस की तनख़्वाह ज़ब्त़ करे, बल्कि इस सूरत में मालिक पर लाज़िम है कि जितने दिन मुलाज़िम ने काम किया है, उतने दिन की ह़िसाब लगा कर उजरते मिस्ल अदा करे । उजरते मिस्ल का मत़लब येह है कि जितने दिन उस काम की उ़र्फ़न उजरत बनती हो, वोह अदा करे, अगर्चे तै़ ज़ियादा की हो ।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 घरों के बाहर नाल या सींग लगाना कैसा ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले में कि बाज़ लोग घरों के बाहर नज़रे बद से बचने के लिए घोड़े की नाल लगाते हैं, इसी त़रह़ बाज़ लोग जानवर का सींग लगाते हैं, हम ने सुना है कि येह नाजाइज़ है ? क्या येह बात दुरुस्त है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

नज़र का लगना ह़क़ है, अह़ादीस व आसार से वाज़ेह़ त़ौर पर इस का सुबूत मिलता है, इसी वज्ह से शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने जहां नज़रे बद से ह़िफ़ाज़त के लिए दुआ़एं तालीम फ़रमाई, वहीं इस से ह़िफ़ाज़त की तदाबीर इख़्तियार करने की भी इजाज़त मर्ह़मत फ़रमाई, लेहाज़ा नज़रे बद से ह़िफ़ाज़त की तदाबीर इख़्तियार करना जाइज़ है जबकि मुफ़ीद हों, और शरई त़क़ाज़ों के ख़िलाफ़ ना हों । इस तफ़्सील के पेशे नज़र, नज़रे बद से बचने के लिए घरों पर घोड़े की नाल और जानवर की सींग लगाने को

नाजाइज़ नहीं कहा जा सकता कि इस त़रह़ की तदाबीर की नज़ाइर शरअ़ में मौजूद हैं। ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक ख़ूब सूरत बच्चे को देखा, तो फ़रमाया कि इसे काला टीका लगा दो ताकि इसे नज़र ना लगे, यूंही उ़लमा ए दीन ने ह़दीस को सामने रखते हुवे, नज़रे बद से बचने के लिए खेतों में लकड़ी पर कपड़ा वग़ैरा बान्ध कर नस्ब करने की इजाज़त दी, और मज़कूरा दोनों तदाबीर की ह़िक्मत येह बयान फ़रमाई कि जब कोई देखने वाला ख़ूबसूरत बच्चे या खेती को देखेगा तो उस की नज़र पेहले बच्चे के चेहरे पर मौजूद काले टीके, और खेत में नस्ब की गई लकड़ी पर, और इस के बाद बच्चे के चेहरे और खेती पर पड़ेगी, जिस की वज्ह से नज़रे बद से ह़िफ़ाज़त रहेगी। येही मक़्सद घोड़ों की नाल और जानवर का सींग लगाने का भी होता है कि देखने वाले की नज़र पेहले उन पर और फिर इस के बाद घर पर पड़े और नज़रे बद से ह़िफ़ाज़त रहे।

अलबत्ता इतना ज़रूर है कि इन चीज़ों की ब निस्बत बेहतर और अफ़्ज़ल येही है कि मासूर दुआएं पढ़ने का मामूल बनाया जाए। ह़दीसे मुबारका में नज़रे बद से ह़िफ़ाज़त की एक बेहतरीन दुआ येह वारिद है : اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّةِ، مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَهَامَّةٍ، وَمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَامَّةٍ यानी मैं हर शैत़ान, ज़ेहरीले जानवर और हर बीमार करने वाली नज़र से, अल्लाह के पूरे कलेमात की पनाह लेता हूं।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 ईद के मौक़ेअ़ पर मेहमान का सदक़ा ए फ़ित्र किस पर वाजिब है ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस बारे में कि बाज़ लोग केहते हैं कि ईद के क़रीब मेहमान आए, तो मेहमान का सदक़ा ए फ़ित्र भी मेज़बान के ज़िम्मे लाज़िम होता है, क्या येह बात दुरुस्त है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

सदक़ा ए फ़ित्र हर आज़ाद, मुसलमान, मालिके निसाब (यानी जिस के पास साढ़े सात तोला सोना या साढ़े बावन तोला चांदी या इतनी चांदी की मालिय्यत के ब क़दर रक़म या कोई सामान ह़ाजते अस्लिय्या और क़र्ज़ के इलावा मौजूद हो, उस) पर ईदुल फ़ित्र की सुब्ह़े सादिक़ तुलूअ़ होते ही वाजिब हो जाता है और हर मालिके निसाब का फ़ित्राना उसी पर वाजिब होता है, दूसरे पर नहीं, ह़त्ताकि ना बालिग़ बच्चा भी साह़िबे निसाब हो, तो उसी के माल से अदा किया जाएगा, यूंही मेहमान मालिके निसाब है, तो उस का सदक़ा ए फ़ित्र भी उसी पर वाजिब होगा, मेज़बान पर नहीं, अलबत्ता अगर मेज़बान ख़ुद अदा करना चाहे, तो मेहमान की इजाज़त से उस की त़रफ़ से अदा करने में ह़रज भी नहीं।

नोट : नाबालिग़ बच्चा साह़िबे निसाब हो तो उसी के माल से उस का सदक़ा ए फ़ित्र अदा किया जाएगा लेकिन साह़िबे निसाब ना हो तो फिर उस का ग़नी बाप ही उस की त़रफ़ से सदक़ा ए फ़ित्र देगा।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

4 बेसिन पर खड़े हो कर वुज़ू करना कैसा ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि क्या बेसिन पर खड़े हो कर वुज़ू कर सकते हैं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

बेसिन पर खड़े हो कर वुज़ू कर सकते हैं, अलबत्ता बेसिन पर खड़े हो कर वुज़ू करना ख़िलाफ़े मुस्तह़ब है, क्यूंकि वुज़ू के मुस्तह़ब्बात व आदाब में से येह है कि क़िब्ला रू किसी ऊंची जगह बैठ कर वुज़ू किया जाए।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

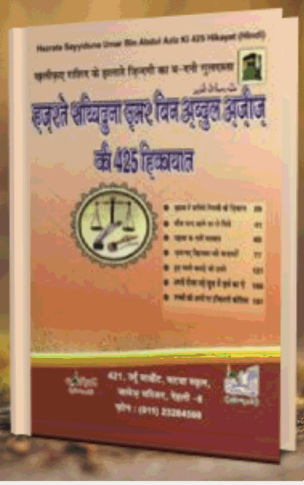

ज़िम्मेदारी निभाइए !

इस्लाम के पेहले मुजद्दिद, ख़लीफ़ा ए राशिद, ह़ज़रते सैयदना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه वोह अ़ज़ीम हस्ती हैं कि जो 2 साल 5 महीने ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ रहे और इस ज़िम्मेदारी के दौरान इन्हों ने ज़मीन को अ़द्लो इन्साफ़ से भर दिया और ज़ुल्म का ख़ातिमा कर दिया, इन्हें ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारी बग़ैर मांगे दी गई थी ।[1] मांग कर हुकूमत लेने और बिन मांगे मिलने वाली हुकूमत का फ़र्क़ बयान करते हुवे अल्लाह पाक के आख़री नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ अ़ब्दुर्रहमान बिन समुरह ! तुम इमारत (यानी हुकूमत) त़लब मत करना ! क्यूंकि अगर वोह तुझे बग़ैर मांगे दी गई तो उस पर तेरी मदद की जाएगी और अगर तेरी त़रफ़ से मांगने पर दी गई तो तुझे उसी के सिपुर्द कर दिया जाएगा (यानी फिर तेरी मदद नहीं की जाएगी) ।[2]

एहसासे ज़िम्मेदारी के सबब रोने लगे जब आप को बिन मांगे हुकूमत मिली तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه रोने लगे, ह़ज़रते सैयदना ह़म्माद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रोने की वज्ह पूछी, तो फ़रमाया : ह़म्माद ! मुझे इस ज़िम्मेदारी से बड़ा ख़ौफ़ आता है । उन्हों ने पूछा : आप को दिरहम (यानी दौलत) से कितनी मह़ब्बत है ? इरशाद फ़रमाया : मुझे दिरहम से मह़ब्बत नहीं है । तो ह़ज़रते सैयदना ह़म्माद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अ़र्ज़ की : फिर आप मत डरें, अल्लाह पाक आप की मदद फ़रमाएगा ।[3] आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की सीरत पर लिखी हुई मक्तबतुल मदीना की किताब ह़ज़रते सैयदना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की 425 ह़िकायात में इस वाक़िए़ के तह़त सफ़ह़ा 119 ता 120 पर लिखा है : आप ने ह़ज़रते सैयदना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का तर्ज़े अ़मल मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि बग़ैर त़लब के ख़िलाफ़त का आला तरीन मन्सब मिलने पर ख़ुश होने के बजाए एह़सासे ज़िम्मेदारी की वज्ह से किस क़दर परेशान हो गए और एक हम हैं जो ओ़हदा व मन्सब के ह़ुसूल के लिए दौड़ धूप करते हैं और अपनी ख़्वाहिश पूरी हो जाने पर फूले नहीं समाते लेकिन अगर हमारी तगो दौ का मन पसन्द नतीजा ना निकले तो हमारा मूड़ ओफ़ हो जाता है । सिर्फ़ इसी पर बस नहीं बल्कि (مَعَاذَ اللهِ) ह़सद व बुग़्ज़, चुग़ली व ग़ीबत, तोहमत और ऐ़बजूई का एक संगीन सिल्सिला शुरूअ़ हो जाता है । नीज़ ह़ज़रते सैयदना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को तसल्ली देने वाले की उ़म्दा सोच भी मरह़बा कि अगर ह़िर्से माल दिल में नहीं है तो اِنْ شَآءَ الله आफ़िय्यत व सलामती नसीब होगी क्यूंकि ह़िर्से माल बहुत सी तबाहियों का सबब है जैसा कि अल्लाह पाक के आख़री नबी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : दो भूके भेड़िये अगर बकरियों के रेवड़ में छोड़ दिए जाएं तो इतना नुक़्सान नहीं पहुंचाते जितना कि मालो दौलत की ह़िर्स और ह़ुब्बे जाह इन्सान के दीन को नुक़्सान पहुंचाते हैं ।[4]

ज़िम्मेदारी पूरी करने और अ़द्ल करने वाले ह़ाकिम के फ़ज़ाइल ह़ज़रते सैयदना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उम्मत के ह़क़ में अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करने वाले एक आ़दिल ह़ाकिम साबित हुवे थे, और ह़दीसे पाक के मुत़ाबिक़ अ़द्ल करने वाला ह़ाकिम क़ियामत के दिन अल्लाह पाक की रेह़मत या उस के अ़र्शे आज़म के साए में होगा ।[5] और आ़दिल ह़ाकिम का एक दिन 60 साल की इबादत से बेहतर होता है ।[6] नीज़ नेक

आ़दिल बादशाह क़ियामत के दिन नूर के मिम्बरों पर होंगे ।[7]

जबकि रिआ़या के मुआ़मलात में ख़ियानत करने और अपनी ज़िम्मेदारी पूरी ना करने वाले हाकिम और निगरान के मुतअ़ल्लिक़ अल्लाह पाक के आख़री नबी मुहम्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रामीन में बहुत ही इ़ब्रत है, 6 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों :

ज़िम्मेदारी पूरी ना करने वाले 1 अल्लाह पाक जिस बन्दे को रिआ़या का निगरान बनाए और वोह अपनी रिआ़या से ख़ियानत करते हुवे मर जाए तो अल्लाह पाक उस पर जन्नत ह़राम फ़रमा देता है ।[8] 2 जो शख़्स मुसलमानों के मुआ़मलात का निगरान बने फिर उन के लिए कोशिश ना करे और उन की ख़ैर ख़्वाही ना करे तो वोह उन के साथ जन्नत में दाख़िल ना होगा ।[9] 3 एक रिवायत में है कि जैसी ख़ैर ख़्वाही और कोशिश अपने लिए करता है वैसी उन के लिए ना करे तो अल्लाह पाक उसे क़ियामत के दिन मुंह के बल जहन्नम में डाल देगा ।[10] 4 जो मुसलमानों के किसी मुआ़मले का वाली बना उसे क़ियामत के दिन लाया जाएगा यहां तक कि उसे जहन्नम के पुल पर खड़ा किया जाएगा, अगर वोह नेकी करने वाला हुवा तो पुल को पार कर लेगा और अगर बुराई करने वाला हुवा तो इस की वज्ह से पुल फट जाएगा, और वोह शख़्स जहन्नम में 70 साल की मसाफ़त पर जा गिरेगा ।[11] 5 जो मुसलमानों के किसी मुआ़मले का वाली बना, फिर उस ने मिस्कीन, मज़लूम या ह़ाजत मन्द पर अपना दरवाज़ा बन्द रखा तो अल्लाह पाक क़ियामत के दिन उस की ह़ाजत के वक़्त अपनी रेह़मत के दरवाज़े बन्द रखेगा जबकि वोह उस का ज़ियादा मोह़ताज होगा ।[12] 6 जो मेरी उम्मत के किसी मुआ़मले का वाली बना और उस ने उन को मशक़्क़त में डाला तो उस पर अल्लाह पाक की **बहला** है । सह़ाबा ए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : ऐ अल्लाह के रसूल ! अल्लाह की **बहला** से क्या मुराद है ? इरशाद फ़रमाया : अल्लाह पाक की लानत ।[13]

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! मैं दावते इस्लामी के दीनी माह़ोल में 1991 ईसवी में आया हूं और मैं ने सब से पेहले 1994 या 1995 ईसवी में ह़ज़रते सैयदना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की सीरते मुबारका पढ़ी थी, اَلْحَمْدُ لِلّٰه उस वक़्त से मुझे इन से मह़ब्बत हो गई थी कि येह क्या कमाल की शख़्सिय्यत हैं, किसी को अगर हुज़ूर नबी ए पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरते मुबारका, ख़ुलफ़ा ए राशिदीन और दीगर बड़े बड़े सह़ाबा ए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सीरतों का फ़ैज़ान किसी एक शख़्सिय्यत में जम्अ़ देखना हो तो वोह आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की सीरते पाक को देख ले । इ़ल्मे दीन के नूर से माला माल, ज़ोहद, तक़्वा ओ परहेज़गारी, अहले इ़ल्म से मह़ब्बत, इन को अपने साथ रखना और इन से मुशावरतें करना वग़ैरा । अल ग़रज़ कि ख़ौफ़े ख़ुदा, तक़्वा ओ परहेज़गारी और शरीअ़ते मुत़ह्हरा पर अ़मल की बुन्याद पर चलाई गई सल्त़नत ने थोड़े ही अ़र्से में अम्न और मईशत दोनों को ही मज़बूत़ कर दिया था जो कि किसी भी मुल्क और रियासत की 2 अहम चीज़ें होती हैं ।

मेरी बिल उ़मूम तमाम आ़शिक़ाने रसूल और बिल ख़ुसूस उम्मत के वालियान, ज़िम्मेदारान और त़बक़ा ए ह़ुक्मरान से फ़रियाद है ! अल्लाह पाक का ख़ौफ़ रखते हुवे अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा कीजिए, अपनी मौत, क़ब्र और ह़श्र के मुआ़मलात को हर दम पेशे नज़र रखिए, अ़मल की निय्यत के साथ ख़लीफ़ा ए राशिद ह़ज़रते सैयदना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की सीरते मुबारका को ज़रूर पढ़िए । अल्लाह पाक ने चाहा तो आप अपने अन्दर ज़रूर मुस्बत तब्दीली मेह़सूस करेंगे और अपनी ज़िम्मेदारियों को ब ख़ूबी निभाने की त़रफ़ क़दम बढ़ाएंगे । अल्लाह पाक हमें अपनी ज़िम्मेदारियों को अच्छे त़रीक़े से पूरा करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए ।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

---

(1) تاریخ الخلفاء، ص184، 185 (2) بخاری، 4/311، حدیث:6722- مرقاۃ المفاتیح، 6/587، تحت الحدیث:3412 (3) تاریخ الخلفاء، ص185 (4) ترمذی، 4/166، حدیث:2383 (5) بخاری، 1/480، حدیث: 1423- مراٰۃ المناجیح، 1/435 (6) معجم اوسط، 3/334، حدیث:4765 (7) مسلم، ص783، حدیث: 4721 (8) مسلم، ص78، حدیث:363 (9) مسلم، ص78، حدیث:366 (10) معجم صغیر، 1/167 (11) معجم کبیر، 2/39، حدیث:1219 (12) مسند احمد، 5/315، حدیث:15651 (13) مسند ابی عوانۃ، 4/380، حدیث:7023۔

इमाम अह़मद रज़ा ख़ान "आला ह़ज़रत" क्यूं ?

इमाम अह़मद रज़ा को आला ह़ज़रत कैसे कहा जाने लगा ?
येह बात रौज़े रौशन की त़रह़ अ़यां (Clear) है कि नाम इस लिए रखे जाते हैं कि इन के ज़रीए एक शख़्सिय्यत का दूसरी से इम्तियाज़ होता है, अगर आदमी अपने सारे बच्चों के नाम एक ही नाम पर रख ले और उन में इम्तियाज़ के लिए कोई दूसरा लफ़्ज़ इस्तेमाल ही ना करे तो इस से सामेईन व मुख़ात़िबीन को जो दुश्वारी व परेशानी होगी इस का हर एक अन्दाज़ा कर सकता है, जबकि लोगों को दिए जाने वाले अच्छे अल्क़ाबात उ़मूमन उन की ज़ाहिरी व बात़िनी ख़ूबियों और ख़ुदादाद सलाह़िय्यतों को देख कर दिए जाते हैं, लेहाज़ा जो शख़्स इ़ल्मो अ़मल का जामेअ़, दीने इस्लाम के लिए अपना सब कुछ क़ुरबान करने का जज़्बा रखने वाला, ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा जिस के राहनुमा हों तो फिर उस को दिए जाने वाले अल्क़ाबात भी ऐसे हों जो उसे अपने मुआ़सिरीन से मुम्ताज़ कर सकें, इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का मुआ़मला भी कुछ इसी त़रह़ ही है, आप का घराना इ़ल्म दोस्त था और आप के ज़माने में भी कई इ़ल्मी शख़्सिय्यात मौजूद थीं लेकिन उन तमाम के दरमियान अल्लाह पाक ने आप को जो मक़ामो मर्तबा अ़त़ा किया था जब इस का ज़ुहूर आप के ख़ानदान के अफ़राद और दीगर इ़ल्मी शख़्सिय्यात पर हुवा तो उन्हों ने इम्तियाज़ी तआ़रुफ़ के लिए आप को अपनी बोल चाल में आला ह़ज़रत केहना शुरूअ़ कर दिया, मआ़रिफ़ो कमालात और फ़ज़ाइलो मकारिम में अपने मुआ़सिरीन के दरमियान बरतरी के लेह़ाज़ से येह लफ़्ज़ अपने ममदूह़ की शख़्सिय्यत पर इस त़रह़ मुन्त़बिक़ हो गया कि आज सिर्फ़ हिन्द के अ़वामो ख़वास ही नहीं बल्कि सारी दुन्या के आ़शिक़ाने रसूल की ज़बानों पर चढ़ गया और अब क़बूले आ़म की नौबत यहां तक पहुंच गई कि क्या मुवाफ़िक़ क्या मुख़ालिफ़ ! किसी ह़ल्क़े में भी आला ह़ज़रत कहे बग़ैर शख़्सिय्यत की ताबीर (Introduction) ही मुकम्मल नहीं होती।

(सवानेह़े आला ह़ज़रत, स. 5 बित्तग़य्युरि क़लील)

जिस त़रह़ हर फूल को गुलाब नहीं कहा जाता इसी त़रह़ आला ह़ज़रत के दौर में और बाद भी ह़ज़रत तो बहुत गुज़रे और हैं भी, लेकिन हर एक को आला ह़ज़रत नहीं कहा जाता।

वस्वसा अगर शैत़ान येह वस्वसा दिलाए कि तुम ने तो आला ह़ज़रत को अपने नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से भी बढ़ा दिया क्यूंकि ह़ुज़ूर عَلَیْہِ السَّلَام को तो सिर्फ़ ह़ज़रत कहा जाता है जबकि इमाम अह़मद रज़ा को तुम आला ह़ज़रत केहते हो ?

इ़लाजे वस्वसा इस के जवाब से पेहले एक उसूल ज़ेहन में रखिए कि तक़ाबुल (Comparison) जब भी होता है तो वोह मुआ़सिरीन से होता है ना कि अपने पेहले वालों से जैसे ह़नफ़ियों के अ़ज़ीम पेश्वा, अबू ह़नीफ़ा नोमान बिन साबित رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के लिए "इमामे आज़म" का लफ़्ज़ बत़ौरे लक़ब इस्तेमाल होता है, येह उन के हम ज़माना दीगर अइम्मा ए इस्लाम को देखते हुवे बोला जाता है, अगर इन का तक़ाबुल भी इन से पेहले वालों से किया जाता तो इन के लिए भी **इमामे आज़म** बोलने पर वोही

एतेराज़ होता जो इमामे अहले सुन्नत को आला ह़ज़रत बोलने पर है ह़ालांकि बड़े बड़े उ़लमा ए इस्लाम ने इस लक़ब (यानी इमामे आज़म) को ह़नफ़ियों के अ़ज़ीम पेश्वा अबू ह़नीफ़ा नोमान बिन साबित के लिए इस्तेमाल किया है और आज तक किसी अहले इ़ल्म ने इस पर एतेराज़ भी नहीं किया, इसी त़रह़ शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के लिए आला ह़ज़रत का लक़ब आप के हम ज़माना लोगों के मुक़ाबिल बोला जाता है, लेहाज़ा शैत़ान का इसे खींच तान कर ज़माना ए नबवी तक पहुंचा देना और फिर लोगों को वस्वसे डालना अपने अन्दर पाई जाने वाली गन्दगियों में से एक गन्दगी को ज़ाहिर करने के इ़लावा और कुछ भी नहीं । ज़ैल में अब कुछ वोह बातें बयान की जा रही हैं जो कि हर आ़शिक़े रसूल को इस बात पर उभारती हैं कि इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने मुआ़सिरीन और बाद वालों के लिए आला ह़ज़रत ही हैं चुनान्चे,

अहले सुन्नत के इमाम और फ़ितनों की रोक थाम

आला ह़ज़रत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मुसलमानाने बर्रे अ़ज़ीम के दौरे इब्तिला की अहम तरीन शख़्सिय्यत और साह़िबे बसीरत राहनुमा थे इन्हों ने जिस वक़्त आंख खोली उस वक़्त सारा हिन्द ताजे बरत़ानिया के ज़ेरे नगीं था, उस वक़्त मक़ामी सत़ह़ पर मुसलमानों को और भी कई त़रह़ की मुश्किलात का सामना था, इन मुश्किलात में सब से ज़ियादा तक्लीफ़ देह अम्र येह था कि मुसलमानों की ज़बूं ह़ाली को देख कर कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन और मुब्तदिईन के कई गिरौह मुसलमानों के बुन्यादी अ़क़ाइदो नज़रिय्यात से ले कर फ़ुरूआ़त व मामूलात तक में कई त़रह़ के शुकूको शुब्हात पैदा कर रहे थे और क़ुरआनो सुन्नत के मुख़ालिफ़ अ़क़ाइदो नज़रिय्यात को फ़रोग़ देने की कोशिश कर रहे थे, क़रने अव्वल से ले कर इस दौर तक जो नज़रिय्यात और मामूलात बुज़ुर्गाने दीन ने क़ुरआनो सुन्नत की रौशनी में दुरुस्त पा कर अपनाए और इन के मुह़िब्बीन व मुतवस्सिलीन इन पर हर दौर में अ़मल पैरा रहे इन को ना सिर्फ़ ख़िलाफ़े शरअ़ बल्कि कुफ़्रो शिर्क क़रार दे कर इज्तेमाई त़ौर पर पूरी उम्मत पर कुफ़्रो शिर्क के फ़तवे लगाने की कोशिशें की जा रही थीं, इसी त़रह़ मुल्ह़िदीन व मुर्तद्दीन का फ़ितना भी ज़ोरों पर था और वोह भी मुसलमानों के दीनो ईमान पर त़रह़ त़रह़ से ह़म्ले कर रहे थे ऐसे में आला ह़ज़रत तने तन्हा इन फ़ितनों का मुक़ाबला करने के लिए मैदाने अ़मल में उतरे और क़ुरआनो सुन्नत का झन्डा उठा कर हर फ़ितने का मर्दाना वार मुक़ाबला करते हुवे ह़क़ को वाज़ेह़ किया और बात़िल को बात़िल साबित कर के मुसलमानों के दीनो ईमान की ह़िफ़ाज़त के बारे में ह़त्तल मक़्दूर और कामयाब कोशिशें कर के ना सिर्फ़ बर्रे अ़ज़ीम बल्कि दुन्या भर के मुसलमानों के दिलों में घर कर लिया और अब रेहती दुन्या तक जब जब लोग इन फ़ितनों की किसी भी नई या पुरानी शक्ल को देखेंगे और इस के मुक़ाबिल आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के क़लमी जेहाद को देखेंगे और इस की बरकत से अपने दीनो ईमान को मेह़फ़ूज़ रखने में कामयाब रहेंगे तो अपनी नीम शबी में और आहे सह़र गही में आला ह़ज़रत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को भी शुक्रिया के साथ याद रखेंगे । बर्रे अ़ज़ीम की इल्मी रिवायत के एक निहायत दरख़शन्दा सितारे और अ़ज़ीम मोह़द्दिस व ह़ाफ़िज़े बुख़ारी मौलाना वसी अह़मद सूरती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के चन्द जुम्ले मुसलमानाने बर्रे अ़ज़ीम की आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से नियाज़ मन्दी व एह़सान मन्दी के जज़्बात की नुमाइन्दगी करते हैं शागिर्द व ख़लीफ़ा ए आला ह़ज़रत बयान फ़रमाते हैं कि एक बार (मोह़द्दिसे आज़मे हिन्द) सैयद मुह़म्मद मोह़द्दिसे किछौछवी ने ह़ज़रते मोह़द्दिसे सूरती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से दरयाफ़्त किया कि आप को शरफ़े बैअ़त मौलाना शाह फ़ज़्लुर्रह़मान गंज मुरादाबादी से ह़ासिल है मगर क्या वज्ह है आप को जो मह़ब्बत आला ह़ज़रत से है वोह किसी दूसरे से नहीं, इस पर मौलाना वसी अह़मद सूरती ने इरशाद फ़रमाया: सब से बड़ी दौलत वोह इ़ल्म नहीं है जो मैं ने मौलवी इस्ह़ाक़ मुह़श्शी ए बुख़ारी से पाई और वोह बैअ़त नहीं है जो गंज मुरादबाद में नसीब हुई बल्कि वोह ईमान है जो मदारे नजात है जिसे मैं ने सिर्फ़ आला ह़ज़रत से पाया ।[1]

देखा जाए तो आला ह़ज़रत को आला ह़ज़रत क़रार दिए जाने के लिए येही एक बात काफ़ी है क्यूंकि आला ह़ज़रत का माना है अपने वक़्त की सब से बड़ी शख़्सिय्यत और हम देखते हैं कि सुत़ूरे बाला में जिन फ़ितनों का ज़िक्र हुवा है उन की बैख़ कुनी और अ़वामो ख़वास मुस्लिमीन के सामने इह़क़ाक़े ह़क़ व इब्त़ाले बात़िल के फ़र्ज़ को आला ह़ज़रत से बढ़ कर किसी ने अदा नहीं किया, आला ह़ज़रत ना सिर्फ़ ख़ुद इस कारे ख़ैर में पूरी तन देही से मसरूफ़ थे बल्कि अपने ख़ुलफ़ा व तलामिज़ा को भी इस त़रफ़ मुतवज्जेह कर रखा था और बात़िल कुव्वतों

के मुक़ाबिल हक़ परस्तों की एक फ़ौज थी जो आला ह़ज़रत की इल्मी राहनुमाई में ह़क़ की ख़ातिर अपनी ज़बान और क़लम की सलाहिय्यतें ब रूए कार ला रही थी।

उ़लूमो फ़ुनून के जामेअ़ और यादगारे सलफ़

इस के साथ साथ हम देखते हैं कि आला ह़ज़रत की ज़ाते मुबारका और भी औसाफ़ो कमालात की जामेअ़ थी जिन की बिना पर आला ह़ज़रत को आला ह़ज़रत यानी **अपने ज़माने की सब से बड़ी शख़्सिय्यत** कहा गया और बजा त़ौर पर कहा गया मसलन अगर येह देखें कि आला ह़ज़रत जिन उ़लूमो फ़ुनून पर दस्तरस रखते थे इन के ज़माने में कोई दूसरा आदमी ऐसा नज़र नहीं आता जो इन्फ़िरादी त़ौर पर इतने ज़ियादा उ़लूमो फ़ुनून पर दस्तरस रखता हो, क़दीम फ़ल्सफ़ियाना उ़लूमो फ़ुनून की बुन्याद से ले कर उन उ़लूम की जदीद सूरतों की शाख़ों तक आला ह़ज़रत इस त़रह़ की वाक़िफ़िय्यत और तबह़ह़ुर के ह़ामिल थे कि उन्हें देख कर इन उ़लूमो फ़ुनून के बानियान व अकाबिरीन की याद ताज़ा हो जाती थी।

मन्क़ूलात यानी क़ुरआनो सुन्नत और इन से अख़्ज़ कर्दा उ़लूम के बारे में भी आला ह़ज़रत की वुस्अ़ते मुत़ालआ़, मुज्तहिदाना बसीरत और इह़ात़ा ए मालूमात की सलाहिय्यत देखने वालों को अंगुश्ता ब दन्दां कर देती थी और आज भी उन की क़ुतुबो फ़तावा का क़ारी इन औसाफ़ पर ह़ैरत ज़दा हो कर येह केहने पर मजबूर हो जाता है कि अगर इन को आला ह़ज़रत ना कहा जाता तो इन की अ़ज़मतो शान के एतेराफ़ में बड़ी कमी रेह जाती।

इमाम अह़मद रज़ा बत़ौरे आला ह़ज़रत अहले इल्म की नज़र में

सुत़ूरे बाला में इमामे अहले सुन्नत की जिन चन्द एक ख़ुसूसिय्यात का ज़िक्र किया गया है इन का और इन के इ़लावा दीगर ख़ुसूसिय्यात का एतेराफ़ हर दौर के अहले इल्म ने किया है और सैयदी आला ह़ज़रत की ख़िदमत में ख़िराजे तेह़सीन पेश किया है, याद रहे कि येह सिलसिला फ़क़त़ बर्रे अ़ज़ीम के उ़लमा तक मेह़दूद नहीं था बल्कि अ़रबो अ़जम में जहां जहां इस गुले सर सब्ज़ की ख़ुश्बू पहुंची वहां वहां से तारीफ़ो तौसीफ़ के नज़राने आप की बारगाह में पेश किए गए, जैल में पेहले अ़रब दुन्या के और फिर बर्रे अ़ज़ीम के फ़क़त़ चन्द अहले इल्म के तारीफ़ी कलिमात मुलाह़ज़ा फ़रमाइए जो इस बात का बय्यन सुबूत हैं कि आला ह़ज़रत सिर्फ़ एक आध फ़र्द की नज़र में आला ह़ज़रत नहीं थे बल्कि अ़रबो अ़जम के अहले इल्म उन की ज़ुल्फ़े त़रह़दारे इल्मो फ़ज़्ल के असीर थे।

1 शैख़ अ़ब्दुल्लाह नाबुलुसी मदनी फ़रमाते हैं : वोह नादिरे रोज़गार, उस वक़्त और उस ज़माने का नूर, मुअ़ज़्ज़ज़ मशाइख़ और फ़ुज़ला का सरदार और बिला तअम्मुल ज़माने का गोहरे यक्ता।[2]

2 दिमश्क़ के अ़ल्लामा शैख़ मुह़म्मद अल क़ासिमी तेह़रीर फ़रमाते हैं : आप फ़ज़ाइलो कमालात के ऐसे जामेअ़ हैं जिन के सामने बड़े से बड़ा हैच है, वोह फ़ज़्ल के बाप और बेटे हैं, उन की फ़ज़ीलत का यक़ीन दुश्मन और दोस्त दोनों को है इन की मिसाल लोगों में बहुत कम है।[3]

3 शैख़ मुह़म्मद बिन अ़त्तार दालजावी फ़रमाते हैं : बेशक आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इस ज़माने में उ़लमा ए मोह़क़्क़िक़ीन के बादशाह हैं और इन की सारी बातें सच्ची हैं गोया वोह (यानी इन का कलाम) हमारे नबी ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मोजिज़ात में से एक मोजिज़ा है जो अल्लाह करीम ने इन के हाथ पर ज़ाहिर फ़रमाया।[4]

4 डॉक्टर मुफ़्ती सैयद शुजाअ़त अ़ली क़ादरी फ़रमाते हैं : आला ह़ज़रत में इमाम अह़मद बिन ह़म्बल और शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी के जैसा ज़ोहदो तक़्वा था, अबू ह़नीफ़ा और अबू यूसुफ़ की सी ज़र्फ़ निगाही (गेहरी नज़र) थी, राज़ी व ग़ज़ाली का सा त़र्ज़े इस्तिदलाल था, वोह मुजद्दिदे अल्फ़े सानी और मन्सूर ह़ल्लाज का सा एलाए कलिमतुल ह़क़ का यारा रखता था, दुश्मनाने इस्लाम के लिए اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّار की तफ़्सीर और आशिक़ाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिए رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ की तस्वीर था।[5]

5 बर्रे अ़ज़ीम के मारूफ़ मोअर्रिख़ डॉक्टर इश्तियाक़ हुसैन क़ुरैशी बयान करते हैं : ह़ज़रते मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान के मुतअ़ल्लिक़ मैं सिर्फ़ इस क़दर केहने पर किफ़ायत करता हूं कि उ़लूमे दीनिय्या में उन्हें जो दस्तरस ह़ासिल थी वोह फ़ी ज़माना फ़क़ीदुल मिसाल थी दूसरे उ़लूम में भी यदे त़ूला ह़ासिल था।[6]

---

(1) ह़याते आला ह़ज़रत, स. 137 मफ़्हूमन (2) सरताजुल फ़ुक़हा, स. 7 (3) ऐज़न, स. 8 (4) फ़ाज़िले बरेल्वी उ़लमा ए ह़िजाज़ की नज़र में, स. 28 (5) फ़ाज़िले बरेल्वी और तर्के मुवालात, स. 53 (6) ख़याबाने रज़ा, स. 43 बित्तग़य्युरिन क़लील।

शाबाश

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सहाबा ए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की हौसला अफ़ज़ाई फ़रमाते और अच्छी बात पर शाबाश दिया करते थे । हज़रते मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मुझे जन्नत में दाख़िल कर देने वाला अमल बताइए ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : शाबाश ! शाबाश ! बेशक तुम ने अज़ीम (चीज़) के बारे में सवाल किया । और बिलाशुबा येह हर उस शख़्स के लिए आसान अमल है जिस से अल्लाह ख़ुश हो । फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ो और फ़र्ज़ ज़कात अदा कर दो ।[1]

इन्सान के किरदार की अच्छी ख़ूबियों में से दूसरों को उन के अच्छे कामों पर शाबाश देना, उन्हें सराहना, उन की हुसूले मक़्सद (यानी Achievement) पर पज़ीराई करना और उन की कामयाबी पर मुबारक बाद देना भी है । इस हवाले से हमारे मुआशरे में दो तरह के अफ़राद पाए जाते हैं, एक वोह जिन का रवय्या बड़ा शानदार होता है कि वोह शाबाश, तेहसीन और मुबारक बाद देने में कन्जूसी नहीं करते, जबकि दूसरी क़िस्म के लोग वोह होते हैं जिन को इन की औलाद, छोटे बहेन भाइयों, रिश्तेदारों, शागिर्दों, मा तहतों वग़ैरा में से जब कोई बताए कि मुझे आज येह कामयाबी मिली है, मैं ने कुछ नया सीखा है, मेरी येह अचीवमेन्ट है मसलन बच्चे ने अपना रिज़ल्ट कार्ड दिखाया कि मैं ने अच्छे मार्कस लिए हैं, ऑफ़िस या फ़ेक्ट्री में जूनियर ने बताया कि मैं ने पूरा महीना एक भी छुट्टी नहीं की, दोस्त ने बताया कि मैं ने ऑन लाइन इस्लामी अहकामात कोर्स शुरूअ कर दिया है, छोटे भाई ने बताया कि मैं ने कम्प्यूटर सॉफ़्टवेर के साथ साथ उस के हार्डवेर के बारे में भी सीखना शुरूअ कर दिया है वग़ैरा, येह सुन कर बताने वाले की दिलजूई करने या उस को शाबाश देने के बजाए उन का रीएक्शन नो लिफ़्ट वाला ग़ैर जज़्बाती सा होता है । येह देख कर बताने वाले को मज़ा नहीं आता कि मैं ने बड़ी महब्बत से अपनी कामयाबी की ख़बर इन से शेर की लेकिन इन्हों ने मुनासिब रिस्पोन्स ही नहीं दिया, चुनान्चे, वोह आइन्दा ऐसे शख़्स से अपनी ख़ुशी शेर करना ही छोड़ देता है ।

बेटा पढ़ाई में कमज़ोर क्यूं हुवा ?

नो लिफ़्ट का रवय्या नुक़्सान भी पहुंचा सकता है, एक शख़्स का बेटा जब उस के पास अपनी मार्कस शीट दिखाने के लिए लाता कि अब्बू देखिए मैं ने कितने अच्छे मार्कस लिए हैं ! तो वोह उसे देखना भी गवारा नहीं करता था बल्कि बेटे से केहता कि मैं मसरूफ़ हूं अपनी मां को दिखा दो । वक़्त गुज़रने के साथ साथ बच्चा पढ़ाई में कमज़ोर होता चला गया, जब तालीमी इदारे वालों ने घर में कम्प्लेन की तो सूरते हाल का तफ़्सीली जाइज़ा लेने के बाद येह बात सामने आई कि बच्चे के ज़ेहन में येह बात बैठ गई थी कि जब अब्बूजान को मेरी पढ़ाई की परवाह ही

नहीं तो मैं क्यूं मेह़नत करूं !

बहर ह़ाल सर्द मेहरी या बे नियाज़ी का रवय्या अपनाने वालों को सोचना चाहिए कि उन के इस रीएक्शन से आने वाला ख़ुश होगा ? अगर उस के दिल में ख़ुशी दाख़िल करने की निय्यत से ही पुरजोश रीएक्शन दे दिया जाए तो हमें सवाब भी मिलेगा, اِن شَاءَ اللہ!

दिल में ख़ुशी दाख़िल करने की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

اِنَّ اَحَبَّ الْاَعْمَالِ اِلَى اللهِ بَعْدَ الْفَرَائِضِ اِدْخَالُ السُّرُوْرِ عَلَى الْمُسْلِمِ

यानी अल्लाह पाक के नज़दीक फ़राइज़ की अदाएगी के बाद सब से पसन्दीदा अ़मल मुसलमान का दिल ख़ुश करना है।[2]

अ़ल्लामा मुनावी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस ह़दीस की शर्ह़ में जो फ़रमाया उस का ख़ुलासा येह है : फ़र्ज़े ऐन यानी फ़र्ज़ नमाज़, रोज़े, ज़कात और ह़ज वग़ैरा की अदाएगी के बाद अल्लाह पाक के नज़दीक सब से पसन्दीदा अ़मल येह है कि मुसलमान को ख़ुश किया जाए। ख़्वाह उसे कुछ दे कर या उस से ग़म व तक्लीफ़ को दूर कर के या मज़्लूम की मदद कर के या इस के इलावा हर वोह अ़मल जो ख़ुश करने का ज़रीआ़ हो।[3]

शाबाश क्यूं नहीं देते ?

बहर ह़ाल येह भी एक सवाल है कि लोग ऐसा रवय्या क्यूं अपनाते हैं ? इस की कई वुजूहात हो सकती हैं, जिन में से एक येह कि वोह सामने वाले की अचीवमेन्ट या कामयाबी को अपने लेवल पर ले जा कर देखते हैं तो उन्हें इस में कोई ख़ास बात दिखाई नहीं देती कि अच्छे मार्कस लेना, पूरा महीना छुट्टी ना करना, कोई नया काम सीख लेना कौन सी बड़ी बात है ? चुनान्चे, इसी मर्ह़ले पर वोह मार खा जाते हैं ह़ालांकि अगर वोह आने वाले के लेवल पर जा कर उस की ख़ुशी को मेह़सूस करने की कोशिश करें तो उन का रीएक्शन मुख़्तलिफ़ होगा जैसे "चन्द क़दम चलना" हमारे लिए कौन सी बड़ी बात है लेकिन येही काम बच्चा पेहली बार करे तो वोह कितना ख़ुश होता है और ऐसे में उस के वालिदैन का रीएक्शन भी ख़ुशी से भरपूर होता है क्यूंकि वोह बच्चे के लेवल पर जा कर उस की ख़ुशी को मेह़सूस करते हैं। अगर बे नियाज़ी का मुज़ाहरा करने वाले भी ऐसा ही करें तो उन का रीएक्शन भी अच्छा होगा, फिर वोह सामने वाले को शाबाश भी देंगे और उस की ख़ुशी में शरीक भी होंगे। اِن شَاءَ اللہ!

---

(1) مسند ابی داؤد طیالسی، ص76، حدیث:560 (2) معجم کبیر، 11/59، حدیث: 11079 (3) فیض القدیر، 1/216، تحت الحدیث:200 مفہوماً۔

(क़िस्त : 4)

इस्लाम और तालीम

9 मिन्हजे तदरीस

अन्दाज़े गुफ़्तगू और पढ़ाने का अन्दाज़ आम फ़ेहम और आसान होना चाहिए ताकि सामेईन मत़लब समझ सकें और अगर कुछ पूछना चाहें तो सवाल भी कर सकें ताकि उन को तशफ़्फ़ी बख़्श जवाबात मिलें उन के ज़ेहनों में मौजूद इश्कालात दूर हों, पेचीदगियां ह़ल हों, उन की ह़ौसला अफ़्ज़ाई हो ताकि बाद में सह़ीह़ त़रीक़े से सबक़ याद कर सकें और ज़रूरत के पेशे नज़र याद देहानी नोटिस भी बनाते रेहना चाहिए ताकि बाद में सबक़ समझने, याद करने और आपस में ह़ल्क़ों में दोहराई करने में आसानी हो और सबक़ को तकरार के ज़रीए मेह़फ़ूज़ करें।

त़रीक़ा ए तालीम : हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब कोई बात करते तो ठेहर ठेहर कर करते।[1] और अन्दाज़े गुफ़्तगू आम फ़ेहम होता जिस को हर शख़्स आसानी से समझ जाता।[2]

त़लबा की ह़ौसला अफ़्ज़ाई कीजिए : एक मरतबा हुज़ूर नबी ए करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने काशाना ए अक़्दस से बाहर तशरीफ़ लाए तो मस्जिद में दो ह़ल्क़े देखे एक ह़ल्क़े के लोग तिलावत व दुआ में मसरूफ़ थे और दूसरे ह़ल्क़े के लोग तालीमो तअ़ल्लुम में मसरूफ़ थे आप عَلَيْهِ السَّلَام ने दोनों की तेह़सीन फ़रमाई और फ़रमाया : दोनों भलाई पर हैं। येह लोग क़ुरआन पढ़ते हैं और अल्लाह से दुआ मांगते हैं, अगर चाहे तो इन को अ़त़ा फ़रमाए और अगर चाहे तो रोक ले और येह लोग सीखते हैं और सिखाते हैं फिर फ़रमाया : मैं मुअ़ल्लिम बना कर भेजा गया हूं फिर इ़ल्मी मजलिस में बैठ गए।[3]

तालीमी ह़ल्क़े : ह़ज़रते जाबिर बिन समुरह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं: हुज़ूर नबी ए करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिद में दाख़िल हुवे जहां सह़ाबा ए किराम के ह़ल्क़े थे आप ने फ़रमाया कि क्या बात है तुम लोग जुदा जुदा हो (यानी एक साथ बैठो)।[4]

10 क्लास का बेहतरीन नज़्मो ज़ब्त

क्लास का बेहतरीन और मुनज़्ज़म माह़ोल होना चाहिए जिस में सफ़ाई सुथराई, यूनीफ़ॉर्म, बैठने उठने, मुत़ालआ़ और गुफ़्तगू करने का ह़सीन और दिलकश मन्ज़र हो, तालीमी मुआ़मलात में सिर्फ़ नर्मी नहीं बल्कि सख़्ती भी की जाए और साथ साथ त़लबा की सेह़त का भी ख़याल रखा जाए ताकि वोह मेह़नत, कोशिश और दिलजमई से इ़ल्म ह़ासिल करें और अपने मक़्सद को पाने में कामयाब हो जाएं।

क्लास का बेहतरीन माह़ोल : ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि हमें एक क़ारी साह़िब क़ुरआने मजीद पढ़ा रहे थे, इस दौरान हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए तो क़ारी साह़िब आप को देख कर ख़ामोश हो गए। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने सलाम कर के पूछा कि तुम लोग क्या कर रहे हो ? हम ने कहा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क़ारी साह़िब क़ुरआने मजीद पढ़ रहे हैं और हम सुन रहे हैं। हमारा जवाब सुन कर हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : अल्लाह पाक का शुक्र है कि उस ने मेरी उम्मत में ऐसे लोगों को पैदा किया है जिन

के साथ मुझे बैठने का हुक्म दिया है फिर हमारे दरमियान बैठ गए और हाथ से इशारा किया कि इस तरह बैठो और हाज़िरीने मजलिस उस तरह हल्क़ा बना कर बैठ गए कि सब का चेहरा आप की तरफ़ हो गया।[5]

लिबास : अमीरुल मोमिनीन हज़रते सैयदना उमर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मुझे येह पसन्द है कि मैं क़ारी साहिब को सफ़ेद लिबास में देखूं।[6]

11 तालीमी औक़ात में वुस्अ़त व गुन्जाइश

लोगों को इल्म से आरास्ता करने के लिए उन की ज़रूरिय्यात और मसरूफ़िय्यात को मल्हूज़े ख़ातिर रखते हुवे तालीमी औक़ात मुख़्तलिफ़ हो सकते हैं सुब्ह, शाम और हफ़्तावार भी कर सकते हैं ताकि हर शख़्स अपनी मसरूफ़िय्यात और मामूलात को मद्दे नज़र रखते हुवे बेहतरीन वक़्त का तअ़य्युन कर सके और इल्म से मुस्तफ़ीद हो।

सुब्ह के वक़्त क्लास : हज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं जब हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़ज्र की नमाज़ अदा फ़रमा लेते तो सहाबा ए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان आप की तरफ़ माइल हो जाते कोई क़ुरआने मजीद के बारे में पूछता, कोई फ़राइज़ के बारे में मालूम करता और कोई ख़्वाब की ताबीर मालूम करता।[7] हज़रते सैयदना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब सुब्ह की नमाज़ से फ़ारिग़ होते तो सफ़ों में मौजूद एक एक आदमी को क़ुरआने पाक पढ़ाते।[8]

रात के वक़्त क्लास : हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : सत्तर के क़रीब अस्हाबे सुफ़्फ़ा रात के वक़्त तालीम हासिल करते थे, जब रात हो जाती तो येह लोग मदीना शरीफ़ में एक मुअ़ल्लिम के पास जाते और रात भर पढ़ते रेहते।[9]

हफ़्तावार क्लास : हज़रते सैयदना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हफ़्ते में सिर्फ़ एक दिन जुमेरात को लोगों को वाज़ो नसीहत किया करते, एक शख़्स ने कहा : ऐ अबू अ़ब्दुर्रहमान ! आप हमें रोज़ाना वाज़ो नसीहत किया कीजिए तो आप ने फ़रमाया : मैं इस लिए नहीं करता कि तुम मशक़्क़त में पड़ जाओगे।[10]

12 तालीम में मुख़्तलिफ़ दौरानिये की गुन्जाइश

इल्म के हुसूल के लिए तवील वक़्त और मुसल्सल जिद्दो जेहद की ज़रूरत होती है और हर शख़्स को ज़िन्दगी बसर करने में मुख़्तलिफ़ मसाइल और मुआ़मलात दरपेश होते हैं और मुख़्तलिफ़ क़िस्म की घरेलू ज़िम्मेदारियां भी वाबस्ता होती हैं तवील अ़र्से के लिए सब कुछ छोड़ छाड़ कर तालीम हासिल करने वाले बहुत ही कम अफ़राद होंगे और इशाअ़ते इल्म मेहदूद हो कर चन्द अफ़राद तक रेह जाएगी तो लोगों की ज़रूरिय्यात और मसरूफ़िय्यात को मल्हूज़े ख़ातिर रखते हुवे मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मुख़्तसर कोर्सिज़ तैयार किए जाते हैं और येह घन्टों, दिनों, हफ़्तों, महीनों और सालों पर मुहीत होते हैं ताकि हर शख़्स अपने ज़ौक़ो शौक़ और ज़रूरत के मुताबिक़ इल्म से वाबस्ता रहे और जो आला तालीम के मुतलाशी होते हैं उन के लिए हमेशा आला तालीम की राहें हमवार और रास्ते कुशादा होते हैं।

मुख़्तसर कोर्स : हुज़ूर नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते मालिक बिन हुवैरिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बीस दिन इल्म सिखाने के बाद फ़रमाया : तुम अपने ख़ानदान में वापस जाओ और उन को शरीअ़त के अह़काम की तालीम दो।[11] इसी तरह वफ़्दे अ़ब्दुल क़ैस को अदा ए ख़ुम्स, नमाज़, रोज़ा और ज़कात वग़ैरा की तालीमात दीं फिर फ़रमाया : इन बातों को याद कर लो और दूसरों को भी बताओ।[12]

तवील कोर्स : क़बीला ए बनू तमीम के सत्तर या अस्सी अफ़राद ने वफ़्द की सूरत में इस्लाम क़बूल किया और मदीना शरीफ़ में एक मुद्दत तक दीने इस्लाम सीखते और क़ुरआने मजीद की तालीम हासिल करते रहे।[13]

बक़िय्या अगले माह के शुमारे में.

(1)ابو داؤد، 4/342، حدیث: 4838 (2)ابو داؤد، 4/343، حدیث: 4839
(3)ابن ماجہ، 1/150، حدیث: 229 (4)ابو داؤد، 4/338، حدیث: 4823
(5)ابو داؤد، 3/452، حدیث: 3666 ماخوذاً (6)موطا امام مالک، 2/408، حدیث: 1735 (7)مجمع الزوائد، 1/393، رقم: 724 (8)سیر اعلام النبلاء، 4/50 (9)مسند احمد، 4/537، حدیث: 13855 ماخوذاً (10)بخاری، 1/42، حدیث: 70 ماخوذاً
(11)مسلم، ص265، حدیث: 1535 ملخصاً (12)بخاری، 1/49، حدیث: 87 ملخصاً
(13)الاستیعاب، 3/1164۔

(क़िस्त : 01)

क़ियामत के दिन नूर दिलाने वाली नेकियां

अल्लाह पाक क़ुरआने करीम में इरशाद फ़रमाता है :

﴿يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ (۱۲)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जिस दिन तुम मोमिन मर्दों और ईमान वाली औ़रतों को देखोगे कि उन का नूर उन के आगे और उन की दाईं जानिब दौड़ रहा है (फ़रमाया जाएगा कि) आज तुम्हारी सब से ज़ियादा ख़ुशी की बात वोह जन्नतें हैं जिन के नीचे नेहरें बेहती हैं तुम उन में हमेशा रहो, येही बड़ी कामयाबी है।[1]

इस आयत में अल्लाह पाक ने ईमान वालों के बारे में ख़बर दी कि क़ियामत के दिन तुम मोमिन मर्दों और ईमान वाली औ़रतों को पुल सिरात़ पर इस ह़ाल में देखोगे कि उन के ईमान और बन्दगी का नूर उन के आगे और उन की दाईं जानिब दौड़ रहा है और वोह नूर जन्नत की त़रफ़ उन की रेहनुमाई कर रहा है और (पुल सिरात़ से गुज़र जाने के बाद) उन से फ़रमाया जाएगा कि आज तुम्हारी सब से ज़ियादा ख़ुशी की बात वोह जन्नतें हैं जिन के नीचे नेहरें बेहती हैं, तुम उन में हमेशा रहोगे और येही बड़ी कामयाबी है।[2]

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! हमारे नूर वाले आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कई ऐसी नेकियां बयान फ़रमाई हैं कि जिन पर अ़मल करने वालों को क़ियामत के दिन नूर अ़त़ा होगा। चुनान्चे, आप भी 10 फ़रामीने मुस्त़फ़ा पढ़िए और उन पर अ़मल कीजिए :

रात के अन्धेरे में मसाजिद को जाना

1 जो लोग अन्धेरों में मसाजिद को जाने वाले हैं, उन्हें क़ियामत के दिन कामिल नूर की ख़ुश ख़बरी दो।[3]

2 जो रात के अन्धेरे में मसाजिद की त़रफ़ चले, अल्लाह पाक क़ियामत के दिन उसे नूर अ़त़ा फ़रमाएगा।[4]

3 रात के अन्धेरों में मसाजिद की त़रफ़ जाने वालों को क़ियामत के दिन नूर के मिम्बरों की बिशारत दे दो, उस दिन कई लोग घबराहट में मुब्तला होंगे मगर येह लोग घबराहट से मेह़फ़ूज़ होंगे।[5]

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! दिन का उजाला हो या फिर रात का अन्धेरा, दोनों ही ह़ालतों में नमाज़ों के लिए मसाजिद का रुख़ कीजिए, रात के अन्धेरे को मस्जिद में ना जाने का सबब बनाने के बजाए उसी ह़ालत में भी इ़शा और फ़ज्र के लिए मस्जिद में ह़ाज़िर हो कर क़ियामत के दिन कामिल नूर मिलने के ह़क़दार बनिए।

नमाज़ की अदाएगी

4 जिस ने नमाज़ की ह़िफ़ाज़त की उस के लिए क़ियामत में नूर, बुरहान (यानी दलील) और नजात होगी और जिस ने नमाज़ की ह़िफ़ाज़त ना की तो उस के लिए

ना नूर होगा और ना बुरहान और ना ही नजात और वोह (यानी बे नमाज़ी) क़ियामत के दिन (उन काफ़िरों यानी) क़ारून, फ़िरऔन, हामान और उबय्य बिन ख़लफ़ के साथ होगा।[6]

5 اَلصَّلٰوۃُ نُوْرٌ यानी नमाज़ रौशनी है।[7] यानी नमाज़ मुसलमान के दिल की, चेहरे की, क़ब्र की, क़ियामत की रौशनी है। पुल सिरात़ पर सज्दे का निशान बेटरी (टॉर्च) का काम देगा।[8]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हर मुसलमान आ़क़िल बालिग़ मर्द व औ़रत पर रोज़ाना पांच वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ है। जान बूझ कर एक नमाज़ तर्क करने वाला फ़ासिक़, सख़्त गुनाहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है। लेहाज़ा पांचों नमाज़ें उन के औक़ात में पाबन्दी से अदा कीजिए।

मज्मअ़ में अल्लाह पाक का ज़िक्र करना

6 क़ियामत के दिन अल्लाह पाक एक ऐसी क़ौम को ज़रूर उठाएगा जिस के चेहरे नूरानी होंगे, वोह मोतियों के मिम्बरों पर होंगे, लोग उन पर रश्क करेंगे, वोह ना तो अम्बिया होंगे और ना ही शुहदा। इतने में एक देहात वाला आदमी अपने घुटनों के बल खड़ा हुवा और यूं अ़र्ज़ की : يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ حَلِّهِمْ لَنَا نَعْرِفُهُمْ यानी या रसूलल्लाह ! हमें उन के औसाफ़ बयान फ़रमा दीजिए ताकि (दुन्या में) हम उन्हें पहेचान सकें। प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

هُمُ الْمُتَحَابُّوْنَ فِی اللّٰهِ مِنْ قَبَائِلَ شَتّٰى وَبِلَادٍ شَتّٰى يَجْتَمِعُوْنَ عَلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ يَذْكُرُوْنَهٗ

यानी वोह लोग मुख़्तलिफ़ क़बीलों और शेहरों वाले होंगे, अल्लाह के लिए आपस में मह़ब्बत करते होंगे, अल्लाह के ज़िक्र के लिए एक जगह जम्अ़ होंगे और उस का ज़िक्र करेंगे।[9]

बाज़ार में अल्लाह का ज़िक्र करना

7 बाज़ार में अल्लाह पाक का ज़िक्र करने वाले के लिए हर बाल के बदले में क़ियामत के दिन एक नूर होगा, उसी ह़ालत में वोह अपने रब से मुलाक़ात करेगा।[10]

100 मरतबा لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه पढ़ना

8 जो शख़्स सौ बार لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه पढ़े उसे अल्लाह पाक क़ियामत में इस त़रह़ उठाएगा कि उस का चेहरा चौदहवीं रात के चांद की त़रह़ चमक रहा होगा।[11]

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! अल्लाह पाक का ज़िक्र गुनाहों को मिटाने, शैत़ान को भगाने और दिलों से ग़म व हुज़्न दूर करने का ज़रीआ़, रब की रिज़ा और उस का क़ुर्ब पाने का वसीला है, दुन्या में, क़ब्र में और ह़श्र में ज़िक्र करने वाले के लिए नूर होगा। नीज़ ज़िक्र की मजलिसें फ़रिश्तों की मजलिसें हैं। लेहाज़ा हर ह़ाल में कसरत से ज़िक्रुल्लाह कीजिए।

तिलावते क़ुरआन

9 जिस ने किताबुल्लाह में से एक आयत तिलावत की, क़ियामत के दिन उस के लिए नूर होगा।[12]

सूरतुल कहफ़ की तिलावत

10 जो शख़्स जुमुआ़ के दिन सूरतुल कहफ़ पढ़े, उस के क़दम के नीचे से आस्मान तक ऐसा नूर बुलन्द होगा जो क़ियामत के दिन उस के लिए रौशन होगा। और दो जुमुओं के दरमियान जो गुनाह हुवे होंगे वोह बख़्श दिए जाएंगे।[13]

मोह़तरम क़ारेईन ! क़ुरआने मजीद का पढ़ना, पढ़ाना और सुनना सुनाना सब सवाब का काम है। इस का एक ह़र्फ़ पढ़ने पर 10 नेकियों का सवाब मिलता है और इस की तिलावत दिलों की सफ़ाई का ज़रीआ़ है, रब की बारगाह में क़ियामत के दिन क़ुरआने करीम अपनी तिलावत करने वालों की सिफ़ारिश करेगा। लेहाज़ा ख़ूब तिलावते क़ुरआन कीजिए।

बक़िय्या अगले माह के शुमारे में

(1)پ27، الحدید:12 (2)صراط الجنان، 9/727 (3)ابوداؤد، 1/232، حدیث:561 (4) صحیح ابن حبان، 3/246، حدیث:2044 (5) معجم کبیر، 8/142، حدیث:7633 (6)مسند احمد، 2/574، حدیث:6587 (7) مسلم، ص115، حدیث:223 (8)مراٰۃ المناجیح، 1/232 (9)مجمع الزوائد، 10/77، حدیث:16770 (10)شعب الایمان، 1/412، حدیث:567 (11)مجمع الزوائد، 10/96، حدیث:16830 (12)التفسیر من سنن سعید بن منصور، 1/52، حدیث:9- فضائل القرآن لابن الضریس، ص45، حدیث:56 (13)الترغیب والترھیب، 1/298، حدیث:2۔

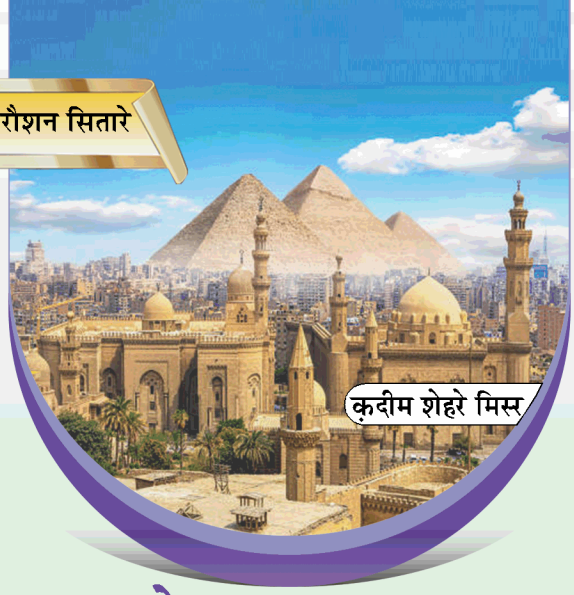

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा رضی اللہ عنہ

हिज्जतुल वदाअ़ के मौक़ेअ़ पर मिना में रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक बात लोगों तक पहुंचाने का हुक्म दिया तो वोह जगह जगह से गुज़रते हुवे येह एलान करते जाते : (ज़ुल ह़िज्जा के 10, 11, 12, 13) इन दिनों में रोज़ा मत रखो क्यूंकि येह खाने पीने और ज़िक्र के दिन हैं।[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते अबू हुज़ाफ़ा अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सुहमी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ क़दीमुल इस्लाम सह़ाबी हैं[2] आप ह़ब्शा की जानिब दूसरी हिजरत में अपने भाई ह़ज़रते क़ैस के हम सफ़र रहे[3] आप बद्री सह़ाबी हैं या नहीं इस बात में इख़्तेलाफ़ है[4] इस के इलावा उहुद, ख़न्दक़ और दीगर तमाम ग़ज़्वात में शिर्कत की[5] सिन 7 हिजरी में आप ने सफ़ीरे मुस्त़फ़ा बन कर ख़त़ मुबारक शाहे ईरान किसरा के दरबार में पहुंचाया,[6] आप का शुमार फ़त़्हे मिस्र के मुजाहिदीन में होता है[7] ह़ज़रते अम्र बिन आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप को इस्कन्दरिया (मिस्र) में अपना नाइब मुक़र्रर किया।[8]

बारगाहे रिसालत से इस्लाह़ एक मरतबा आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़ के लिए खड़े हुवे और बुलन्द आवाज़ से क़िराअत करने लगे, रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ इब्ने हुज़ाफ़ा ! तुम मुझे मत सुनाओ, अल्लाह को सुनाओ।[9]

मुल्के रूम के क़ैदी बने 19 हिजरी में रूमियों ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को गिरिफ़्तार कर लिया था[10] वाक़ेआ़ कुछ यूं है : एक मरतबा ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुल्के रूम की जानिब एक लश्कर भेजा,[11] दौराने जंग आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक रूमी कमान्डर को क़त्ल कर दिया फिर उसी के घोड़े पर सवार हो कर मैदाने जंग में थे कि आप का सामना एक और रूमी कमान्डर से हुवा तो उस ने अपने मक़्तूल साथी का घोड़ा पहेचान लिया येह देख कर वोह आप की त़रफ़ लपका वोह पहाड़ की त़रह़ सख़्त जान था उस ने आप को अपने आप से चिमटा लिया और खींचता हुवा अपने लश्कर में ले गया वहां आप को ज़न्जीरों से बान्ध दिया गया[12] और मार मार कर बेहोश कर दिया गया फिर क़ैदी बना कर कुस्तुन्तुनिया में बादशाह के पास इस पैग़ाम के साथ भेज दिया कि येह मुह़म्मदे अ़रबी के साथी हैं।[13] बादशाह ने आप को तकालीफ़ देने का हुक्म दिया आप ने उन तकालीफ़ पर सब्र किया इस के बाद आप को एक कमरे में बन्द कर दिया और सामने शराब और सुवर का गोश्त डाल दिया तीन दिन गुज़र गए लेकिन आप ने उस में से ना कुछ खाया ना पिया। सिपाहियों ने बादशाह को ख़बर दी तो बादशाह ने कहा : उसे वहां से निकाल लो वरना वोह वहीं मर जाएगा।[14]

दूसरी त़रफ़ ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप की रिहाई के लिए शाहे रूम के नाम एक ख़त़ लिखा, बादशाह ने ख़त़ पढ़ा (तो उसे आप की अहमिय्यत और क़द्रो मन्ज़िलत का अन्दाज़ा हुवा) फिर आप को दरबार में त़लब किया, आप फ़रमाते हैं : मैं वहां पहुंचा तो बादशाह के सर पर ताज था और चारों त़रफ़ सिपाही थे मैं उस के सामने खड़ा हो गया, उस ने पूछा : तुम कौन हो ? मैं ने कहा : क़ुरैश क़बीले का एक मुसलमान हूं, पूछा : तुम्हारा तअ़ल्लुक़ तुम्हारे नबी के घर से है ? मैं ने कहा : नहीं, बादशाह बोला : तुम हमारे दीन पर आ जाओ मैं अपने किसी कमान्डर की बेटी से तुम्हारी शादी करवा दूंगा, मैं ने कहा : ख़ुदा की क़सम ! मैं दीने इस्लाम को कभी भी नहीं छोड़ूंगा, उस ने कहा : हमारा दीन क़बूल कर लो मैं तुम्हें बहुत सारा माल, लौंडी गुलाम और हीरे दूंगा। फिर कुछ जवाहिरात मंगवाए और कहा : मेरे दीन में आ जाओ येह सब तुम्हें मिल जाएंगे, मैं ने कहा : नहीं, अगर तुम मुझे अपनी और अपनी क़ौम की जाईदाद बल्कि अपनी

मिल्किय्यत की हर हर चीज़ भी दोगे तो भी दीने इस्लाम नहीं छोड़ूंगा। उस ने कहा : मैं तुम्हें बुरी मौत मारूंगा, मैं ने कहा : तुम मेरे टुकड़े कर दो या मुझे आग में जला दो मैं अपना दीन नहीं छोड़ूंगा, येह सुन कर बादशाह गुस्से में आ गया[15] और केहने लगा : अब मैं तुम्हें क़त्ल कर दूंगा, मैं ने कहा : तुम येही कर सकते हो। फिर आप को तख़्ते पर चढ़ा दिया गया तो बादशाह ने (आहिस्ता से) तीर अन्दाज़ से कहा : तीर बदन के क़रीब फैंकना (तीर अन्दाज़ ने तीर जिस्म के क़रीब फैंके लेकिन आप बिल्कुल भी ख़ौफ़ज़दा ना हुवे) बादशाह ने फिर ईसाई बनने की पेशकश की मगर आप ने इन्कार कर दिया आख़िरे कार आप को तख़्ते से नीचे उतार लिया गया।[16]

एक रिवायत के मुताबिक़ बादशाह ने तांबे की गाए मंगवाई और उस में तेल भर कर जोश देने का हुक्म दिया, फिर (जब तेल खोलने लगा तो) बादशाह ने एक मुसलमान क़ैदी को बुलाया और उसे ईसाई बनने का कहा लेकिन उस मुसलमान ने भी इन्कार कर दिया येह देख कर बादशाह ने उसे गाए में डलवा दिया फ़ौरन ही (गोश्त पोस्त सब जल गया और) हड्डियां ज़ाहिर हो गईं। बादशाह ने आप से फिर कहा : ईसाई बन जाओ वरना मैं तुम्हें भी इस गाए में फैंक दूंगा। आप ने कहा : मैं ऐसा हरगिज़ नहीं करूंगा ? बादशाह ने आप को गाए में डालने का हुक्म दे दिया, सिपाहियों ने आप को पकड़ा (और गाए के क़रीब लाए) तो आप रोने लगे, सिपाही केहने लगे : बस ! घबरा गए और रो रहे हो! बादशाह ने कहा : उन्हें गाए से पीछे कर दो। येह देख कर आप ने कहा : मैं गाए में डाले जाने के ख़ौफ़ और डर से नहीं रोया, मैं तो इस वज्ह से रोया हूं कि मेरे पास येही एक जान है जो अभी राहे ख़ुदा में जिस्म से जुदा हो जाएगी मैं तो इस बात को पसन्द कर रहा था कि हर बाल के बदले एक एक जान होती फिर तुम मुझ पर ग़लबा पा लेते और हर जान के साथ येही सुलूक करते। आप की येह बात सुन कर बादशाह हैरत ज़दा हो गया और आप को आज़ाद करने की ख़्वाहिश उस के दिल में पैदा हो गई लेहाज़ा केहने लगा : तुम मेरा माथा चूम लो मैं तुम्हें आज़ाद कर दूंगा, आप ने मन्अ़ कर दिया, बादशाह ने कहा : नसरानी हो जाओ मैं अपनी बेटी की शादी तुम से कर दूंगा और अपनी आधी सल्तनत तुम्हें दे दूंगा, आप ने अब भी इन्कार किया, आख़िरे कार वोह केहने लगा : मेरी पेशानी चूम लो, मैं तुम्हारे साथ 80 मुसलमान क़ैदियों को आज़ाद कर दूंगा, आप ने कहा : हां ! येह कर सकता हूं, फिर आप ने उस के माथे को चूम लिया, बादशाह ने अपना वादा पूरा किया और आप के साथ 80 मुसलमान क़ैदियों को आज़ाद कर दिया।[17]

बाज़ रिवायतों में 100 का और बाज़ में 300 क़ैदियों का ज़िक्र है और साथ में आप को 30 हज़ार दीनार, 30 ख़ादिम और 30 ख़ादिमाएं तोहफ़े में भी दीं। आप आज़ाद होने वाले मुसलमानों को ले कर बारगाहे फ़ारूक़ी में हाज़िर हुवे और पूरी तफ़्सील केह सुनाई, हज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : हर मुसलमान पर हक़ है कि वोह हज़रते इब्ने हुज़ाफ़ा का माथा चूमे और मैं सब से पेहले इब्ने हुज़ाफ़ा का माथा चूमूंगा, येह केह कर फ़ारूक़े आज़म ने आप का माथा चूम लिया[18] येह देख कर दीगर मुसलमान भी खड़े हो कर आप के सर को चूमने लगे।[19] (बाद में) बाज़ लोग आप से मिज़ाह़ किया करते कि आप ने एक काफ़िर का माथा चूमा है, तो आप यूं फ़रमा देते कि उस एक चूमने के बदले अल्लाह ने 80 मुसलमानों को आज़ादी दिलवाई है।[20]

अल्लाह अल्लाह ! रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बत पाने वाले सह़ाबा ए किराम का ईमान कैसा मज़बूत हुवा करता था कि मालो ज़र, जाईदाद, सल्तनत और ह़सीन औ़रतों से निकाह़ की पेशकश भी होती तो ईमान के मुक़ाबले में किसी पेशकश को क़बूल ना करते और ईमान पर साबित क़दम रेहते। अल्लाह करीम ! सह़ाबा के ईमान के सदक़े हमारे ईमान को भी मज़बूत फ़रमाए, आमीन।

वफ़ात आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्तेक़ाल ख़िलाफ़ते उ़स्मानी में तक़रीबन 33 हिजरी मिस्र में हुवा, और यहीं आप की तदफ़ीन हुई।[21]

---

(1)مسند احمد، 3/593، حدیث:10669-معجم الصحابہ للبغوی، 3/541(2)اعلام للزرکلی، 4/78(3)الاستیعاب، 3/24(4)المنتظم، 5/32(5)النجوم الزاہرہ، 1/116(6)تاریخ ابن عساکر، 27/357(7)المنتظم، 5/32(8)فتوح البلدان، ص310(9)مسند بزار، 14/297، حدیث:7906 (10)الاستیعاب، 3/26(11)سیر اعلام النبلاء، 3/358(12)فتوح الشام، 2/11(13)تاریخ ابن عساکر، 27/358، 360(14)سیر اعلام النبلاء، 3/359ملخصاً(15)فتوح الشام، 2/12(16)سیر اعلام النبلاء، 3/358(17)معرفۃ الصحابہ لابی نعیم، 3/121ملخصاً(18)سیر اعلام النبلاء، 3/358، 359ملتقطاً(19)جامع المسانید، 5/158(20)معرفۃ الصحابہ لابی نعیم، 3/122(21)المنتظم، 5/32-اعلام للزرکلی، 4/78۔

शेहरे हिम्स

हज़रते नोमान رضی اللہ عنہما बिन बशीर अन्सारी

क़ारेईने किराम ! हज़रते नोमान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को भी कमसिनी में सहाबी ए रसूल होने का शरफ़ हासिल हुवा। आप हज़रते बशीर और हज़रते अमरह के बेटे हैं, सिने 2 हिजरी में मदीना ए मुनव्वरा में पैदा हुवे, हिजरत के बाद अन्सार सहाबा के यहां सब से पेहले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की विलादत हुई।[1]

विलादत के बाद करम नवाज़ी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वालिदा ए मोहतरमा आप को ले कर नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुईं, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को घुट्टी दी और येह बिशारत सुनाई : येह (बच्चा) क़ाबिले तारीफ़ ज़िन्दगी गुज़ारेगा, शहीद होगा और जन्नत में दाख़िल होगा।[2]

बचपन का वाक़ेआ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने बचपन का एक यादगार वाक़ेआ बयान करते हुवे फ़रमाते हैं कि एक मरतबा रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे दो ख़ोशे अ़ता किए और इशारा कर के फ़रमाया : इसे तुम खा लेना और इसे अपनी वालिदा को दे देना, मैं ने दोनों ख़ोशे खा लिए। बाद में रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से दरयाफ़्त फ़रमाया तो मैं ने अ़र्ज़ की : वोह मैं ने खा लिए, येह सुन कर रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे (शफ़्क़त से) कान से पकड़ लिया।[3]

रिवायाते अहादीस आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से 114 अहादीसे मुबारका मरवी हैं,[4] चुनान्चे, एक रिवायत में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : दुआ इबादत है, फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़ुरआने करीम की येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

﴿وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ(۶۰)﴾

(तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हारे रब ने फ़रमाया मुझ से दुआ करो मैं क़बूल करूंगा बेशक वोह जो मेरी इबादत से ऊंचे खिंचते (तकब्बुर करते) हैं अ़न क़रीब जहन्नम में जाएंगे ज़लील हो कर।)[5] सिरातुल जिनान में है कि इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : येह बात ज़रूरी तौर पर मालूम है कि क़ियामत के दिन इन्सान को अल्लाह पाक की इबादत से ही नफ़्अ़ पहुंचेगा इस लिए अल्लाह पाक की इबादत में मश्ग़ूल होना इन्तेहाई अहम काम है और चूंकि इबादात की अक़्साम में दुआ एक बेहतरीन क़िस्म है इस लिए यहां बन्दों को दुआ मांगने का हुक्म इरशाद फ़रमाया गया।[6]

विसाल हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ 8 साल 7 माह के थे।[7] आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हिम्स शाम में 64 हिजरी के आख़िर या 65 हिजरी के शुरूअ़ में शहादत पाई।[8]

अल्लाह पाक की उन पर रेहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) البدایۃ والنہایہ، 5/760 (2) البدایۃ والنہایہ، 5/760 (3) الاستیعاب، 4/61- معجم اوسط، 1/515، حدیث: 1899 (4) سیر اعلام النبلاء، 4/494 (5) ترمذی، 5/166، حدیث: 3258- پ24، المؤمن: 60 (6) صراط الجنان، 8/- تفسیر کبیر، المؤمن، تحت الآیۃ: 60، 9/527 (7) معرفۃ الصحابہ لابی نعیم، 4/320 (8) سیر اعلام النبلاء، 4/495- تاریخ ابن عساکر، 62/127-

अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए

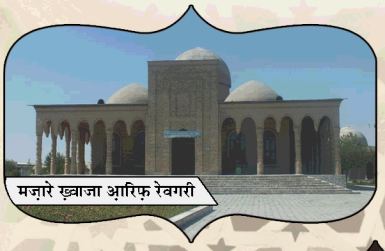
मज़ारे ख़्वाजा आरिफ़ रेवगरी

मज़ार मियां वडा हज़रते मुहम्मद इस्माईल सोहरवर्दी رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ

मज़ार मौलाना ग़ुलाम क़ादिर अशरफ़ी

शव्वालुल मुकर्रम इस्लामी साल का दसवां महीना है। इस में जिन सहाबा ए किराम, औलिया ए उज़्ज़ाम और उलमा ए इस्लाम का विसाल या उर्स है, उन में से मज़ीद 12 का तआरुफ़ मुलाहज़ा फ़रमाइए :

सहाबा ए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان

शुहदा ए ग़ज़वए हुनैन : येह ग़ज़्वा फ़त्हे मक्का के बाद 10 शव्वाल 8 हिजरी को मक्के से ताइफ़ की जानिब 30 किलो मीटर दूर हुनैन के मक़ाम पर बनू हवाज़िन और बनू सक़ीफ़ से हुवा, सहाबा ए किराम की तादाद 12 हज़ार और कुफ़्फ़ार 25 हज़ार थे, मुसलमानों को फ़त्ह हुई, इस में 4 सहाबा ए किराम शहीद हुवे।[1]

1 हज़रते यसार राई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ग़ुलाम थे, जो ग़ज़्वए बनू मुहारिब व सअ़लबा[2] में हाज़िर हुवे, अच्छी तरह नमाज़ पढ़ने की वज्ह से नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें आज़ाद फ़रमा कर अपनी ऊंटनियां चराने की ख़िदमत अ़ता फ़रमाई। शव्वाल 6 हिजरी में बनू उ़रैना व उ़कल के मुर्तद्दीन ने इन्हें शहीद कर दिया, इन्हें कुबा (नज़्द मदीना शरीफ़) ला कर दफ़्न किया गया। इसी वाक़िए़ की वज्ह से सर्या ए कुर्ज़ बिन जाबिर हुवा।[3]

औलिया ए किराम رحمہم اللہ السّلام

2 कुत़्बे वक़्त हज़रते सदीदुद्दीन हुज़ैफ़ा बिन क़तादा मरअ़शी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत मरअ़श (सूबा क़हरमान, तुर्की) में हुई और यहीं 24 शव्वाल 252 हिजरी को विसाल फ़रमाया, आप तब्अ़ ताबेई, आ़लिम व फ़क़ीह, इबादत गुज़ार, मुतवाज़ेअ़, नाबिग़ा ए अ़स्र, हलीमुत्तब्अ़ और वली ए कामिल थे, आप ने हज़रते सुफ़्यान सौरी और हज़रते इब्राहीम बिन अदहम رحمۃ اللہ علیہما की सोहबत पाई और आख़िरुज़्ज़िक्र से ख़िलाफ़त हासिल की। हज़रते यूसुफ़ बिन अस्बात़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ आप के रफ़ीक़ और हज़रते अबू हुबैरा बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ आप के ख़लीफ़ा हैं।[4]

3 ग़ौसे दौरां हज़रते अबू हुबैरा अमीनुद्दीन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत बसरा में 167 हिजरी में हुई और यहीं 120 साल की उ़म्र में 7 शव्वाल 287 हिजरी को वफ़ात पाई, आप हाफ़िज़े क़ुरआन, आ़लिमे दीन, सूफ़ी ए बा सफ़ा, कसीरुल मुजाहदात और त़वीलुल उ़म्र थे। कश्फ़ो करामात और ख़वारिक़े आ़दात में मश्हूर थे। तिलावते क़ुरआन और नफ़्ली रोज़े रखने में कसरत फ़रमाया करते थे।[5]

4 हज़रते ख़्वाजा आ़रिफ़ रेवगरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत 27 रजब 551 हिजरी को रेवगर नज़्द बुख़ारा (उ़ज़्बेकिस्तान) में हुई और यहीं यकुम शव्वाल 715 हिजरी को त़वील उ़म्र पा कर विसाल फ़रमाया, आप इ़ल्मो हिल्म, ज़ोहदो तक़्वा, इबादतो रियाज़त और रुश्दो हिदायत में मश्हूर थे।[6]

5 मियां वडा हज़रते मुहम्मद इस्माईल सोहरवर्दी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की पैदाइश 995 हिजरी को मौज़ए तरगरां पोठूहार के मोअ़ज़्ज़ज़ खोखर घराने में हुई और 5 शव्वाल 1085 हिजरी में विसाल फ़रमाया। मज़ार मुबारक दर्स

मियां वडा साहिब में मर्जए ख़लाइक़ है। आप मादर ज़ाद वली, हाफ़िज़े क़ुरआन, उलूमो फ़ुनून में कामिल, साहिबे करामात और कसीरुल फ़ैज़ थे।[7]

6 ख़्वाजा मुजाहिद हज़रते शाह ग़ुलाम जीलानी सिद्दीक़ी क़ादरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की विलादत 1163 हिजरी में हुई और 17 शव्वाल 1235 हिजरी को विसाल फ़रमाया, आप ज़ाहिरी ओ बातिनी हुस्न से माला माल, आलिमे दीन, पीरे कामिल और हज़रते शाह बदरुद्दीन औहुद के फ़रज़न्दे दिलबन्द थे। मज़ार शरीफ़ क़ल्आ अन्दरूने रहतक में है।[8]

7 अम्मे मोहतरम इमामुल मोहद्दिसीन, सूफ़ी ए कामिल हज़रते मियां साहिब मौलाना सैयद निसार अली शाह मश्हदी क़ादरी चिश्ती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की विलादत ग़ालिबन 1245 हिजरी को अलवर के सादात घराने में हुई और यहीं 6 शव्वाल 1328 हिजरी को विसाल फ़रमाया, आप दर्से निज़ामी के फ़ाज़िल, जैयद आलिमे दीन, सिलसिला ए क़ादरिय्या राजशाहिय्या और सिलसिला ए चिश्तिय्या साबिरिय्या के शैख़े तरीक़त थे, येह अलवर की हर दिल अज़ीज़ शख़्सिय्यत और मर्जए ख़ासो आम थे, मश्हूर सुन्नी आलिमे दीन, इमामुल मोहद्दिसीन मुफ़्ती सैयद दीदार अली शाह मोहद्दिसुल वरा इन के भतीजे और ख़लीफ़ा हैं।[9]

उलमा ए इस्लाम رحمهم الله السَّلام

8 अल उस्ताज़ हज़रते अल्लामा अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद हारिसी सब्ज़मूनी बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की विलादत 258 हिजरी और वफ़ात शव्वालुल मुकर्रम 340 हिजरी को हुई, आप कसीरुल हदीस, मोहद्दिसे अस्र, फ़क़ीहे ज़माना, शैख़ुल हनफ़िया मावराउन्नहर, उस्ताज़ुल उलमा और साहिबे तसनीफ़ थे, आप की तसनीफ़ कश्फ़ुल आसार फ़ी मनाक़िबे अबी हनीफ़ा मत्बूअ है।[10]

9 मुजाहिदे जंगे आज़ादी हज़रते मौलाना फ़ैज़ अहमद बदायूनी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की पैदाइश 1223 हिजरी को बदायूं यूपी हिन्द में हुई और ग़ालिबन शव्वाल 1274 हिजरी को दरजए शहादत पर फ़ाइज़ हुवे। आप अल्लामा फ़ज़्ले रसूल बदायूनी के भांजे व शागिर्द, उलूमे अक्लिया व नक़्लिया के माहिर, अपने नाना अल्लामा अब्दुल मजीद बदायूनी के मुरीद थे, जंगे आज़ादी 1857 ईसवी में भरपूर हिस्सा लिया और दरजए शहादत पर फ़ाइज़ हुवे।[11]

10 उस्ताज़ुल उलमा अल्लामा फ़ख़्रे मुहम्मद अछरवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जैयद आलिमे दीन व मुदर्रिसे दर्से निज़ामी, मुरीदे ख़्वाजा अब्दुर्रसूल क़सूरी इब्ने ख़्वाजा दाइमुल हुज़ूरी, साहिबे किताब सलातुल क़ुरआन ब मुताबअते हबीबुर्रहमान और साहिबे तक़्वा ओ परहेज़गारी थे। आप का विसाल 29 शव्वालुल मुकर्रम 1335 हिजरी को हुवा, तदफ़ीन अछरह क़ब्रस्तान में की गई।[12]

11 इमामुल माक़ूलात मौलाना मुहम्मद दीन बधवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मौज़अ बधू में तख़मीनन 1301 हिजरी को पैदा हुवे, आप अल्लामा फ़ज़्ले हक़ रामपुरी के शागिर्द, पीर मेहर अली शाह के मुरीद, उलूमे माक़ूलात के माहिर, कसीरुत्तलामिज़ा और पंजाबी, पश्तो, फ़ारसी वग़ैरा ज़बानों में कामिल दस्तरस रखने वाले थे। आप ने 11 शव्वाल 1383 हिजरी को जाए पैदाइश में विसाल फ़रमाया।[13]

12 मुबल्लिगे इस्लाम हज़रते मौलाना ग़ुलाम क़ादिर अशरफ़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की विलादत 14 मुहर्रमुल हराम 1323 हिजरी को रियासत फ़रीद कोट ज़िल्अ फ़ीरोज़पुर, मशरिक़ी पंजाब हिन्द में हुई और 2 शव्वाल 1399 हिजरी को वफ़ात पाई, ख़ानक़ाहे अशरफ़िय्या, बरलब जी टी रोड, लाला मूसा ज़िल्अ गुजरात में मदफ़ून हैं। आप फ़ाज़िले जामिआ नईमिय्या मुरादाबाद, ख़तीबुल अस्र, मुदर्रिसे दर्से निज़ामी, 17 कुतुबो रसाइल के मुसन्निफ़, फ़आल राहनुमा, उर्दू, हिन्दी, बाशा, गोरमखी, गियानी और संस्कृत ज़बानों के माहिर, हज़रते शाह सैयद अली हुसैन अशरफ़ी और शैख़ुल फ़ज़ीलत अल्लामा ज़ियाउद्दीन अहमद मदनी के ख़लीफ़ा थे।[14]

---

(1) مصور غزوات النبی، ص56 (2) اس کو غزوۂ غطفان یا غزوہ ذی امر بھی کہتے ہیں، یہ ربیع الاول 3ھ میں سرزمین نجد میں ہوا (3) معرفۃ الصحابۃ لابی نعیم، 4/422- مغازی الواقدی، المقدمۃ، ص33، 1/193، 2/568- سبل الہدیٰ والرشاد، 6/115 (4) حلیۃ الاولیاء، 8/295- تحفۃ الابرار، ص43 (5) تحفۃ الابرار، ص44- اقتباس انوار، ص258 (6) حضرات القدس مترجم، 1/136- تاریخ مشائخ نقشبند، ص130 (7) تحقیقات چشتی، ص 387 تا 397 (8) ملت راجشاہی، ص96، 97 (9) سیدی ابوالبرکات، ص117- روشن تحریریں، ص139 (10) سیر اعلام النبلاء، 12/87- کشف الآثار فی مناقب ابی حنیفہ، ص20 (11) مولانا فیض احمد بدایونی، ص17، 33، 34 (12) تذکرہ اکابر اہل سنت، ص 369، 370 (13) تذکرہ اکابرِ اہلِ سنت، ص466، 467 (14) سوانح اشرف المشائخ، ص7، 13، 25، 27۔

(क़िस्त : 03)

फ़िलिस्तीन में अम्बिया ए किराम के मज़ारात

सर ज़मीने फ़िलिस्तीन निहायत मुबारक और मोहतरम जगह है येह सर ज़मीन आस्मानी पैग़ामात और रिसालतों का मम्बअ़ और सर चश्मा रही अम्बिया ओ रुसुल की जाए मुस्तक़र रही है क़ुरआने मजीद में بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ[1] से इस मक़ाम को इ़ज़्ज़त बख़्शी यहीं से सरवरे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मेराज करवाई गई, येही सरज़मीन अर्ज़े मेह़शर है इस ज़मीन में जहां कई अम्बिया ए किराम मबऊ़स हुवे हैं कई ह़ज़रात ने यहां ज़िन्दगी गुज़ारी, इसी त़रह़ कई अम्बिया ए किराम के मज़ारात आज भी इस सर ज़मीन पर मौजूद हैं। ह़ज़रते कअ़बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मन्क़ूल है कि बैतुल मुक़द्दस में एक हज़ार अम्बिया ए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ुबूर हैं।[2]

यहां चन्द एक अम्बिया ए किराम का ज़िक्रे ख़ैर मुलाह़ज़ा कीजिए !

1 अबुल बशर ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام

ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की तदफ़ीन के मक़ाम से मुतअ़ल्लिक़ मोअर्रिख़ीन का इख़्तेलाफ़ है मश्हूर येह है कि आप عَلَيْهِ السَّلَام को हिन्द में उसी मक़ाम में उसी पहाड़ के पास दफ़्न किया गया था जिस पर आप عَلَيْهِ السَّلَام जन्नत से उतरे थे, बाज़ येह केहते हैं कि मक्के में जबले अबू क़ुबैस के पास दफ़्न हैं और बाज़ का येह भी केहना है जब ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने में तूफ़ान आया तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام और ह़ज़रते ह़व्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का जसदे मुबारक एक ताबूत में रख लिया फिर उन्हें बैतुल मुक़द्दस में दफ़्न कर दिया।[3]

2 ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام

127 साल की उ़म्र में ह़ज़रते सारह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का जबरून (फ़िलिस्तीन) में विसाल हो गया जिस पर ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام बहुत ग़मज़दा हुवे, इस के बाद आप عَلَيْهِ السَّلَام ने एक शख़्स से 400 मिस्क़ाल सोने में एक ग़ार ख़रीदा जिस में ह़ज़रते सारह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को दफ़्न किया।[4]

ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का विसाल और तदफ़ीन

आप عَلَيْهِ السَّلَام की वफ़ात से मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ रिवायात हैं जिन की ह़क़ीक़त अल्लाह पाक ही बेहतर जानता है, बाज़ ने येह कहा है कि आप عَلَيْهِ السَّلَام की वफ़ात अचानक हुई और उ़लमा ए अहले किताब के नज़दीक ह़ज़रते सैयदना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام बीमार हुवे और इसी आ़लम में दुन्या ए फ़ानी से रुख़्सत हुवे और ह़ज़रते इस्माईल व इस्ह़ाक़ علیہما السّلام ने आप को उसी ग़ार में दफ़्न किया जिस में ह़ज़रते सारह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا मदफ़ून थीं, एक क़ौल के मुत़ाबिक़ आप عَلَيْهِ السَّلَام की उ़म्र मुबारक 175 साल और एक क़ौल के मुत़ाबिक़ 200 बरस थी।[5]

3 ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام

ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام 180 साल तक इस जहां में रौनक़ अफ़रोज़ रहे। अर्ज़े मुक़द्दस में आप عَلَيْهِ السَّلَام की वफ़ात हुई और तदफ़ीन ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के मज़ारे पुर अनवार के क़रीब हुई।[6]

4 ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام

ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام अपने फ़रज़न्द ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के पास मिस्र में 24 साल ख़ुशह़ाली के साथ रहे, जब वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आप ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को वसिय्यत की, कि आप का जनाज़ा मुल्के शाम (मौजूदा फ़िलिस्तीन अल ख़लील शेहर) में ले जा कर अर्ज़े मुक़द्दस में आप के वालिद ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ब्र शरीफ़ के पास दफ़्न किया जाए। इस वसिय्यत की तामील की गई और वफ़ात के

बाद साज की लकड़ी के ताबूत में आप عَلَيْهِ السَّلَام का जसदे अत़हर शाम में लाया गया उसी वक़्त आप عَلَيْهِ السَّلَام के भाई ईस की वफ़ात हुई आप दोनों भाइयों की विलादत भी साथ हुई थी और दफ़्न भी साथ साथ किए गए और दोनों साह़िबों की उ़म्र 147 साल थी । ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام अपने वालिद और चचा को दफ़्न कर के मिस्र की त़रफ़ वापस रवाना हुवे ।[7]

5 ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام

ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के मक़ामे दफ़्न के बारे में अहले मिस्र के अन्दर सख़्त इख़्तेलाफ़ वाक़ेअ़ हुवा, हर मह़ल्ले वाले ह़ुसूले बरकत के लिए अपने ही मह़ल्ले में दफ़्न करने पर मुसिर (यानी इसरार कर रहे) थे, आख़िर येह राए त़ै पाई कि आप عَلَيْهِ السَّلَام को दरियाए नील में दफ़्न किया जाए ताकि पानी आप عَلَيْهِ السَّلَام की क़ब्र से छूता हुवा गुज़रे और इस की बरकत से तमाम अहले मिस्र फ़ैज़याब हों, चुनान्चे आप عَلَيْهِ السَّلَام को संगे मरमर के सन्दूक़ में दरिया ए नील के अन्दर दफ़्न किया गया और आप عَلَيْهِ السَّلَام वहीं रहे यहां तक कि 400 बरस के बाद ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने आप का ताबूत शरीफ़ निकाला और आप को आप के आबा ए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام (यानी ह़ज़राते इब्राहीम, इस्ह़ाक़, याक़ूब علیھما السّلام) के पास मुल्के शाम में दफ़्न किया ।[8]

6 ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام

मुफ़्ती मुह़म्मद क़ासिम अ़त्तारी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सीरतुल अम्बिया में है : कहा गया है कि तियह में ही ह़ज़रते हारून और ह़ज़रते मूसा علیھما السّلام की वफ़ात हुई, ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की वफ़ात के चालीस बरस बाद ह़ज़रते यूशअ़ عَلَيْهِ السَّلَام को नबुव्वत अ़त़ा की गई और जब्बारीन पर जंग का हुक्म दिया गया आप बाक़ी मांदा बनी इसराईल को साथ ले कर गए और जब्बारीन पर जंग की ।[9]

फ़िलिस्त़ीन के शेहर अरेह़ा के क़रीब ग़ौर के मक़ाम पर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का मज़ारे मुबारक मौजूद है ।

7,8 ह़ज़रते दावूद व सुलैमान علیھما السّلام

ह़ज़रते दावूद और सुलैमान علیھما السّلام दोनों शेहर क़ुद्स (युरोशलम) की एक वादी में कनीसा ए जिस्मानिया में एक ही मज़ार में आराम फ़रमा हैं ।[10]

9 ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام

ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام का मज़ारे मुबारक शेहर अल ख़लील के क़रीब ह़लह़ूल नामी मक़ाम की बस्ती में (जामेउ़न्नबी मता मस्जिद में) वाक़ेअ़ है ।[11]

10,11 ह़ज़रते यह़्या व ज़करिय्या علیھما السّلام

ह़ज़रते मरयम رحمۃ اللہ علیہا के मज़ार के क़रीब जबल तूरे ज़ीता (जबले ज़ैतून) के दाख़ली जानिब पहाड़ के दामन में उन के मज़ारे मुबारक वाक़ेअ़ हैं ।[12]

(मस्जिदे अक़्सा के साथ ही जबले ज़ैतून से मुन्सलिक वादी क़ैदरूने ज़करिय्या सिलवान नामी मक़ाम पर ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام का मज़ारे मुबारक मौजूद है ।)

12 ह़ज़रते यूशअ़ बिन नून عَلَيْهِ السَّلَام

ह़ज़रते यूशअ़ बिन नून عَلَيْهِ السَّلَام की वफ़ात के बाद आप को नाबुलुस के शेहर "किफ़्ले ह़ारिस" में दफ़्न किया गया ।[13]

इन के इलावा और भी कई अम्बिया ए किराम और नुफ़ूसे क़ुदसिय्या के मज़ाराते मुबारका फ़िलिस्त़ीन में वाक़ेअ़ हैं ।

अल्लाह करीम इन अ़ज़ीम हस्तियों के सदक़े अहले फ़िलिस्त़ीन की मदद फ़रमाए ।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) پ 15، بنی اسرآءیل: 1 (2) الانس الجلیل بتاریخ القدس و الخلیل، 2/138 (3) قصص الانبیاء لابن کثیر، ص 73 (4) قصص الانبیاء لابن کثیر، ص 236 تا 237 (5) سیرت الانبیاء ص 334 بحوالہ قصص الانبیاء لابن کثیر، ص 237 (6) تفسیر قرطبی، البقرہ، تحت الآیۃ: 132، 1/104 (7) خازن، یوسف، تحت الآیۃ: 100، 3/46، 47 (8) تفسیر مدارک، یوسف، تحت الآیۃ: 101، ص 546- تفسیر خازن، یوسف، تحت الآیۃ: 101، 3/47 (9) سیرت الانبیاء، ص 649 (10) الانس الجلیل بتاریخ القدس و الخلیل، 1/218 (11) الانس الجلیل بتاریخ القدس و الخلیل، 1/267 (12) الانس الجلیل بتاریخ القدس و الخلیل، 2/119 (13) الانس الجلیل بتاریخ القدس و الخلیل، 1/202-

(दूसरी और आख़री क़िस्त)

दूध Milk

दूध इन्सान की एक बेहतरीन ख़ूराक है । येह ऐसी मुकम्मल ग़िज़ा है जो खाने और पानी दोनों की त़रफ़ से काफ़ी है, जब ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام को अल्लाह के हुक्म से एक मछली ने निगल कर एक अ़र्से अपने पेट में रख कर उसी के हुक्म से साह़िल पर डाला तो अल्लाह पाक ने एक पहाड़ी बकरी के दूध ही को आप عَلَيْهِ السَّلَام की ग़िज़ा और सेह़त व तवानाई का ज़रीआ़ बनाया ।[1] अल्लाह पाक के आख़री नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी इसे अपनी मुबारक ग़िज़ाओं में शामिल फ़रमाया जिस के बारे में कुछ रिवायात पिछली क़िस्त में ज़िक्र हुईं और मज़ीद कुछ रिवायात यहां मुलाह़ज़ा फ़रमाइए :

8 ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं कि हिजरत के वक़्त हम सारी रात और सारा दिन बराबर चलते रहे यहां तक कि दोपहर हो गई और रास्ते में आमदो रफ़्त बन्द हो गई । हमें एक बड़ा पथ्थर नज़र आया, हम उस के नज़दीक उतर पड़े, मैं ने उस के साए में अपने हाथों से जगह साफ़ की, उस पर फ़र्श बिछा दी और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! आप लेट जाएं तो नबी ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस पर लेट गए, फिर मैं चल कर अपने इर्द गिर्द देखने लगा कि क्या कोई हमारी तलाश में आ रहा है, पस अचानक मैं ने देखा एक बकरियों को चराने वाला अपनी बकरियों को हांकता हुवा इस त़रफ़ आ रहा है, वोह भी उसी पथ्थर की त़रफ़ साए में आराम करने के लिए आ रहा है । मैं ने उस से पूछा : ऐ लड़के ! तुम किस के ग़ुलाम हो ? उस ने क़ुरैश के एक शख़्स का नाम लिया तो मैं ने उसे पहेचान लिया । मैं ने पूछा : क्या तुम्हारी बकरियों में दूध है ? वोह बोला कि हां ! मैं ने पूछा : क्या हमारे लिए तुम इन का दूध दोहोगे ? उस ने जवाब दिया कि हां ![2] पस उस ने एक बकरी पकड़ ली । मैं ने कहा : उस का थन गर्दो ग़ुबार से साफ़ कर लो, फिर मैं ने उस से कहा कि अपने हाथों को भी झाड़ो । उस ने प्याले में दूध दोहा । मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिए पेहले ही चमड़े का एक बरतन लाया था, मैं ने ठन्डा करने के लिए दूध में थोड़ा सा पानी मिला कर ख़िदमते अक़्दस में पेश किया । आप ने ख़ूब पिया । जिस से मेरी त़बीअ़त ख़ुश हुई ।[3]

अब वोह रिवायात मुलाह़ज़ा कीजिए जिन में हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दूध नोश फ़रमाने का तो ज़िक्र नहीं है अलबत्ता दूध का ज़िक्र मिलता है ।

दूध के मुतअ़ल्लिक़ 4 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

1 तीन चीज़ें वापस ना की जाएं : तक्या, तेल और दूध ।[4]

2 जन्नत में पानी, शेहद, दूध और शराब के दरिया हैं, फिर इस से आगे नेहरें निकलती हैं।[5]

3 जब तुम में से कोई खाना खाए तो कहे : इलाही ! हम को इस में बरकत दे और इस से भी अच्छा हमें खिला। और जब दूध पिए तो कहे : इलाही ! हमें इस में बरकत दे और इस से भी ज़ियादा दे कि दूध के सिवा ऐसी कोई चीज़ नहीं जो खाने और पानी से किफ़ायत करे।[6]

4 बेहतरीन सदक़ा बहुत दूध वाली ऊंटनी और बहुत दूध वाली बकरी का अ़तिय्या है जो सुब्ह़ को बरतन भर कर दूध दे और शाम को दूसरा भर कर।[7]

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने उस प्याले से हर क़िस्म के शरबत शेहद, नबीज़, पानी और दूध पिलाए हैं।[8]

अह़ादीस के निकात

- नबी ए करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दूध नोश फ़रमाना साबित है।
- अगर मेज़बान अपने मेहमानों को आराम के लिए तक्या, सर में मलने के लिए तेल और पीने के लिए दूध पेश करे तो मेहमान उसे रद ना करे बल्कि बख़ुशी क़बूल करे।[9]
- दूध में येह ख़ासिय्यत है कि येह भूक व प्यास दोनों को दूर करता है लेहाज़ा येह ग़िज़ा भी है और पानी भी।
- दूध में बच्चे की पेहली ग़िज़ा क़ुदरत की त़रफ़ से मुक़र्रर की गई है कि बच्चा दुन्या में आ कर पेहले कई माह बल्कि दो साल तक मां का दूध ही पीता है।[10]
- ह़ज़राते सह़ाबा हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस्तेमाली बरतनों को बरकत के लिए अपने पास रखते थे और लोगों को ज़ियारत कराते थे।[11]

दूध के फ़वाइद

दूध तिब्बी लेह़ाज़ से मुफ़ीद और तवानाई बख़्श ग़िज़ा है, दूध ग़िज़ाइयत व तवानाई से भरपूर ग़िज़ा है। पैदाइश के बाद उ़मूमन इन्सान को सब से पेहली ग़िज़ा जो दी जाती है वोह दूध है। येह इतनी मोअस्सर ग़िज़ा है कि ग़िज़ाई माहिरीन के नज़दीक बचपन में पिया जाने वाला दूध बुढ़ापे तक अपना असर रखता है, बचपन में दूध की कसरत सेह़तमन्द ज़िन्दगी की ज़मानत है जबकि बचपन में दूध की कमी बड़ी उ़म्र में सेह़त के मसाइल से दो चार कर सकती है। दूध में दस से ज़ियादा ग़िज़ाई अज्ज़ा जैसे मेदानिय्यात, ह़यातीन, प्रोटीन्ज़, विटामिन, केल्शियम, निशास्ता और चिकनाइयां वग़ैरा पाई जाती हैं, येह सब की सब त़रह़ त़रह़ की बीमारियों से ह़िफ़ाज़त करती हैं। आइए ! बाज़ फ़वाइद मुलाह़ज़ा कीजिए :

- ह़ड्डियों, जोड़ों, पठ्ठों को मज़बूत़ करने में दूध का इस्तेमाल बहुत मुफ़ीद है
- दूध केल्शियम की कमी को पूरा करने के लिए निहायत बेहतरीन है। इस में मौजूद केल्शियम ह़ड्डियों, जोड़ों और पठ्ठों को मज़बूत़ करता है
- जिस को नींद ना आती हो वोह उबली हुई प्याज़ गर्म दूध में डाल कर इस्तेमाल करे, ख़ूब नींद आएगी
- गर्म दूध में शकर और अस्ली घी डाल कर पीने से पेशाब की जलन और दर्द में फ़ाइदा होता है
- भेंस के गर्म दूध में दो बड़े चम्मच शेहद मिला कर रोज़ाना पीना जिस्मानी त़ाक़त बढ़ाने के लिए बेह़द मुफ़ीद है।[12]
- प्रोटीन का बेहतरीन ज़रीआ़ है
- जिल्द को निखारता है
- क़ब्ज़ और तेज़ाबिय्यत का ख़ातिमा करता है
- ज़ेहनी दबाव में कमी लाता है
- केन्सर के ख़त़रात में कमी लाता है
- दिल की सेह़त को बेहतर करता है।[13]

---

(1) التبصرہ لابن جوزی، 1/328 ماخوذاً

(2) चरवाहे का अपने मालिक की इजाज़त के बग़ैर दूध पेश करने का मत़लब येही निकलता है कि मालिक की त़रफ़ से इजाज़त थी कि राह में कोई मुसाफ़िर मिल जाए तो उसे दूध पिला दिया करो।
(फ़त्ह़ुल बारी, 6/80 तह़तुल ह़दीस : 2439)

(3) دیکھئے: بخاری، 2/516، حدیث: 3652 (4) ترمذی، 4/362، حدیث: 2799
(5) ترمذی، 4/257، حدیث: 2580 (6) ابو داؤد، 3/475، حدیث: 3730
(7) مسلم، ص857، حدیث: 5237 (8) بخاری، 2/184، حدیث: 2629 (9) مراٰۃ المناجیح، 4/359 (10) مراٰۃ المناجیح، 6/79، 80 (11) مراٰۃ المناجیح، 6/81
(12) گھریلو علاج، ص28، 71، 95 (13) ہیلتھ وائز ویب سائٹ۔

नए लिखारी
(New Writers)

हज़रते इल्यास عَلَیْہِ السَّلَام की क़ुरआनी सिफ़ात

मुहम्मद तौसीफ़ अत्तारी
(दरजए राबेअ़ा जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने सदरुश्शरीअ़ा बनारस)

अल्लाह पाक ने इन्सानों की हिदायत के लिए कसीर अम्बिया ए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को इस दुन्या में मबऊ़स फ़रमाया, जो पूरी ज़िन्दगी लोगों को दीने ह़क़ की दावत देते, नेकियों का हुक्म देते और बुराइयों से मन्अ़ करते रहे । उन्हें अल्लाह पाक ने बहुत से औसाफ़ो कमालात का ह़ामिल बनाया, बाज़ अम्बिया ए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के तज़किरे क़ुरआने पाक में इजमालो तफ़्सील के साथ बयान हुवे हैं, उन में से एक ह़ज़रते इल्यास عَلَیْہِ السَّلَام भी हैं । आप عَلَیْہِ السَّلَام ह़ज़रते हारून عَلَیْہِ السَّلَام की औलाद में से हैं, बनी इसराईल की त़रफ़ रसूल बन कर तशरीफ़ लाए और उन्हें तब्लीग़ व नसीह़त फ़रमाई । अल्लाह पाक ने ज़ालिम बादशाह के शर से बचाते हुवे उन्हें लोगों की नज़रों से ओझल फ़रमा दिया और आप عَلَیْہِ السَّلَام अभी तक ज़िन्दा हैं और क़ुर्बे क़ियामत वफ़ात पाएंगे । (सीरतुल अम्बिया, स. 722)

आइए ! आप عَلَیْہِ السَّلَام के जो फ़ज़ाइलो कमालात क़ुरआने मजीद में बयान हुवे हैं उन में से चन्द का तज़किरा करते हैं ।

कामिलुल ईमान बन्दे :

आप عَلَیْہِ السَّلَام इन्तेहाई आला दरजे के कामिलुल ईमान बन्दों में से हैं, अल्लाह पाक क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है : ﴿اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِیْنَ(۱۳۲)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह हमारे आला दर्जे के कामिलुल ईमान बन्दों में है । (پ23، الصّٰفّٰت:132)

अल्लाह पाक के रसूल :

आप अल्लाह के रसूल हैं, आप के सर पर नबुव्वत व रिसालत का ताज रखा गया है, चुनान्चे इरशादे रब्बानी है : ﴿وَاِنَّ اِلْیَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِیْنَ(۱۲۳)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक इल्यास पैग़म्बरों से है । (پ23، الصّٰفّٰت:123)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त का सलाम :

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने आप عَلَیْہِ السَّلَام पर ख़ुसूसी सलाम भेजा, क़ुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद में इरशादे रब्बे करीम है : ﴿سَلٰمٌ عَلٰۤى اِلْ یَاسِیْنَ(۱۳۰)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : सलाम हो इल्यास पर । (پ23، الصّٰفّٰت:130) तफ़्सीर में इस आयत का एक माना येह है कि अल्लाह पाक की त़रफ़ से ह़ज़रते इल्यास عَلَیْہِ السَّلَام पर सलाम हो और दूसरा माना येह है कि क़ियामत तक बन्दे उन के ह़क़ में दुआ़ करते और उन की तारीफ़ बयान करते रहेंगे ।

(روح البیان، الصّٰفّٰت، تحت الآیۃ: 130، 7/482)

ज़िक्रे जमील क़ियामत तक बाक़ी :

अल्लाह पाक ने आप عَلَيْهِ السَّلَام के ज़िक्र को क़ियामत तक के लिए बाक़ी रखा, जैसा कि इरशादे ख़ुदावन्दी है : ﴿وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने पिछलों में उस की सना बाक़ी रखी।

(پ23، الصّٰفّٰت:129)

मोहतरम क़ारेईन : आप ने हज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام का कामिलुल ईमान बन्दा होना, अज़ीम रसूल, अल्लाह पाक का सलाम और क़ियामत तक आप का चर्चा होने का ज़िक्र मुलाहज़ा कर लिया होगा।

अल्लाह पाक आप عَلَيْهِ السَّلَام के सदक़े हमें नेक बनाए और हमारी मग़फ़िरत फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

क़त्ले नाहक़ की मज़म्मत अहादीस की रौशनी में

मुहम्मद बिलाल क़ादरी
(दरजए सादेसा जामेअतुल मदीना फ़ैज़ाने अत्तार, नागपुर)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हम मुसलमान हैं और मुसलमान वोही अमल करता है कि जिस का शरीअत में हुक्म हुवा और उन चीज़ों से बचता है जिन से शरीअत ने मन्अ फ़रमाया, जिन चीज़ों से शरीअत ने मन्अ किया है उन में से एक क़त्ले नाहक़ है जिस की नबी ए करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मज़म्मत फ़रमाई है। आइए ! क़त्ले नाहक़ के तअल्लुक़ से 6 अहादीसे मुबारका पढ़ते हैं कि अहादीसे पाक में क्या क्या मज़म्मतें बयान की गई हैं चुनान्चे

1 सात मोहलिक बातें :

रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सात मोहलिक बातों से बचो, सहाबा ए किराम ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह कौन सी हैं ? इरशाद फ़रमाया : 1 अल्लाह के साथ शरीक बनाना 2 जादू 3 नाहक़ किसी को क़त्ल करना 4 सूद खाना 5 यतीम का माल खाना 6 लड़ाई के रोज़ मैदाने जंग से पीठ फेर कर भाग जाना 7 और पाक दामन बे ख़बर ईमान वाली ख़वातीन पर ज़िना की तोहमत लगाना।

(بخاری، 2/242، حدیث:2766)

2 क़ियामत में लोगों के दरमियान पेहला फ़ैसला :

रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क़ियामत के रोज़ सब से पेहले लोगों के दरमियान ख़ूनों (क़त्ले नाहक़) के मुतअल्लिक़ फ़ैसला किया जाएगा।

(ابن ماجہ، 3/259، حدیث:2615)

3 नाहक़ ख़ून का नुक़्सान :

हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुसलमान नेक आमाल में रग़बत रखता है मगर जब नाहक़ ख़ून कर लेता है तो येह रग़बत ख़त्म हो जाती है।

(ابو داؤد، 4/139، حدیث:4270)

4 दुन्या का मिट जाना :

रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सारी दुन्या का मिट जाना अल्लाह पाक के नज़दीक किसी मोमिन के नाहक़ क़त्ल कर दिए जाने से ज़ियादा आसान व हल्का है। (ابن ماجہ، 3/261، حدیث:2619)

5 कबीरा गुनाह :

रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : कबीरा गुनाह येह हैं : 1 अल्लाह पाक के साथ शरीक करना 2 मां-बाप की नाफ़रमानी करना 3 किसी को नाहक़ क़त्ल करना 4 और झूटी गवाही देना।

(مسلم، ص60، حدیث:260)

6 बख़्शिश से मेहरूम शख़्स :

नबी ए करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुमकिन है अल्लाह पाक सारे गुनाह बख़्श दे सिवाए उस शख़्स के जो मुशरिक मरे या जो कोई मुसलमान को जान बूझ कर (ज़ुल्मन) क़त्ल करे।

(ابو داؤد، 4/139، حدیث:4270)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अभी आप ने क़त्ले नाहक़ के बारे में पढ़ा कि इस के बारे में क्या क्या मज़म्मतें

आई हैं। अफ़्सोस कि आज कल क़त्ल करना बड़ा मामूली काम हो गया है छोटी छोटी बातों पर जान से मार देना, गुन्डा गर्दी, देहशत गर्दी, डकेती, ख़ानदानी लड़ाई, तअ़स्सुब वाली लड़ाइयां आ़म हैं।

अल्लाह पाक हमें शैत़ान को ख़ुश करने वाले कामों से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और नेकियों की त़रफ़ गामज़न फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

हाकिम के हुक़ूक़

आरिफ़ रज़ा अ़त्तारी
(दरजए ख़ामेसा जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने कन्ज़ुल ईमान, मुम्बई)

मुआ़शरों के दुरुस्त ना होने का एक सबब येह भी है कि मेह़कूम, ह़ाकिम के हुक़ूक़ की ह़क़ीक़ी मानों में रिआ़यत नहीं करते। आज मैं क़ुरआनो ह़दीस की रौशनी में ह़ाकिम के हुक़ूक़ बयान करना चाहूंगा ताकि मेह़कूम इस से नसीह़त पकड़े।

अल्लाह पाक क़ुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद में इरशाद फ़रमाता है :

﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِیْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِیْعُوا الرَّسُوْلَ وَ اُولِی الْاَمْرِ مِنْكُمْۚ فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِیْ شَیْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ وَ الرَّسُوْلِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِؕ ذٰلِكَ خَیْرٌ وَّ اَحْسَنُ تَاْوِیْلًا(۵۹)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का और उन का जो तुम में हुकूमत वाले हैं फिर अगर तुम में किसी बात का झगड़ा उठे तो उसे अल्लाह व रसूल के हुज़ूर रुजूअ़ करो अगर अल्लाह व क़ियामत पर ईमान रखते हो येह बेहतर है और इस का अन्जाम सब से अच्छा। (پ5، النسآء:59)

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त के बाद अमीर की इत़ाअ़त का हुक्म दिया गया है, जैसा कि नबी ए अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने अमीर की इत़ाअ़त की उस ने मेरी इत़ाअ़त की और जिस ने अमीर की नाफ़रमानी की उस ने मेरी नाफ़रमानी की। (بخاری، 2/297، حدیث:2957)

इस आयत और ह़दीस से साबित हुवा कि मुसलमान हुक्मरानों की इत़ाअ़त का भी हुक्म है जब तक वोह ह़क़ के मुवाफ़िक़ रहें और अगर ह़क़ के ख़िलाफ़ हुक्म करें तो उन की इत़ाअ़त नहीं की जाएगी। नीज़ इस आयत से मालूम हुवा कि अह़काम तीन क़िस्म के हैं एक वोह जो ज़ाहिर किताब यानी क़ुरआन से साबित हों। दूसरे वोह जो ज़ाहिर ह़दीस से साबित हों और तीसरे वोह जो क़ुरआनो ह़दीस की त़रफ़ क़ियास के ज़रीए रुजूअ़ करने से मालूम हों। आयत में "اُولِی الْاَمْرِ" की इत़ाअ़त का हुक्म है, इस में इमाम, अमीर, बादशाह, ह़ाकिम, क़ाज़ी, उ़लमा सब दाख़िल हैं। (सिरातुल जिनान, 2/258)

ह़ाकिम के हुक़ूक़ में से चन्द मज़ीद दर्जे ज़ैल हैं :

1. हुक्मरानों के रिआ़या पर हुक़ूक़ येह हैं कि वोह हुक्मरानों की भलाई और ख़ैरख़्वाही के जज़्बे से सह़ीह़ मश्वरे दें।
2. उन्हें नसीह़त करते रहें ताकि वोह राहे रास्त पर क़ाइम रहें।
3. अगर राहे ह़क़ से हटने लगें तो उन्हें राहे रास्त की त़रफ़ बुलाएं।
4. उन का अदबो एह़तेराम बजा लाएं।

अल ग़रज़ हर एक को ह़ाकिमे इस्लाम का जो शरअ़ के मुवाफ़िक़ हो वोह हुक्म मानना लाज़िम है। अल्लाह पाक हमें इन के अह़काम को जाइज़ त़रीक़ों से बजा लाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तेह़रीरी मुक़ाबले में मौसूल मज़ामीन के मोअल्लिफ़ीन

जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने कन्ज़ुल ईमान, मुम्बई : अह़मद रज़ा, मुह़म्मद रियाजुद्दीन, सैफ़ अह़मद, शेहबाज़ नूरी, मुह़म्मद मुज़म्मिल अ़त्तारी, मुह़म्मद क़ैस अ़त्तारी, मुह़म्मद मक़्सूद आ़लम क़ादरी, अबू शह़मा अशरफ़ी, मुह़म्मद अरशद अ़त्तारी, मुह़म्मद तन्वीर अ़त्तारी, शाहरुख़ अ़त्तारी, शाहिद अ़त्तारी, मुह़म्मद शाबान अ़त्तारी, अ़ब्दुल करीम, मुह़म्मद उ़मर नवाज़, अ़याज़ अशरफ़ी, गुलाम जीलानी, मुह़म्मद कैफ़ अ़त्तारी, मुह़म्मद मुनीरुल इस्लाम, मुह़म्मद नासिर नूरी, ज़ुन्नूरैन, आ़रिफ़ रज़ा अ़त्तारी, क़ैस अज़्हर मुरादाबादी। **जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने अ़त्तार नागपुर :** मुह़म्मद मेहताब रज़ा, मुह़म्मद बिलाल क़ादरी, मुह़म्मद शेहज़ाद रज़ा हज़ारवी, अबुल ह़ामिद इ़मरान रज़ा बनारसी। **जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने सदरुश्शरीआ़ बनारस :** मुह़म्मद तौसीफ़ अ़त्तारी, मुह़म्मद अनस अ़त्तारी, मुह़म्मद ख़ालिद रज़ा। **मुतफ़र्रिक़ जामेआ़त :** समीउ़ल्लाह (जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने इमाम अह़मद रज़ा ह़ैदराबाद), मुह़म्मद उवैस रज़ा (जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने अहले बैत बिलारी ज़िल्अ़ मुरादाबाद), अ़ब्दुल लतीफ़ (जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने औलिया, अह़मदाबाद), मेराज आ़लम (जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने मुफ़्ती ए आज़मे हिन्द शाहजहां पुर), अ़ब्दुल ह़सीब (जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर आगरा)।

उ़नवानात बराए जूलाई 2024 ईसवी

01 ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ुरआनी सिफ़ात
02 चुग़ली की मज़म्मत अह़ादीस की रौशनी में
03 ह़रमे मदीना के ह़ुक़ूक़

मज़मून जम्अ़ करवाने की आख़िरी तारीख़ : 20 अप्रेल 2024 ईसवी

मज़मून लिखने में मदद (Help) के लिए इस नम्बर पर राबता़ करें

+91 89782 62692
mazmoonnigarihind@gmail.com

आओ बच्चो ! हदीसे रसूल सुनते हैं

बेहतरीन लोग

हमारे प्यारे नबी हज़रते मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اَشْرَافُ اُمَّتِیْ حَمَلَةُ الْقُرْاٰن यानी कुरआन उठाने वाले मेरी उम्मत के बेहतरीन लोग हैं।

(معجم کبیر، 12/97، حدیث: 12662)

मशहूर मुफ़स्सिर हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : कुरआन उठाने वालों से मुराद कुरआन के हाफ़िज़ हैं या इस के मुहाफ़िज़ हैं यानी हुफ़्फ़ाज़ या उलमा ए किराम कि इन दोनों के बड़े दरजे हैं।

(دیکھئے: مراٰۃ المناجیح، 2/262)

कुरआने करीम हिफ़्ज़ करने की बहुत सारी बरकतें हैं, सब से बड़ी और अहम बात येह है कि कुरआने करीम हिफ़्ज़ करना अल्लाह व रसूल की रिज़ा का सबब है, हाफ़िज़े कुरआन के वालिदैन को क़ियामत के दिन ताज पहेनाया जाएगा जिस की रौशनी सूरज से भी ज़ियादा होगी, हाफ़िज़े कुरआन क़ियामत के दिन अपने घर वालों की सिफ़ारिश करेगा।

अच्छे बच्चो ! आप को भी चाहिए कि येह बरकतें पाने के लिए कुरआने करीम हिफ़्ज़ करें, जो बच्चे पेहले से ही कुरआने करीम हिफ़्ज़ कर रहे हैं उन को चाहिए कि अच्छे अन्दाज़ में, दिल लगा कर, ख़ूब मेहनत से हिफ़्ज़ करें।

इस्लामी महीना शव्वाल जारी व सारी है, येह इस्लामी साल का दसवां महीना है, इस महीने की 10 तारीख़ को इस्लाम के बहुत बड़े आलिमे दीन पैदा हुवे थे जिन्हें आला हज़रत कहा जाता है। येह बहुत बड़े मुफ़्ती व आलिम होने के साथ साथ हाफ़िज़े कुरआन भी थे और इन्हों ने सिर्फ़ एक माह में कुरआने करीम मुकम्मल हिफ़्ज़ कर लिया था।

अल्लाह पाक हमें कुरआने करीम की बरकतें अता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ق	ز	ح	ہ	ن	ی	ز	و	ر
ع	ف	ن	س	ی	ن	ا	م	ل
ر	ب	ی	خ	ف	ا	ع	ب	ع
ز	ل	ن	ز	ن	ت	ک	ر	ب
ف	چ	ن	ہ	د	ح	ا	ق	ط
ر	ل	س	ت	ب	ا	ز	ح	ا
ح	د	ی	ب	ن	د	ل	ح	ھ
م	ا	ہ	و	و	ا	ع	ق	س
ر	د	ب	ک	ح	م	ث	ع	ء

हुरूफ़ मिलाइए !

मदीना ए मुनव्वरा से 3 मील के फ़ासले पर एक पहाड़ है जिस का नाम "उहुद" है। येह वोह ही पहाड़ है जिस के बारे में प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اُحُدٌ هٰذَا جَبَلٌ يُحِبُّنَا وَنُحِبُّهٗ यानी उहुद वोह पहाड़ है जो हम से महब्बत करता है और हम उस से महब्बत करते हैं। (بخاری، 2/278، حدیث: 2889) इसी पहाड़ के पास जंगे उहुद हुई थी जिस में हज़रते अमीरे हम्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ समेत 70 सहाबा ए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने शहादत पाई।

प्यारे बच्चो ! इस्लाम और कुफ़्र के दरमियान लड़ी जाने वाली 5 जंगों के नाम आप ने ऊपर से नीचे, दाएं से बाएं हुरूफ़ मिला कर तलाश करने हैं जैसे टेबल में लफ़्ज़ "उहुद" तलाश कर के बताया गया है।

तलाश किए जाने वाले 5 नाम येह हैं :

1 बदर 2 اَحْزاب 3 ख़ैबर 4 हुनैन 5 तबूक।

दावा ए नबुव्वत की दलील

प्यारे बच्चो ! अल्लाह करीम ने हमें अपने प्यारे और आख़री नबी मुहम्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअ़तो फ़रमां बरदारी का हुक्म दिया है। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान ऐसी अ़ज़ीम है कि जानवर, परिन्दे यहां तक कि दरख़्त, पौदे भी आप की बात मानते थे।

एक बार एक देहाती हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की, कि मैं कैसे जानूं कि आप नबी हैं ?

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या ख़याल है, अगर मैं इस खजूर की शाख़ को बुलाऊं तो और वोह दरख़्त से उतर आए तो क्या तुम मेरे नबी होने की गवाही दोगे ?

उस आराबी ने अ़र्ज़ की : जी हां।

फिर नबी ए करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे बुलाया, वोह शाख़ ज़मीन पर उतरी और उछलती उछलती बल्कि बाज़ रिवायतों में है कि सज्दे करती हुई प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने हाज़िर हो गई, फिर हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे वापसी का हुक्म दिया तो वोह वापस अपनी जगह चली गई। उस आराबी ने हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह प्यारा और बा कमाल मोजिज़ा देखा तो अल्लाह की क़सम खा कर केहने लगा कि आइन्दा मैं किसी भी मुआ़मले में आप को कभी नहीं झुटलाऊंगा फिर वोह मुसलमान हो गया।

(دیکھئے: سبل الھدی و الرشاد، 9/499۔ خصائص الکبری، 2/60)

प्यारे बच्चो ! आ़म तौ़र पर येह बात हमारी अ़क़्लो समझ में नहीं आती कि कोई शख़्स दरख़्त से जुड़े फल या शाख़ को बुलाए तो वोह फल या शाख़ उस के पास चली आए मगर येह वाक़ेआ़ किसी आ़म शख़्स का नहीं बल्कि हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मोजिज़ा है और मोजिज़ा तो होता ही वोह है जो अ़क़्ल को हैरान कर दे। इस वाक़िए़ से हमें चन्द बातें सीखने को मिलीं :

अगर किसी मुआ़मले में किसी के बारे में ग़लत़ फ़ेहमी हो तो दूसरों से केहने सुनने के बजाए उसी शख़्स से राबत़ा करना चाहिए ताकि हमारी तसल्ली हो और दूसरों की ग़लत़ अफ़वाहों से बच सकें, जैसा कि कुफ़्फ़ार ने नबी ए करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में बड़ी ग़लत़ बातें कीं लेकिन जो भी आप के पास आया वोह हक़ जान गया अगर कोई हम से हमारी बात का सबूत या हमारे दावे की दलील मांगे तो नाराज़ हुवे बग़ैर उसे मुत़मइन करना चाहिए किसी के सामने दलील देने से पेहले येह तै़ करना मुफ़ीद होता है कि क्या फ़ुलां सबूत व दलील से तुम मुत़मइन हो जाओगे जैसे हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने देहाती से तै़ फ़रमाया सह़ीह़ सबूत मिलने के बाद बात मान लेना सआ़दत मन्दी है और मानने के बजाए ग़लत़ी पर अड़े रेहना बद बख़्ती है अल्लाह पाक ने बे जान चीज़ों को भी हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पहेचान की दौलत और हुक्मे रसूल की फ़रमां बरदारी की सआ़दत अ़त़ा फ़रमाई थी प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इख़्तियारात के इज़्हार पर बे ईमान भी ईमान ले आते थे।

येह बात हमेशा ज़ेहन में रखिए ! कि हमारी शरीअ़त में सज्दा अल्लाह पाक के इ़लावा किसी और को करना जाइज़ व ह़लाल नहीं, दरख़्त व पथ्थर और जानवर दीनी अह़काम के पाबन्द नहीं, तभी उन का रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सज्दा करना अह़ादीस से साबित है मगर इन्सानों को सख़्ती से मन्अ़ किया गया है कि वोह अल्लाह पाक के सिवा किसी और को सज्दा ना करें।

(دیکھئے: ابن ماجہ، 2/411، حدیث: 1852، 1853)

हमदर्दी

आपी.....आपी.....! जल्दी से खाना लगा दीजिए मुझे बहुत तेज़ भूक लग रही है। नन्हे मियां आपी आपी पुकारते किचन में आए तो आपी के इलावा अम्मी से भी सामना हुवा।

नन्हे मियां ! मैं कुछ दिनों से नोट कर रही हूं कि आप स्कूल से आते हैं तो यूनिफ़ोर्म तब्दील करने और फ्रेश होने से पेहले ही भूक भूक का शोर मचाते और खाने खाने की रट लगा देते हैं। ख़ैरिय्यत तो है ना ! अम्मी ने Good manners याद दिलाते हुवे कहा।

जबकि आज कल तो नन्हे मियां स्कूल लंच का भी पूरा पूरा सफ़ाया कर रहे हैं, वरना पेहले तो आधा लंच बचा दिया करते थे, कहीं उन के पेट में कीड़े तो नहीं हो गए ? आपी ने भी मज़ाक़ और संजीदगी के मिले जुले तास्सुरात का इज़हार किया।

अरे अल्लाह ना करे ! कैसी बातें कर रही हो तुम और क्यूं मेरे बेटे को मां बेटी मिल कर डांट पिलाए जा रहे हो, जाइए ! नन्हे मियां जल्दी से यूनिफ़ोर्म तब्दील कर के फ्रेश हो लें, तब तक खाना भी लग चुका होगा, दादी ने आते ही लाडले नन्हे मियां की हिमायत व तरफ़ दारी की तो नन्हे मियां वहां से खिसक लिए।

थोड़ी देर बाद सब दस्तरख़्वान पर बैठे कोफ़्ता कड़ी से लुत्फ़ अन्दोज़ हो रहे थे कि दादीजान बोलीं : नन्हे मियां ! खाने के बाद मेरे कमरे में आइएगा, आप से कुछ बातें करनी हैं।

जी दादीजान ! नन्हे मियां ने अदब से जवाब दिया।

नन्हे मियां खाने से फ़ारिग़ हो कर खाने के बाद का वुज़ू करते ही दादीजान के कमरे में पहुंच गए और दादी के केहने पर उन के क़रीब ही बैठ गए।

दादीजान : बेटा आप के किचन से जाने के बाद आप की अम्मी ने मुझे कुछ बातें बताई हैं, एक येह कि आप पेहले लंच बचा कर ले आते थे मगर अब पूरा ख़त्म कर लेते हैं हालांकि वोह आप की ज़रूरत से ज़ियादा ही होता है मगर इस के बा वुजूद आप घर आते ही शदीद भूक का इज़हार करते हैं, दूसरी येह कि आप के पास से पेन्सिल, रेज़र, शार्पनर वग़ैरा स्टेशनरी का सामान भी आए दिन स्कूल में ही ग़ाइब हो जाता है, तीसरी येह कि आप कुछ दिनों से उदास उदास भी रेहने लगे हैं। बेटा ! अगर आप को कोई परेशानी है या आप हम से कोई बात छुपा रहे हैं तो बताइए ! शायद हम आप की कुछ मदद कर सकें।

नन्हे मियां : दादीजान ! बात येह है कि मैं अपना लंच और स्टेशनरी अपने क्लास फ्रेन्ड हुज़ैफ़ा के साथ शेर करता हूं क्यूंकि वोह कुछ दिनों से लंच नहीं ला रहा था, सब बच्चे अपना अपना लंच करते तो हुज़ैफ़ा Head down किए रेहता, एक बार मैं ने मुसलसल लंच ना लाने की वज्ह पूछी तो केहने लगा : मेरे बाबा को दो महीने से कोई काम नहीं मिल रहा, हमारे मुआमलात काफ़ी Disturb हो चुके हैं इसी लिए अम्मीजान स्कूल के

लिए अलाहदा से लंच नहीं दे पा रहीं और अब्बूजान स्टेशनरी का सामान भी नहीं दिलवा पा रहे।

दादीजान : आप के उदास रेहने की वज्ह तो अब भी समझ नहीं आ सकी।

नन्हे मियां : दादीजान उदासी की वज्ह येह है कि हुज़ैफ़ा ने बताया है : मेरे बाबाजान पिछले दो माह से स्कूल फ़ीस Submit नहीं करवा सके तो शायद अब मेरा एडमीशन केन्सल कर दिया जाएगा।

दादीजान : नन्हे मियां ! किसी से हमदर्दी करना और उस की परेशानी दूर करना तो बहुत अच्छी बात है बल्कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है : जो किसी मोमिन की दुन्यावी परेशानियों में से कोई परेशानी दूर करेगा, अल्लाह पाक उस की क़ियामत की परेशानियों में से कोई परेशानी दूर फ़रमाएगा, जो किसी तंगदस्त पर आसानी करेगा, अल्लाह पाक उस पर दुन्या और आख़ेरत में आसानी फ़रमा देगा।

(مسلم، ص 1069، حدیث: 6578)

मगर नन्हे मियां आप बच्चे हैं, आप को चाहिए था कि ख़ुद से मदद करने के बजाए घर के बड़ों को बताते, ताकि बड़े ही मदद का कोई सहीह् त़रीक़ा इख़्तियार करते।

नन्हे मियां : सोरी दादीजान ! आइन्दा मैं ख़याल रखूंगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

दादीजान : शाबाश ! अब जाइए मैं आप के बाबाजान से इस बारे में बात कर के कोई ह़ल निकालूंगी।

नन्हे मियां : (मुस्कुराते हुवे) शुक्रिया दादीजान !

तीन दिन बाद अब्बू नन्हे मियां को बता रहे थे : बेटा ! हुज़ैफ़ा के बाबाजान अब मेरी कम्पनी में जॉब कर रहे हैं, अब उस का एडमीशन केन्सल नहीं होगा, इस लिए अब आप को उदास होने की कोई ज़रूरत नहीं, मगर आप हुज़ैफ़ा या किसी भी बच्चे को येह बात मत बताइएगा।

नन्हे मियां : जी बाबाजान ! मैं किसी को नहीं बताऊंगा।

बच्चों और बच्चियों के 6 नाम

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आदमी सब से पेहला तोह़फ़ा अपने बच्चे को नाम का देता है लेहाज़ा उसे चाहिए कि उस का नाम अच्छा रखे। (جمع الجوامع، 3/285، حدیث:8875) यहां बच्चों और बच्चियों के लिए 6 नाम, इन के माना और निस्बतें पेश की जा रही हैं।

बच्चों के 3 नाम

नाम	पुकारने के लिए	माना	निस्बत
मुह़म्मद	अ़ब्दुल करीम	बहुत करम फ़रमाने वाले का बन्दा	अल्लाह पाक के सिफ़ाती नाम की त़रफ़ लफ़्ज़े अ़ब्द की इज़ाफ़त के साथ
मुह़म्मद	क़ासिम रज़ा	बांटने वाला	"क़ासिम" सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सिफ़ाती नाम और "रज़ा" आला ह़ज़रत की निस्बत
मुह़म्मद	मुनीर रज़ा	रौशन करने वाला	"मुनीर" सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सिफ़ाती नाम और "रज़ा" आला ह़ज़रत की निस्बत

बच्चियों के 3 नाम

ह़सना	नेमत	सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सह़ाबिया का मुबारक नाम
ख़ालिदा	देर तक रेहने वाली	सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सह़ाबिया का मुबारक नाम
सुमय्या	अ़लामत	सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सह़ाबिया का मुबारक नाम

(जिन के यहां बेटे या बेटी की विलादत हो वोह चाहें तो इन निस्बत वाले 6 नामों में से कोई एक नाम रख लें।)

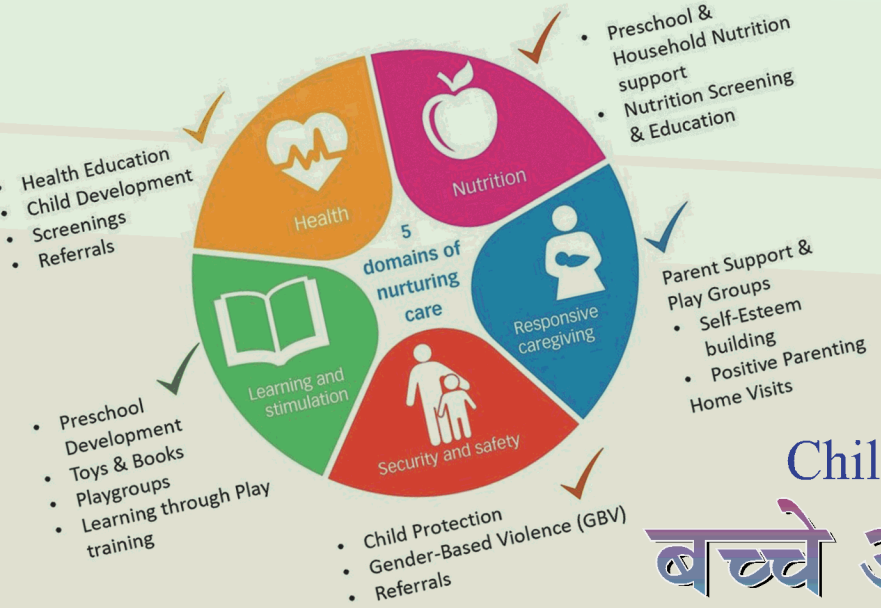

Children and Health

बच्चे और सेहत

बच्चे घर की रौनक़ होते हैं। अगर कोई बच्चा बीमार हो जाए तो वालिदैन बेचैन और परेशान हो जाते हैं। ज़ाहिर है वालिदैन और औलाद का आपसी तअ़ल्लुक़ ही कुछ ऐसा है। लेकिन यहां एक बात क़ाबिले ग़ौर है कि वालिदैन सेहत और हिफ़्ज़ाने सेहत के ह़वाले से कितनी Awareness रखते हैं ? और बच्चों की सेहत के ह़वाले से क्या क्या एह़तियाती तदाबीर करनी चाहिएं ? वालिदैन जहां बच्चों की तालीमो तरबियत के ह़वाले से कोशां रेहते हैं वहां उन की येह भी ज़िम्मेदारी है कि बच्चों की Health के ह़वाले से भी सन्जीदगी अपनाएं।

क़ारेईने किराम ! आइए हम बच्चों की सेहत व हिफ़्ज़ाने सेहत के ह़वाले से कुछ Tips जान लेते हैं।

मुतवाज़िन ग़िज़ाएं (Balanced Diet)

अपने बच्चों को मुतवाज़िन ग़िज़ा फ़राहम करें जिस में फल, सब्ज़ियां, अनाज और दूध शामिल हों। नीज़ मीठे मशरूबात और ज़ियादा नमकीन खाने पीने की चीज़ों से दूर रखें। तवानाई को बर क़रार रखने के लिए बा क़ाइदगी से बच्चों को खाने की तरग़ीब के साथ साथ खाना खाने पर Appreciate भी करें।

जिस्मानी सरगर्मी (Physical Activity)

बच्चे की उ़म्र के मुत़ाबिक़ बा क़ाइदा जिस्मानी सर गर्मी को फ़रोग़ दें। स्क्रीन टाइम (टीवी और कम्प्यूटर) को मेह़दूद करें और वीडियो गेम्ज़ तो खेलने ही ना दें अलबत्ता आउट डोर खेलने की ह़ौसला अफ़्ज़ाई करें। वालिदैन एक ख़ानदान की ह़ैसिय्यत से बच्चों के साथ ग़ैर निसाबी सर गर्मियों में शामिल हो कर उन को फ़िज़ीकल एक्टिविटी का आ़दी बनाने की भरपूर कोशिश करें।

मुनासिब नींद (Adequate Sleep)

इस बात को यक़ीनी बनाएं कि आप का बच्चा अपनी Age group के एतेबार से ठीक नींद करे। वक़्ते मुनासिब पर उसे सुला देने का मामूल बनाएं ताकि उस की नींद पूरी हो सके और कोशिश करें कि बच्चों के लिए आराम देह और पुर सुकून नींद का माह़ौल बनाएं।

हिफ़्ज़ाने सेहत (Hygiene)

अपने बच्चों को हिफ़्ज़ाने सेहत के अच्छे त़रीक़े ज़रूर सिखाएं और इन उसूलों पर अ़मल करने की सूरत में बच्चों की ह़ौसला अफ़्ज़ाई भी करें मसलन बच्चों को हाथ धोने, दांतों की सफ़ाई करने, नाख़ुन काटने, साफ़ कपड़े

पहेनने, ग़ुस्ल करने के ह़वाले से तरबियत दें और जब वोह बिना बोले उस पर अ़मल पैरा हों तो आप तारीफ़ कर के उन की हौसला अफ़ज़ाई ज़रूर कर दें ताकि उन का सफ़ाई व सुथराई का जज़्बा ठन्डा ना पड़ जाए।

जज़्बात की निगेहदाश्त (Emotional Well-Being)

अपने घर को सुख चैन, महब्बत और अपनाइयत का गेहवारा बनाएं। बच्चों के लिए एक Friendly environment बनाएं। जहां बच्चे अपने मन की बात आप से कर सके। अपने आईडियाज़, अपने ख़दशात, अपनी मुश्किलात पूरी Energy के साथ आप को बता सके येह उस बच्चे की मेन्टल हेल्थ के लिए बहुत ज़रूरी है आप अपने अन्दर सुनने का ज़र्फ़ और बच्चे को केहने का ह़क़ ज़रूर दें ताकि आप गाहे गाहे अपने बच्चे के बारे में जान सकें कि वोह क्या सोचता है और क्या क्या करने का इरादा रखता है नीज़ अपने बच्चे को आसाबी तौर पर मज़बूत करने के लिए उन से अपनी ज़िन्दगी के मुश्किल ह़ालात की स्टोरी Share करें जिस में आप मुश्किल से निकलने के त़रीक़े तलाश कर के मुश्किल से निकल गए थे। ताकि बच्चा मुहिम जू बन सके।

ह़िफ़ाज़त (Safety)

ह़ादिसात से बचने के लिए अपने घर को चाइल्ड प्रूफ़ बनाएं। उ़म्र के मुत़ाबिक़ कार सीट और सीट बेल्ट इस्तेमाल करें। अपने बच्चे को ह़िफ़ाज़ती उसूलों के बारे में तालीम दें, जैसा कि सड़क पार करने से पेहले दोनों त़रफ़ देखना, ज़ेब्रा क्रोसिंग से क्रोस करना वग़ैरा।

सेह़त का बा क़ाइदा मुआ़इना (Regular Health Check-ups)

बच्चों को चेकअप के लिए अत़फ़ाल के माहिर डॉक्टर (Pediatrician) के पास बा क़ाइदगी से ले जाने का शिडयूल बनाएं, सेह़त को ख़राब करने वाले ख़दशात को फ़ौरी तौर पर ह़ल करें, बीमारी का दौरानियां त़वील ना होने दें, बीमारी की तशख़ीस के बाद इलाज में ताख़ीर हरगिज़ ना करें।

नुक़्सान देह चीज़ों के सरे आ़म इस्तेमाल से गुरेज़ करें (Avoid using harmful items publically)

आप के बच्चे आप की ह़रकातो सकनात को देखते हैं और आप के अ़मल को अपनाने की कोशिश करते हैं चुनान्चे आप बच्चों के सामने स्मोकिंग वग़ैरा हरगिज़ ना करें बल्कि मश्वरा है कि स्मोकिंग से इजतेनाब ही करें, येह आप के लिए भी और आप की औलाद के लिए भी ज़ेहरे क़ातिल है।

तालीमी मोह़रिक (Educational initiative)

बच्चों की तालीमी सर गर्मियों के ह़वाले से नफ़्सियाती पेहलूओं का ख़याल ज़रूर रखें इस अन्दाज़ में एज्यूकेशन को जारी रखें कि बच्चा स्कूल के काम, होम वर्क और असाइमेन्ट को बोझ समझ कर ना करे बल्कि ख़ुशी ख़ुशी बच्चा सीखने की कोशिश करे।

समाजी मेल जोल (Social Interaction)

अपने बच्चों को सोश्यल बनाएं। ख़ानदान, पड़ोस, दोस्त वग़ैरा में से अच्छे लोगों के साथ मैल मैलान रखने दें। उन लोगों से मुरासिम उन्हें सोश्यल बना देंगे। येह मुआ़शरे के उन लोगों से कई चीज़ें सीखेंगे। जो मुस्तक़्बिल में उन्हें रवय्यों को स्टड़ी करने के ह़वाले से मुआ़विन साबित होंगी।

क़ारईने किराम ! हर बच्चा मुन्फ़रिद होता है, और इन्फ़िरादी ज़रूरिय्यात मुख़्तलिफ़ हो सकती हैं। अब आप ने ग़ौर करना है कि आप के बच्चों को किस त़रह़ और किस ह़वाले से आप की तवज्जोह की ज़रूरत है। अपने बच्चों का ख़याल रखें येह अल्लाह की नेमत हैं। बेहतरीन तालीमो तरबियत याफ़्ता और सेह़त मन्द औलाद आप के लिए बेहतरीन असासा बनेगी।

अल्लाह करीम हमें अपनी औलाद की अच्छी तालीमो तरबियत और उन की बेहतरीन देख भाल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बेटी क्यूं पैदा हुई ?

ज़माना ए जाहिलिय्यत में जब किसी शख़्स की बीवी के यहां बच्चे की विलादत के आसार ज़ाहिर होते तो वोह शख़्स बच्चा पैदा हो जाने तक अपनी क़ौम से छुपा रेहता, फिर अगर उसे मालूम होता कि बेटा पैदा हुवा है तो वोह ख़ुश हो जाता और अपनी क़ौम के सामने आ जाता और जब उसे पता चलता कि उस के यहां बेटी पैदा हुई है तो वोह ग़मज़दा हो जाता और शर्म के मारे कई दिनों तक लोगों के सामने ना आता और इस दौरान ग़ौर करता रेहता कि उस बेटी के साथ वोह क्या करे ? आया ज़िल्लत बरदाश्त कर के उस बेटी को अपने पास रखे या उसे ज़िन्दा दफ़्न कर दे जैसा कि मुज़र, ख़ुज़ाआ और तमीम क़बीले के कई लोग अपनी लड़कियों को ज़िन्दा दफ़्न कर देते थे ।[1]

लड़की पैदा होने पर रंज करना ग़ैरों का त़रीक़ा है, फ़ी ज़माना मुसलमानों में भी बेटी पैदा होने पर ग़मज़दा हो जाने, चेहरे से ख़ुशी का इज़हार ना होने, मुबारक बाद मिलने पर झेंप जाने, मुबारक बाद देने वाले को बातें सुना देने, बेटी की विलादत की ख़ुशी में मिठाई बांटने में शर्म मेह़सूस करने, सिर्फ़ बेटियां पैदा होने की वज्ह से माओं पर ज़ुल्मो सितम करने और उन्हें त़लाक़ें दे देने तक की वबा फूट निकली है ।

किसी शेहर में एक बेटी की शादी हुई, 11 माह बाद बेटी हुई । इसी बात पर उसे मारा जाने लगा और बिल आख़िर घर से निकाल दिया गया । एक और शेहर में बेटी की शादी हुई, सास का मुत़ालबा था कि बेटा ही होना चाहिए लेहाज़ा ज़बरदस्ती ह़म्ल में अल्ट्रा साउन्ड करवाया जिस में बेटी तशख़ीस हुई तो बेचारी ख़ातून पर ज़ुल्म शुरूअ़ कर दिया गया जैसे जिन्स का त़ै करना किसी औ़रत के बस की बात हो ।

यहां तक कि जब विलादत हुई तो होने वाली बच्ची पर भी ज़ुल्मो सितम किया गया तीन दिन की बच्ची पर बर्फ़ का कटोरा रख दिया कि किसी त़रह़ मर जाए ।

जब कुछ बस ना चला तो सास ने जो ख़ुद भी एक औ़रत ही है बेटे को केह कर ज़बरदस्ती अपनी बहू को त़लाक़ दिलवा दी।

ह़ालांकि बेटी पैदा होने और उस की परवरिश करने के कई फ़ज़ाइल हैं, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब किसी शख़्स के यहां बेटी पैदा होती है तो अल्लाह पाक उस के यहां फरिश्तों को भेजता है, वोह आ कर केहते हैं : ऐ घर वालो ! तुम पर सलामती नाज़िल हो, फिर उस बेटी का अपने परों से इह़ात़ा कर लेते हैं और उस के सर पर अपने हाथ फेरते हुवे केहते हैं : एक कमज़ोर दूसरी कमज़ोर से पैदा हुई है, जो इस की कफ़ालत करेगा तो क़ियामत के दिन तक उस की मदद की जाएगी।(2)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस शख़्स के यहां बेटी पैदा हो और वोह उसे ज़िन्दा दफ़्न ना करे, उसे ज़लील ना समझे और अपने बेटों को उस पर तरजीह़ ना दे तो अल्लाह पाक उसे जन्नत में दाख़िल करेगा।(3)

बेटी तो अल्लाह पाक की रेह़मत होती है। प्यारे आक़ा करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तो अपनी बेटी से बहुत मह़ब्बत फ़रमाते थे ह़ज़रते फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को आंखों की ठन्डक फ़रमाया। उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : जब ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर होतीं। तो आप उन के लिए खड़े हो जाते और उन का हाथ पकड़ते उस पर बोसा देते और अपनी जगह उन को बिठाते।(4)

ऐ काश ! प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सीरत पर अ़मल करने का जज़्बा हमारे अन्दर पैदा हो जाए।

वोह शाख़ है ना फूल अगर तितलियां ना हों
वोह घर भी कोई घर है जहां बच्चियां ना हों

बेटी की क़द्र की जाए तो वोह बहुत मह़ब्बत करने वाली होती है। मां-बाप अपनी बेटी के साथ हुस्ने सुलूक करें इसी त़रह़ सास ससुर घर में आने वाली बहू को बेटी जैसा मान और इ़ज़्ज़त दें तो ना सिर्फ़ घर अम्नो सुकून का गेहवारा बना रहेगा बल्कि येह बेटी अपनी औलाद को भी अपनी सास और ससुर की इ़ज़्ज़तो तकरीम और प्यार व मह़ब्बत का दर्स देगी जिस से नस्लें संवर जाएंगी। लेकिन अगर मुआ़मला इस के बर अ़क्स हो और बहू को अपनाने के बजाए ज़ुल्मो सितम का बरताव किया जाए तो सास को सोच लेना चाहिए कि मेरे इस त़र्ज़े अ़मल से किसी और की एक बेटी नहीं बल्कि उस से वाबस्ता अफ़राद की दुन्या वीरान होने के साथ आप का ख़ानदान भी उजड़ जाएगा।

ख़वातीन की एक तादाद है कि जब बेटे की शादी होती है तो बेटे की मह़ब्बत तक़्सीम होने के बाद वोह उस को बरदाश्त नहीं कर पातीं और बेटे का रुजह़ान बहू की त़रफ़ ज़ियादा देख कर बहू से ह़सद करती हैं। और वोह बहू के ख़िलाफ़ बेटे के कान भरती रेहती हैं। आहिस्ता आहिस्ता उस के दिल में अपनी बीवी के लिए नफ़रत पैदा हो जाती है। फिर वोह अपनी बीवी को ज़ेहनी व जिस्मानी अज़िय्यत पहुंचाता है और नौबत त़लाक़ तक पहुंच जाती है। इसी त़रह़ नन्द भाई की मह़ब्बत तक़्सीम हो जाने पर भाई के कान भरती रेहती है और येह भूल जाती है कि उसे भी किसी घर की बहू बनना है, अगर उस के साथ भी येह ही सब मुआ़मलात हों तो उसे कैसा लगेगा ?

हम दीने इस्लाम के मानने वाले हैं, इस्लाम तो अम्नो आश्ती, तकरीमे इन्सानी और एह़तेरामे मुस्लिम का दर्स देता है। इन्सान तो इन्सान जानवरों पर भी ज़ुल्म करने से मन्अ़ करता है। ऐ काश हमें इस्लामी तालीमात को अ़मली त़ौर पर अपनाने का जज़्बा मिल जाए और हम उन तमाम बातों से अपने आप को बचा कर शरीअ़त के ऐन मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने में कामयाब हो जाएं।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) خازن، النحل، تحت الآیۃ:59، 3/127، 128 ملخصاً (2) معجم صغیر، 1/30
(3) ابوداؤد، 4/435، حدیث:5146 (4) ابوداؤد، 4/454، حدیث:5217۔

इस्लामी बहेनों के शरई मसाइल

1 औरत के सर से जुदा होने वाले बालों का हुक्म

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस मस्अले के बारे में कि औ़रतों के कन्घा करने या सर धोने में जो बाल सर से जुदा हो जाएं, उन के बारे में शरीअ़ते मुत़हहरा का क्या हुक्म है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

औ़रतों के कन्घा करने या सर धोने में जो बाल सर से जुदा हो जाएं, उन के बारे में शरीअ़ते मुत़हहरा का हुक्म येह है कि औ़रत उन बालों को छुपा दे या दफ़्न कर दे ताकि उन पर किसी अजनबी (ग़ैर मेह़रम) की नज़र ना पड़े, क्यूंकि औ़रत के बाल सत्र में दाख़िल हैं, जिस की त़रफ़ नज़र करना, नाजाइज़ है और जिस उ़ज़्व की त़रफ़ नज़र करना, नाजाइज़ हो, उस के बदन से जुदा होने के बाद भी उन्हें देखना, जाइज़ नहीं।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 अगर बच्चा औ़रत का दवा से उतरने वाला दूध पिए तो रज़ाअ़त का हुक्म ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इन मसाइल में कि

1 जिस औ़रत का बच्चा ना हो वोह ऐसी दवा खा कर जिस दवा के खाने से दूध आ जाता है किसी बच्चे को दूध पिला दे तो क्या रज़ाअ़त साबित हो जाएगी ?

2 अगर बच्चा गोद लेना हो और आगे चल कर उस से पर्दे वग़ैरा का मस्अला ना हो तो उसे रज़ाई बेटा बनाने के लिए गवाह कैसे बनाने होंगे ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

1 अगर दवाई से दूध आ गया तो भी बच्चे को दूध पिलाने से औ़रत और बच्चे के माबैन रज़ाअ़त साबित हो जाएगी। अलबत्ता अगर वोह औ़रत शादीशुदा हो तो उस का शौहर उस बच्चे का रज़ाई बाप नहीं होगा, अगर्चे उस औ़रत से सोह़बत की वज्ह से रज़ाई बच्ची उस के शौहर पर ह़राम हो। लेहाज़ा उस दूध पिलाने वाली के शौहर के रिश्तेदारों से वैसा ही पर्दा होगा जैसा अजनबी या अजनबिय्या का होता है। अगर दवाई से वाक़ेई दूध उतर आए तो चूंकि हुर्मत की अस्ल दूध है तो जहां दूध आना मुतसव्वर व मुमकिन हो वहां उस से हुर्मत साबित होगी। अगर्चे उस औ़रत की कभी औलाद ना हुई हो बल्कि अगर्चे औ़रत कंवारी ही क्यूं ना हो। बशर्ते कि ख़ारिज होने वाली शै दूध हो और अगर दूध नहीं बल्कि सफ़ेद रत़ूबत है तो हुर्मत साबित ना होगी।

2 दूध पिलाने के वक़्त शौहर और दो औ़रतें गवाह बन सकते हैं लेकिन येह ज़रूरी नहीं, अलबत्ता इतना किया जाए कि दूध पिला कर उस की तश्हीर कर दें।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बुराई का चर्चा करने से बचिए !

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अत्तार क़ादरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

आज कल ह़ालात ऐसे हो चुके हैं कि आए दिन बड़ी बड़ी बुराइयों के सेंकड़ों वाक़ेआ़त होते होंगे, लेकिन कभी ऐसा होता है कि कोई बात उठ जाती और मश्हूर हो जाती है, ईश्यू (Issue) बन जाता है और लोग उस पर कलाम करना शुरूअ़ कर देते हैं। जब कोई ख़ुदकुशी करता है तो हमारे यहां येह Trend (यानी रवाज) है कि ख़ुदकुशी करने वाले का नाम और अ़लाक़ा वग़ैरा सब अख़्बारात में छप जाता, टी वी चैनल्ज़ पर आ जाता और सोश्यल मीडिया पर वाइरल हो जाता है। ह़ालां कि इस त़रह़ किसी के ऐ़ब को उछालने की शरअ़न इजाज़त नहीं है, मुर्दे की ग़ीबत तो ज़िन्दा की ग़ीबत से ज़ियादा सख़्त है, क्यूंकि ज़िन्दा शख़्स से मुआ़फ़ करवाना मुमकिन है जबकि मुर्दा से मुआ़फ़ करवाना मुमकिन नहीं। (فیض القدیر، 1/562، تحت الحدیث:852) इसी त़रह़ किसी के साथ बुरा फ़ेल हो गया तो उसे भी मीडिया पर सरे आ़म तबसरों का मौज़ूअ़ बनाया जाता है। मैं येह सोचता हूं कि जिस बेचारी के साथ बुरा काम हुवा, एक सदमा तो उसे इस ज़ुल्म का होगा ही जो मरते दम तक उस के साथ रहेगा, मज़ीद सदमा दर सदमा शायद येह होता होगा कि उस के साथ होने वाले ज़ुल्म की शोहरत बहुत होती है, जिस को देखो उस पर तबसेरा कर रहा होता है और नाम ले ले कर केहता है कि फ़ुलां गांव या फ़ुलां अ़लाक़े में उस बेचारी के साथ यूं हुवा। उस बेचारी को Highlight (यानी नुमायां) कर के मज़ीद "बेचारी" बना दिया जाता है। कोई अपने त़ौर पर क़ानून दान तो कोई सियासत दान बन जाता है, और कोई जज तो कोई पोलीस अफ़्सर बन बैठता है। सब अपने अपने त़ौर पर मश्वरे दाग़ रहे होते हैं। जिस बेचारी के साथ मुआ़मला होता होगा बेचारे उस के ख़ानदान वाले लोगों को जवाबात दे दे कर थक जाते और परेशान हो जाते होंगे। दरिन्दे ने जो आबरू रेज़ी की उस का सदमा तो होता ही होगा, मज़ीद ख़ानदान की इस एतेबार से बदनामी का सदमा अलग तक्लीफ़ देह साबित होता होगा।

अख़्बारात और मीडिया वाले भी जो इस त़रह़ करते हैं वोह ग़लत करते हैं। अगर आप किसी ख़ौफ़े ख़ुदा वाले आ़लिमे दीन से बात करेंगे तो वोह اِنْ شَآءَاللّٰه मेरी ताईद करेगा कि बात तो सह़ीह़ है। आप बताइए कि जिस ने ख़ुदकुशी की है, क्या उस का ख़ानदान ख़ुशी से झूम रहा होगा कि मेरे बेटे ने ख़ुदकुशी की है, या मेरे भाई ने ख़ुदकुशी की है ? उन की तो ह़ालतें ख़राब होंगी। फिर जब नाम ले ले कर इस बात का चर्चा होता होगा तो उन पर क्या गुज़रती होगी ! लोग आ आ कर पूछते होंगे कि क्या हो गया था ? क्यूं ख़ुदकुशी की थी ? वग़ैरा वग़ैरा। "ज़ियादती" के जो वाक़ेआ़त हो चुके या हो रहे हैं उन की जितनी मज़म्मत की जाए उतनी कम है, लेकिन बाज़ लोग इन वाक़ेआ़त को उछाल कर भी लुत्फ़ उठाते होंगे और बाज़ लोग तफ़रीह़न भी इस त़रह़ की बातें करते होंगे। अल्लाह करीम हमें अपना ख़ौफ़ अ़त़ा करे।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मक्तबतुल मदीना की किताबें घर बैठे ह़ासिल करने के लिए इस नम्बर 9978626025 पर Call SMS WhatsApp करें

مکتبۃ المدینہ MAKTABA TUL MADINAH

दीने इस्लाम की ख़िदमत में आप भी दावते इस्लामी इन्डिया का साथ दीजिए और अपनी ज़कात, सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला और दीगर मदनी अ़त़िय्यात (Donation) के ज़रीए़ माली तआ़वुन कीजिए !

आप के चन्दे को किसी भी जाइज़, दीनी, इस्लाही (Reformatory), फ़लाही (Welfare) ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में ख़र्च किया जा सकता है

PRINTER, PUBLISHER, EDITOR AND OWNER

HAMJANI SHABBIRBHAI RAJAKBHAI - BUTVALA'S CHAWL, NR. CENTRAL WARE HOUSE, DANILIMDA, AHMEDABAD - 380028. (GUJARAT)

PLACE OF PRINTING : MODERN ART PRINTERS - OPP : PATEL TEA STALL, DABGARWAD NAKA, DARIYAPUR, AHMEDABAD - 380001.

PLACE OF PUBLICATION : BUTVALA'S CHAWL, NR. CENTRAL WARE HOUSE, DANILIMDA, AHMEDABAD-380028. (GUJARAT) INDIA.